—: सम्पादक :—
डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी
— सहायक —
मु० गुफ़रान नदवी
मु० सरवर फारूक़ी नदवी
मु० हसन अन्सारी
हबीबुल्लाह आज़मी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही !
मजलिसे सहाफत व नशरियात
पो० बॉ० नं० 93
टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ
फोन : 2740406
फैक्स : 2787310
e-mail :
nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

एक प्रति	रु० 9/—
वार्षिक	रु० 100/—
विशेष वार्षिक	रु० 500/—
विदेशों में (वार्षिक)	25 यूएस डालर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें :
"सच्चा राही"
पता : सेक्रेटरी मजलिसे सहाफ़त
व नशरियात नदवतुल उलमा,
लखनऊ—226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ़्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात, टैगोर मार्ग नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक
लखनऊ

जुलाई, 2006 वर्ष 5 अंक 05

ईमान क्या है?

ईमान लाओ अल्लाह पर उस के फ़िरिश्तों पर, उसकी किताबों पर, उस के रसूलों पर, क़ियामत के दिन पर और तक़दीर पर अच्छी हो या बुरी वह अल्लाह तआला ही की तरफ़ से है। (हदीस)

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर फ़ार्म पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

H.I.Computer Institute - 9335214913

विषय एक नज़र .में

❐ इस्लामी शिक्षाएं	सम्पादकीय	3
❐ कुर्आन की शिक्षा	मौलाना मंजूर नोमानी	5
❐ पढ़ो कुर्आं समझ कर	मौ० मुहम्मद अहमद रह०	8
❐ बहुत ही बेक़रार आए	मौ० मुहम्मद सानी हसनी	8
❐ प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	9
❐ ईश विधान	बृहस्पति	11
❐ नमाज़.....	मौलाना सय्यद अबुल हसन अ़ली हसनी	12
❐ सीरतुन्नबी	अल्लामा शिब्ली नोमानी	14
❐ संक्षिप्त इस्लामी इतिहास	मौ० अब्दुस्सलाम किदवाई नदवी	19
❐ देश का हाल	इदारा	20
❐ गुरू जनों से दो दो बातें	अबू मग़्रूब	21
❐ उम्मत के मसाइल का हल	मौ० मुहम्मद राबे हसनी	23
❐ आपके प्रश्नों के उत्तर	इदारा	25
❐ क्या अब इस्लाम की आवश्यकता नहीं रही	मुहम्मद कुत्ब	26
❐ खुदा और हबीबे खुदा की ताअ़त ही नजात ...	हैदर अ़ली नदवी	28
❐ सफलता की कुंजी	अब्दुर्रशीद खैरानी	29
❐ बिच्छू का डंक	इदारा	32
❐ दिमाग़ी बीमारियों का परिचय	इदारा	33
❐ इस्लाम और सन्देष्टा	अ़ब्दुल्लतीफ़ चतुर्वेदी	34
❐ गैर मुस्लिम बनाम मुस्लिम	मास्टर मुहम्मद इल्यास	35
❐ कादियानों से होशियार	इदारा	36
❐ क्या आप जानते हैं ?	हबीबुल्लाह आजमी	37
❐ एक लाभकारी परिश्रम पूर्ण यात्रा	सम्पादक	38
❐ अन्तर्राष्ट्रीय समाचार	डॉ० मुईद अशरफ नदवी	40

❐❐❐

(सम्पादक का लेखकों से सहमत होना आवश्यक नहीं है)

इस्लामी शिक्षाएं

डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी

इस्लाम की मौलिक शिक्षा तो "अल्लाह को उस तरह मानना है जिस तरह उसने अपने अन्तिम दूत हज़रत मुहम्मद (सल्लललाहु अ़लैहि व सल्लम) द्वारा अपना परिचय दिया है और हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) को अल्लाह का अन्तिम दूत मानना और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) पर अल्लाह ने जो कुछ उतारा है सब को सत्य जानना और उसे ग्रहण करना है।

हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) पर अल्लाह तआ़ला ने क़ुर्आने मजीद उतारा आज हम उसी की एक आयत की शिक्षाओं की चर्चा करेंगे।

"निःसन्देह अल्लाह तआ़ला हुक्म देता है अ़द्ल (न्याय) का और इह़सान (उपकार) का और रिश्ते दारों को देने का अर्थात दानशीलता का, और रोकता है बड़ी बेह़यायी की बातों से और हर तरह की बुराई तथा अनुचित बातों से और ज़ियादती व सरकशी (अत्याचार तथा उद्दण्डता) से, अल्लाह तआ़ला तुमको इस लिये नसीह़त करता है ताकि तुम नसीह़त (उपदेश) क़बूल करो।" (पवित्र क़ुर्आन १६:९०)

यहाँ अ़द्ल का अनुवाद हमने न्याय किया है इसलिये कि हमको कोई और शब्द न मिला जिससे अ़द्ल का परिचय हो सके परन्तु यहाँ अ़द्ल का अर्थ केवल दो व्यक्तों के झगड़े में न्याय नहीं है अपितु अ़द्ल बड़ा विस्तृत अर्थ रखता है। अल्लाह ने अपनी सृष्टि में हर प्राणी का ह़क़ निर्धारित किया है अपना ह़क़ भी बता दिया है। पस हर प्राणी को उसका ह़क़ दे देना अ़द्ल है। सबसे पहले तो अल्लाह का ह़क़ अदा करना है, फिर उसके रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) का फिर उसकी और मख़्लूक़ का, वालिदैन का ह़क़, भाई, बहनो का ह़क़, बीवी बच्चों का ह़क़, रिश्तेदारों का ह़क़, पड़ोसियों का ह़क़, उस्ताद का ह़क़, शागिर्दों का ह़क़, आ़म मुसलमानों का ह़क़, ग़ैर मुस्लिमों का ह़क़ हाकिम का ह़क़, पब्लिक का ह़क़, जानवरों का ह़क़। ग़रज़ कि जिस जिस से हमारा तअ़ल्लुक़ है, हम उस का ह़क़ अदा करें अ़द्ल के ह़ुक्म में यह सब बातें आती हैं। अगर हमने किसी का ह़क़ मारा तो अ़द्ल के ख़िलाफ़ किया, ज़ुल्म किया। अ़द्ल में यह मफ़्हूम (अर्थ) भी है कि हमारा हर काम एअ़तिदाल में हो अर्थात बीच का हो न ह़द से बढ़ा हुआ हो न ह़द से घटा हुआ हो।

दूसरा ह़ुक्म इह़सान का है। इह़सान का एक मफ़्हूम तो वह है जो ईमान व इस्लाम के साथ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने बताया था कि अल्लाह की इ़बादत ऐसे करो कि जैसे तुम उसे देख रहे हो और अगर तुम उसे नहीं देख रहे हो तो वह तो तुम्हे देख ही रहा है। इह़सान के ह़ुक्म (आदेश) में यह अर्थ भी लिया जाएगा लेकिन यहाँ इह़सान के आ़म मअ़ना (अर्थ) लिये गये हैं, यअ़नी नेकी, भलाई।

वैसे तो हर इन्सान की अक़्ल भले और बुरे काम जानती है और उसने आ़म मिअ़यार (कसौटी) बना रखा है कि जिस काम से दूसरे इन्सान को बल्कि किसी भी जीव धारी को बल्कि

पौदों को भी आराम पहुंचे, राहत मिले, फाइदा पहुंचे वह नेकी का काम है। है तो यह कसौटी अच्छी, आम काअिदा यही होना चाहिये लेकिन कई जगहों पर यह कसौटी भ्रम में डाल देगी मेरे निकट भलाई वही है जिस को अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने भला बताया और बुरा वही है जिसे आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने बुरा बता दिया। इहसान का मतलब नेक बरताव के साथ फ़य्याज़ाना (उदारतापूर्ण) सुलूक भी है, हम्दर्दाना रवादारी, एक दूसरे का पास व लिहाज़, दूसरे को उसके हक़ से ज़ियादा दे देना, अपने हक़ से कम पर राज़ी हो जाना। इहसान में आता है। इहसान, अद्ल से आगे की चीज़ है और सामाजिक जीवन में (इजतिमाई ज़िन्दगी में) इसका बड़ा महत्व है। अद्ल अगर समाज का आधार है तो इहसान उस का सौन्दर्य तथा कौशल (जमाल व कमाल) है, इहसान समाज में महब्बत, गमगुसारी, आली ज़र्फ़ी, ईसार और इख्लास और खैरख्वाही पैदा करता है, जिससे समाज आनन्द और जीवन का स्वाद पाता है।

आयत में तीसरा हुक्म (आदेश) क़राबत दारों को, रिश्तेदारों को, खुदा की दी हुई रोज़ी से देते रहने का है, इसी को सिल–ए–रहिमी कहा गया है। रहिम में सभी रिश्तेदार आ जाते हैं, पास के हों या दूर के क़रीब के रिश्तों में माँ, बाप बीवी और औलाद हैं जिनको रोटी कपड़ा देना उनकी ज़रूरतें पूरी करना फ़र्ज़ है। फिर और रिश्तेदार हैं अल्लाह ने दे रखा है तो उनकी मदद का खयाल रखने और उन पर खर्च करने का हुक्म है, किसी की मदद ज़कात से की जाए या खैरात से, ज़कात के हक़दार, वह गरीब लोग हैं जो अपने उसूल में नहीं है यअनी बाप, दादा, नाना, माँ, दादी, नानी ऊपर के लोग और फुरूअ यअनी औलाद और औलाद की औलाद। इन सब की मदद ज़कात से नहीं कर सकते इनके अलावा सभी ग़रीब रिश्तेदारों की मदद ज़कात से भी कर सकते हैं। लेकिन सिल–ए–रहिमी और रिश्तेदारों की मदद सिर्फ़ ज़कात ही से न की जाए, अल्लाह ने दे रखा है तो उन पर खर्च करने में कंजूसी न की जाए। अल्लाह ने दे रखा है तो ग़रीब ही नहीं अमीर रिश्तेदारों को भी दअवतें खिलाएं, तुहफे (उपहार) पेश करें, आयत के हुक्म में यह सब बातें आती हैं। सोचिये अगर इस आयत के हुक्म पर हर मालदार अमल करे तो समाज में क्या कोई भूखा नंगा रह सकता है और क्या अमीरों और ग़रीबों में कशमकश बाक़ी रह सकती है? हरगिज़ नहीं बल्कि मेल व महब्बत और सुख चैन वाला समाज हो जाएगा।

आयत में तीन काम वह है जिनके करने का हुक्म दिया गया है, न्याय अपने विस्तृत अर्थ में, इहसान अर्थात उपकार तथा रिश्तेदारों के साथ अच्छा बरताव करना जिसे सिल–ए–रहिमी कहते हैं। आयत में तीन बहुत बुरी बातों से रोका भी गया है। वह तीन बातें हैं : फ़हशा, मुन्कर और बग़्यु। 'फ़हशा' में तमाम बेहूदा और शर्मनाक बातें आती हैं। हर वह बुराई जो अपनी ज़ात में बहुत ही खराब है जैसे ज़िना (व्यभिचार) उ़र्यानी (नंगापन) इग़्लाम (गुदा मैथुन) गाली बकना आदि, और दूसरे बुरे गुनाह भी 'फ़हशा' में आएंगे जैसे चोरी, शराब नोशी, रिश्वत खोरी वगैरह।

दूसरी बात जिससे रोका गया है 'मुन्कर' है जिससे मुराद हर वह बुराई है जिसे हर आदमी अपनी अक़्ल और तबीअत से बुरा जानता है और जिसे समाज ने हमेशा से बुरा जाना है।

तीसरी बात 'बग़्यु' है। बग़्यु का अर्थ है सीमा उल्लंघन (तअद्दी) दूसरों के हुक़ूक़ मार लेना दूसरों को सताना उन पर ज़ुल्म करना वग़ैरह।

आयत में तीन काम करने को बताए गये हैं : अद्ल, इहसान और ईताई ज़िल्कुर्बा (न्याय, उपकार और दानशीलता) और तीन ही कामो से रोका भी गया है : फ़हशा, मुन्कर और बग़्यु (निर्लज्जता, अप्रिय कर्म तथा उद्दण्डता)।

एक ईमान वाला इन इस्लामी अहकाम पर अमल कर के इस दुन्या में भी सुकून पाता है और आख़िरत में तो उसके लिए राहत ही राहत है। एक ग़ैर मुस्लिम भी इन आदेशों को अपनाकर एक आदर्श समाज स्थापित कर सकता है।

कुरआन की शिक्षा

मौ० मंजूर नोमानी

कुरआन का सबसे अहम मुतालबा हर मक़्सद के लिये दुआ और मदद चाहना सिर्फ अल्लाह से, और हर इबादत सिर्फ़ उसी के लिये होनी चाहिये।

कुरआने–मजीद ने तौहीद के इस पहलू पर सबसे ज़ियादा ज़ोर दिया है और यह इसलिये कि शिर्क में मुब्तला होने वाली दुन्या की कौमें और उम्मतें 'शिर्क–फ़िदुआ' और ''शिर्क–फिल्–इबादा ही में ज़ियादा मुब्तला हुयी हैं। और हमेशा खुदा को न पहचानने वाले और अक़ीदे में कमज़ोर इन्सानों से, यही शिर्क ज़ियादा हुआ कि उन्होंने अल्लाह के सिवा और हस्तियों को हाजत पूरी करने वाले और 'मुश्किल कुशा' (मुसीबतों को दूर करने वाले) समझ कर उनसे दुआएं कीं, अपनी हाजतें और मुरादें (मनो कामनाएं) उनसे माँगीं, उन्हें राज़ी और खुश करने के लिये तरह–तरह से उनकी इबादत और पूजा की, उनके आगे सज्दे किये, उनके नाम की खैर–ख़ैरात (पुण्य–दान) की और उनके लिये नज़रें, और मिन्नतें मानीं– और हर आँख वाला देख सकता है कि बड़ी मुश्रिकाना गुमराहियों में आज भी यही गुमराही सबसे ज़ियादा आम है। यहाँ तक कि मुसलमान कहलाने वालों में भी एक बड़ी संख्या इस शिर्क में मुब्तला है।

बहरहाल 'शिर्क–फिदुआ' और 'शिर्क–फ़िल्–इबादा' चूंकि सबसे बड़ी मज़हबी गुमराही है और खुदा को सही तौर पर नहीं पहचानने वाले इन्सान ज़ियादा तर इसी में मुब्तला होते हैं इसलिये कुर्आने–मजीद ने तौहीद के सिल्सिले में 'तौहीद–फ़िदुआ' और 'तौहीद–फ़िल्–इबादा' पर सबसे ज़ियादा ज़ौर दिया है। पहले चंद आयतें 'तौहीद––फिदुआ के सिलसिले की पढ़ लीजिये:

तर्जमाः– हाजतों और ज़रूरतों में सिर्फ़ उसी अल्लाह को पुकारना सच्चा पुकारना है, और उसके सिवा जिन हस्तियों को वे मुश्रिक पुकारते हैं और जिनसे दुआयें करते हैं, वे उनके कुछ भी काम नहीं आ सकतीं। (१३:१४)

अल्लाह के सिवा दूसरी हस्तियों से दुआयें करने वालों और अपनी हाजतें माँगने वालों से, एक और जगह इर्शाद है:–

तर्जमाः– और अल्लाह के सिवा जिन हस्तियों को तुम पुकारते हो और जिन से दुआयें करते हो और मदद मांगते हो, वे तुम्हारी कोई मदद नहीं कर सकते और अपनी भी मदद करने से वे आजिज़–व–बेबस हैं (सो उनसे मदद मांगना तुम्हारी कैसी हिमाक़त है)। (७:१६७)

एक और जगह इर्शाद है

तर्जमाः– ऐ पैग़म्बर! उन लोगों से कह दो कि तुमने अपनें ख़्याल में अल्लाह के सिवा जिन हस्तियों को माबूद व कारसाज़ समझ रखा है, उन्हें अपनी हाजतों और मुसीबतों में पुकार कर देखो, न वे तुम्हारी तकलीफ दूर करने का इख़्तियार रखते हैं, न तुम्हारी हालत बदल सकते हैं।

एक और जगह इर्शाद है:–

तर्जमाः– और जो कोई अल्लाह के सिवा किसी दूसरे मनघडंत माबूद को पुकारता है, उसके पास इसकी कोई दलील नहीं है और उसका हिसाब उसके पर्वर्दिगार के दरबार में होना है, यैक़ीनन कुफ्र (इन्कार) करने वाले कभी फ़लाह नहीं पायेंगे।

एक जगह इर्शाद है :– (७८:११७)

तर्जमाः– मत पुकारो अल्लाह के सिवा किसी दूसरे फ़र्ज़ी और मनघड़ंत माबूद को (अगर ऐसा करोगे) तो तुम हो जाओगे अज़ाब पाने वालों में से। (शुअरा : २१३)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ख़िताब करके एक जगह इर्शाद है:–

तर्जमाः– ऐ पैग़म्बर (स०)! कह दो कि मैं तो सिर्फ़ अपने पर्वर्दिगार को पुकारता हूं, उसी से दुआ करता हूं और उसके साथ किसी को शरीक नहीं करता। (७२:२०)

एक और जगह इर्शाद है:–

तर्जमाः– और मत पुकारो अल्लाह के साथ किसी और फ़र्ज़ी और मनघड़ंत इलाह को–सिर्फ़ अल्लाह ही इलाहे–हक़ है, उसके सिवा कोई इलाह नहीं, उसकी पाक ज़ात के अलावा जो कुछ इस आलम–मौजूदात (इस दुन्या)

में है सब फ़ानी है। (२८:८८)

इस आयत में कुर्आने–पाक ने ग़ौर–व–फ़िक्र करने वालों और समझने वालों के लिये एक जल्द समझ में आने वाली दलील की तरफ़ इशारा किया है।

कुर्आन कहता है कि अल्लाह के सिवा जो कुछ है सब फ़ना होने वाला है। बाक़ी रहने वाली और कभी फ़ना न होने वाली हस्ती सिर्फ़ अल्लाह की है, जो सब का ख़ालिक़ और पर्वर्दिगार है। अल्लाह के सिवा दूसरी हस्तियों को हाजत रवा और कारसाज़ समझकर उनसे दुआयें करने वाले और मुरादें मांगने वाले जाहिल मुश्रिकीन भी इस हक़ीक़त को जानते और मानते हैं कि सदा रहने वाली ज़ात सिर्फ़ अल्लाह की है और बाक़ी सब फ़ानी है। पस कुर्आन कहता है कि जिन हस्तियों के मुतअ़ल्लिक तुम खुद जानते हो कि वे अपने वुजूद और अपनी हयात में भी मुख्तार नहीं, और अपने को मौत व फ़ना से बचा लेना भी जिनके बस में नहीं, सोचो कि उन की हाजत पूरी करने वाला समझ कर उनसे मदद मांगना और उनको पुकारना कितनी बड़ी हिमाक़त है।

पस जो लोग बुतों को या नेक और मुक़द्दस रूहों को, या गुज़रे हुये पीरों–पैगम्बरों को अपनी मदद के लिये पुकारते हैं और अपनी हाजतों में उनसे दुआयें करते हैं (हालांकि जानते हैं कि यह सब फ़ानी हस्तियाँ हैं) वे खुद सोचें कि वे कैसी अहमक़ाना हरकत करते हैं और अपने को वे कितनी गहरी पस्ती में गिराते हैं।

ये चंद आयतें "तौहीद–फिद्आ" के सिल्सिले की थीं। अब "तौहीद–फ़िल् इबादा" के मुतअ़ल्लिक़ भी चंद आयतें पढ़ लीजियेः–

तर्जमाः– और तुम्हारे पर्वर्दिगार की क़तई (निश्चित) हुक्म है कि उसके सिवा किसी की इबादत न करो। (१७:२३)

एक जगह हुक्म है।

तर्जमाः– बस अल्लाह की इबादत करो और उसके साथ किसी को शरीक न करो। (४:३६)

चूंकि अल्लाह के सिवा जिन हस्तियों और जिन फ़र्ज़ी माबूदों की इबादत की जाती है, वह इस ग़लत–फ़हमी की वजह से की जाती है कि ये हस्तियाँ बनाव–बिगाड़ और नफ़ा–नुक़सान का कुछ इख़्तियार रखती हैं। इसलिये कुर्आन मजीद ने बहुत सी जगहों पर इस बात का खुलासा करते हुये "शिर्क–फ़िल् इबादा" से रोका है कि 'तुम जिनकी इबादत करते हो, वे बिलकुल आजिज़ व बेबस हैं, न तुम्हारा कुछ बिगाड़ सकते हैं और न ही बना सकते हैं।' एक जगह इर्शाद हैः–

तर्जमाः– ऐ पैग़म्बर! उन लोगों से कहो, क्या तुम अल्लाह के सिवा ऐसी हस्तियों की इबादत करते हो, जिनके क़ब्ज़े में तुम्हारा नफ़ा–नुक़सान कुछ भी नहीं। और अल्लाह सब कुछ सुनने वाला और सब कुछ जानने वाला है (इसलिये तुम्हें उसकी पकड़ और उसके अ़ज़ाब से बेख़ौफ़ नहीं रहना चाहिये) (५:७६)

एक दूसरी जगह इन्हीं मुश्रिकीन के मुतअ़ल्लिक़ इर्शाद हैः–

तर्जमाः– अल्लाह के सिवा उन हस्तियों की ये इबादत करते हैं जिन्हें आसमान–व–ज़मीन में से रिज़्क़ देने का कुछ भी इख़्तियार नहीं और न उनको कुछ कुदरत है। (१६:७३)

कुर्आने–मजीद यह भी बयान करता है कि जो क़ौमें और उम्मतें शिर्क में मुब्तला हुयीं और उन्होंने अल्लाह के सिवा किसी और को भी अपना माबूद बनाया, उनके नबियों और उनमें आने वाले अल्लाह के सच्चे हादियों ने उनको हरगिज़ इस शिर्क की तालीम नहीं दी थी बल्कि ख़ालिस (शुद्ध) तौहीद ही की तल्क़ीन (उपदेश) की थी। इर्शाद हैः–

तर्जमाः– उन्हें (अगले पैग़म्बरों और अगली किताबों के ज़रीये) जो हुक्म दिया गया वह इसके सिवा कुछ नहीं था कि सिर्फ़ एक माबूदे–बरहक़ की इबादत और बन्दगी करो, उसके सिवा कोई इबादत और बन्दगी के लाइक़ नहीं। वह पाक है उनके शिर्क से। (६:३१)

और एक दूसरी जगह फ़र्मायाः–

व लक़द् बअ़स्ना फ़ी कुल्लि उम्मतिर्रसूलन् अनिअ़बुदुल्लाह वजतनिबु त्तागूत।

(सूरए नह्ल–रु–५)

तर्जमाः– और भेजा हमने हर क़ौम में अपना पैग़म्बर (इसी दावत और इसी पयाम के साथ) कि सिर्फ़ अल्लाह की इबादत करो, जो सच्चा माबूद है और हर झूटे खुदा की इबादत और बन्दगी से बचो।

एक और जगह फ़र्मायाः–

तर्जमाः– और जो पैग़म्बर भी हमने तुमसे पहले भेजा उसकी तरफ़ यही वही हम ने की और उसको यही पयाम दिया कि मेरे सिवा कोई इबादत और बन्दगी के लाइक़ नहीं है इसलिये सिर्फ मेरी ही इबादत और बन्दगी करो। (२१:२५)

इस इज्माली (मुख्तसर) बयान के अ़लावा जिन नबियों (अलैहिस्सलाम) की दावत व तालीम का कुर्आने–मजीद

में तफ़सील के साथ (सविस्तार) ज़िक्र किया गया है कुर्आने–मजीद ने उनके मुतअल्लिक़ सराहत व वज़ाहत से (सविस्तार विवरण) बयान किया है कि उन सबने पहली बात अपनी क़ौम से यही कही कि तुम्हारी इबादत और बन्दगी का हक़दार सिर्फ़ अल्लाह है, बस उसी की इबादत करो और उसके सिवा किसी दूसरे की इबादत न करो–

तर्जमाः– यह कि, अल्लाह के सिवा किसी की इबादत मत करो। (११:२)

तर्जमाः– यह कि तुम अल्लाह की इबादत करो, उसके सिवा कोई तुम्हारा माबूद नहीं। (२३:३२)

कुर्आन का बयान है कि यही बात नूह (अलैहिस्सलाम) ने कही, यही हूद (अ) और सालिह (अ) ने कही, यही शुऐब (अ) ने कही, यही इब्राहीम (अ) ने, और उनके बाद आने वाले सब पैग़म्बरों ने कही।

ईसाइयों ने "तस्लीस" का अक़ीदा गढ़ा और हज़रत मसीह (हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम) और रूहुल–कुदस (हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम) को और बाज़ ने हज़रत मसीह (अ) और उनकी माँ मरयम सिद्दीक़ा को खुदाई में शरीक किया, और अल्लाह के उस पाक पैग़म्बर पर यह तुहमत (इल्ज़ाम) धरी कि उसने हमें यह तालीम दी थी। कुर्आने–मजीद ने जगह–जगह पर इसको रद किया और बताया कि अल्लाह के दूसरे सब नबियों, रसूलों की तरह हमारे बन्दे और पैग़म्बर मसीह (अ) ने भी तौहीद ही की तालीम दी थी, इसलिये अपनी क़ौम से साफ़ कहा थाः

तर्जमाः– और मसीह ने कहा था कि ऐ बनी इस्राईल, सिर्फ अल्लाह की इबादत और बन्दगी करो, जो मेरा और तुम्हारा सबका परवरदिगार है। बेशक जिस किसी ने खुदा के साथ किसी को शरीक ठहराया तो उस पर अल्लाह ने जन्नत हराम कर दी और उसका ठिकाना दोज़ख़ की आग है। और ऐसे ज़ालिमों का कोई हामी और मददगार न होगा। (५:७२)

दूसरी जगह सूरए आलि इमरान में बयान फर्माया गया है कि :

हज़रत मसीह ने जब अल्लाह के रसूल की हैसियत से अपनी क़ौम के सामने अपने को पेश किया और फरमाया कि मैं अल्लाह के हुक्म से कोढ़ियों और अंधों को अच्छा कर सकता हूं और मुर्दों को ज़िन्दा कर सकता हूँ और फुलाँ–फुलाँ मोजिज़े (चमत्कार) दिखा सकता हूं तो साथ ही साफ़–साफ यह भी उनसे कह दिया कि मैं खुदा नहीं हूँ बल्कि उसी अल्लाह का बन्दा हूं जिसके तुम बन्दे हो, और मेरा रब और पर्वर्दिगार वही है जो तुम्हारा रब और पर्वर्दिगार है और वही अकेला इबादत और बन्दगी का हक़दार है, मैं तुम को उसी की इबादत और बन्दगी की दावत देता हूं, यही नजात का रास्त है।

कुर्आने–मजीद ने इस मौक़े पर हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम के जो शब्द नक़्ल किये हैं, वे ये हैं :–

तर्जमाः– इस हक़ीक़त में किसी शक–व शुब्हे की गुंजाइश नहीं है कि अल्लाह ही मेरा रब है और वही तुम्हारा रब है (और सब उसके बन्दे हैं) पस तुम को उसी की इबादत करनी चाहिये। यही सिराते–मुस्तक़ीम' (सीधा रास्ता) है।(३:५१)

बहरहाल कुर्आने–मजीद ने तौहीद के हर पहलू पर पूरा–पूरा जोर दिया है। और किसी तरह के **शिर्क के** लिये कोई गुंजाइश नहीं छोड़ी है और खास तौर पर "तौहीद–फिदुआ" और "तौहीद–फ़िल् इबादा" पर सबसे ज़ियादा ज़ोर दिया गया है। और जैसा कि अर्ज़ किया गया, वह इसलिये कि हमेशा से मज़हबी दुनिया की सबसे बड़ी और सबसे ज़ियादा आम गुमराही "शिर्क–फ़िदुआ" और "शिर्क–फिल् इबादा" ही रही है। और यही वजह है कि कुर्आने–मजीद के बिल्कुल शुरू में अल्लाह–तआला की हम्द–व–सना के छोटे–छोटे तीन जुमलों (वाक्यों) के बाद चौथे जुम्ले यानी चौथी आयत (इय्या क नअ़बुदु व इय्याक नस्तअ़ीन।) में पहला इक़रार हर कुर्आन पढ़ने वाले से यही लिया जाता है कि "वह अल्लाह के सिवा कभी किसी और हस्ती की इबादत नहीं करेगा, और कभी किसी और को इख़्तियार रखने वाला या हाजत पूरी करने वाला समझ कर उससे मदद नहीं चाहेगा और दुआ नहीं माँगेगा।"

और एक जगह तो इस "तौहीद–फ़िल्–इबादा" और "तौहीद–फ़िदुआ" की तालीम को कुर्आने–मजीद ने इस तरह से बयान किया है कि मानो यही कुर्आन और कुर्आन लाने वाले, अल्लाह के आख़िरी पैग़म्बर की अस्ल दावत है, और यही गोया दीनी दावत का अस्ल मक़सद (उद्देश्य) व मुद्दआ (अभिप्राय) और बुन्यादी नुक़्ता है– पढ़िये सूरए यूनुस के आखरी रुकूअ़ की यह आयतें :–

तर्जमाः– ऐ पैग़म्बर! आप उन लोगों से कह दीजिये कि अगर तुम्हें मेरे दीन और मेरे तरीक़े के बारे में कोई शक–व–शुबह है तो सुन लो मैं साफ़–साफ़ कहता हूं (कि मेरा दीन और मेरा तरीक़ा यह है कि) अल्लाह

के सिवा तुम जिन हस्तियों की इबादत और परस्तिश करते हो, मैं उनकी इबादत नहीं करता, बल्कि मैं सिर्फ़ अल्लाह की इबादत करता हूं जो तुम पर मौत तारी करता है, और मुझे उसी अल्लाह का हुक्म है कि मैं ईमान वालों के जुमरे (गिरोह) में हो जाऊं। और यह कि सीधा करो अपना रुख अल्लाह की इताअ़त और इबादत के लिये और हरगिज़ न हो मुश्रिकों में से। और न पुकारो अल्लाह के सिवा उन हस्तियों को जो न तुम्हें कोई नफ़ा पहुंचा सकती हैं और न कोई तकलीफ़ दे सकती हैं, और अगर तुमने ऐसा किया तो फिर तुम ज़ालिमों में से हो जाओगे। और यक़ीन करो कि अगर अल्लाह तुम्हें कोई तकलीफ़ पहुंचाये तो अल्लाह के सिवा कोई उसको दूर कर सकने वाला नहीं, और अगर वह तुम्हारे लियें किसी भलाई का इरादा करे और अपनी रहमत से नवाज़ना चाहे तो उसके फ़ज़्ल–व–करम को रोक सकने वाला कोई नहीं। वह अपने बन्दों में से जिसको चाहे नवाज़े और नसीब फ़रमाये, वह बहुत बख़्शने वाला और बड़ा मेहरबान है। (१०:१०४–१०७)

इन आयतों में कुरआन के लाने वाले पैग़म्बर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से एलान कराया गया है कि मेरा दीन और मेरा तरीक़ा जिसकी तरफ़ ऐ लोगों! मैं तुम सबको भी दावत देता हूं, उसका बुन्यादी उसूल और ख़ास मरकज़ी नुक़्ता बस यह है कि सिर्फ़ एक अल्लाह की इबादत की जाये, और सिर्फ़ उसी को सबके नफ़ा–नुक़सान, ख़ैर–शर और बनाव–बिगाड़ का मालिक व मुख़्तार यक़ीन करते हुये अपनी हाजतों और परेशानियों में सिर्फ़ उसी को पुकारा जाये, उसी से मदद माँगी जाये और उसी से दुआ की जाये; और इस मुआमले में उसके साथ किसी को शरीक न किया जाये।

पढ़ो क़ुर्आ समझ कर

मौ० मुहम्मद अहमद (रह०)

ग़ज़ब है हम को अब हासिल नहीं है लुत्फ़े रहमानी।
भुला दी आह, दिल से हम ने तालीमाते क़ुर्आनी।।
वह क़ुर्आ आख़िरी पैग़ाम है जो रब्बे इज़्ज़त का।
मुबारक हो मुबारक क़द्र उस की जिसने पहचानी।।
वह क़ुर्आ जो सरापा नूर है रहमत है बरकत है।
वह क़ुर्आ जो दवा भी है, ग़िज़ा भी है, शिफ़ा भी है।।
पिलाता है जो अपने आशिकों को जामे इर्फ़ानी।
वह क़ुर्आ जिस से तै होते हैं सब दरजाते रूहानी।।
वह कुर्आ जिसने कुफ़्रो शिर्क की जड़ काट कर रख दी।
मये तौहीद की जिस से हुई दुन्या में अरज़ानी।।
वह क़ुर्आ आज भी मौजूद है लेकिन मुसलमानो।
नहीं बाक़ी रहा क्यों आह तुम में रब्ते पिन्हानी।।
ख़ज़ाना घर में है मौजूद फिर भी आह मुफ़्लिस हैं।
भटकते फिर रहे हैं चार सू ऐ वाए नादानी।।
पढ़ो क़ुर्आ समझ कर और अमल दिल से करो उस पर।
फ़ना हो हक़ की मर्ज़ी में बनो महबूबे सुब्हानी।।
हुई है सुब्हे सादिक़ से गुरेज़ा रात की ज़ुल्मत।
जहां खुर्शीद की किर्नों से हो जाए गा नूरानी।।

बहुत ही बेकरार आए

मौ० मु० सानी हसनी

तेरे दर पर शहे वाला
न जाने कितनी बार आए
करें क्या अर्ज आका कितने हम
जार व नजार आए
बहुत ही बे करार आए
बहुत ही अश्कबार आए
तमन्ना है दरख्तों पर
तेरे रौज़े के जा बैठे
कफस जिस वक्त टूटे
ताइरे रूहे मकय्यद का
हमें लेने का शाहा
रहमते परवर दिगार आए
तेरे कदमों पे दें जां
दिल को फिर करार आए
खिजां दीदा चमन में दिल के
फिर से इक बहार आए
तमन्ना है दरख्तों पर
तेरे रौज़े के जा बैठे
कफस जिस वक्त टूटे
ताइरे रूहे मुकय्यद का
तेरी उम्मत पे आका
दुश्मनों की जोर दस्ती है
उधर है जोर दस्ती
और इधर नक्बत है पस्ती है
मुहाफिज तेरी उम्मत की
खुदा की एक हस्ती है
तमन्ना है दरख्तों पर
तेरे रौजे का जा बैठे
कफस जिस वक्त टूटे
ताइरे रूहे मुकय्यद का

प्यारे नबी की प्यारी बातें

अमतुल्लाह तस्नीम

इबादत व ताअत में इअ़तिदाल

सबसे अच्छा अमल और अ़िबादत वह है जो आदमी हमेशा करे

हज़रत आयशः (र०) से रिवायत है कि उनके पास एक औरत बैठी थी। इतने में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तश्रीफ़ लाये। पूछा यह कौन है, कहा, यह फुलाँ औरत है। और यह बड़ी नमाज़ें पढ़तीं हैं। आपने फ़रमाया, उतना ही करो जितनी तुममें ताक़त हो; अल्लाह न उकतायेगा, तुम उकता जाओगी। अल्लाह तआ़ला को वही अमल ज़ियादः महबूब है जिसको करने वाला बराबर क़रे। (बुखारी–मुस्लिम)

हज़रत अनस (र०) से रिवायत है कि तीन आदमी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बीवियों के घर आये और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अ़िबादत के मुतअल्लिक पूछने लगे। जब उन्हें खबर दी तो गोया उन्होंने कम समझा। कहा, हमारा और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का क्या मुक़ाबला, आपके तो तमाम अगले–पिछले गुनाह बख़्श दिये गये। एक ने कहा, मैं हमेशा रात को नमाज़ पढ़ूंगा; दूसरे ने कहा, मैं हमेशा रोज़े रखूंगा और इफ़्तार न करूंगा; तीसरे ने कहा, मैं कभी निकाह न करूंगा। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तश्रीफ़ लाये और फ़रमाया, तुम ही इस तरह कहते हो? खुदा की क़सम मैं तुमसे बहुत ज़ियादः अल्लाह से डरने वाला हूं; लेकिन मैं रोज़े भी रखता हूं और इफ़्तार भी करता हूं, नमाज़ें भी पढ़ता हूं, सोता भी हूं और औरतों से शादी भी की है। पस जो मेरी सुन्नत से हटा वह मुझसे नहीं। (मुस्लिम)

बेजा सख़्ती हलाकत का सामान है

हज़रत अनस (र०) से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जिसने बेजा सख्ती की वह हलाक हुआ। (मुस्लिम)

दीन से ज़ोर–आज़माई

हज़रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि दीन आसान है। दीन से जिसने ज़ोर–आज़माई की दीन ने उसको हरा दिया। पस म्यानारवी इख्तियार करो और इअ़तिदाल से काम लो। खुशखबरी लो। सुबह व शाम की इबादत से मदद चाहो और कुछ अन्धेरे में उठने से।

चुस्ती की हालत में नमाज़ पढ़ें, जब नींद का ग़ल्बः हो, सो जाये

हज़रत अनस (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स०) मस्जिद में तशरीफ़ लाये और एक रस्सी दो खम्बों के दर्मियान खिची हुई थी। आपने फ़रमाया, यह क़ैसी रस्सी है? लोगों ने कहा, यह ज़ैनब (र०) की रस्सी है। जब नींद का झोंका आता है तो इसी से लटक जाती है। आपने फ़रमाया इसको खोलो; जब चुस्ती रहे उस वक़्त तक नमाज़ पढ़ो और जब सुस्ती आने लगे तो सो जाओ। (बुखारी व मुस्लिम),

हज़रत आयशः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जब कोई नमाज़ पढ़ता हो और नींद उसको परेशान करती हो तो सो जाये; यहाँ तक कि नींद ग़ायब हो जाये। अगर कोई नमाज़ में है और नींद से मदहोश हो रहा है तो मुमकिन है कि वह इस्तिग़फ़ार करना चाहे और उल्टी बद्दुआ करने लगे और अपने को कोसने लगे। (बुखारी–मुस्लिम)

मुत्तबस्सित नमाज़, मुतवस्सित खुत्बः

हज़रत जाबिर (र०) बिन समुरह से रिवायत है कि मैं नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ नमाज़ में शरीक था। पस आपकी नमाज़ भी बीच की थी और आपका खुत्बः भी बीच का था। (मुस्लिम)

नफ़्स और अह्ल का हक़

हज़रत वहब (र०) बिन अब्दुल्ला से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत सलमान (र०) और हज़रत अबू दरदा (र०) के दर्मियान भाईचारा करा दिया। एक दिन हज़रत सलमान (र०) हज़रत अबू दरदा (र०) के घर आये। उनकी बीवी को देखा, बहुत मामूली कपड़ों में थीं, कहा, तुम्हारा क्या हाल है? कहा, तुम्हारे भाई अबू दरदा (र०) को दुनिया में किसी चीज़ की हाजत नही। इतने में हज़रत अबू दरदा (र०) आ गये, उनके

लिए खाना तैयार किया गया, हजरत अबू दरदा (र०) ने हज़रत सलमान (र०) से कहा, मैं रोज़: हूं, तुम खाओ। हज़रत सलमान (र०) ने कहा, जब तक तुम न खाओगे मैं न खाऊंगा, तो उन्होंने खाना खाया। जब रात हुई तो हज़रत अबू दरदा (र०) खड़े हुए। हज़रत सलमान (र०) ने कहा, सो जाओ, वह सो गये। फिर खड़े हुए, फिर कहा अभी सो जाओ, जब आखिर रात हुई तो हज़रत सलमान (र०) ने कहा, अब उठो। फिर दोनों ने नमाज़ पढ़ी। हज़रत सलमान (र०) ने कहा, तुम्हारे रब का तुम पर हक़ है। तुम्हारे नफ़्स का तुम पर हक़ है। और तुम्हारी बीवी का तुम पर हक़ है। पस हर एक का हक़ उसके हक़ के मुताबिक़ अदा करो। वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आये और इसका ज़िक्र किया। आपने फरमाया, सलमान (र०) ने सच कहा। (बुखारी)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ख़बर दी गयी कि मैं कहता हूं कि जब तक ज़िन्दः रहूंगा दिन को रोज़े रक्खूंगा और रात को अ़िबादत करूंगा। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, तुम्हीं ने यह कहा है? मैंने कहा या रसूलल्लाह! मेरे माँ–बाप आप पर फ़िदा हों, बेशक मैंने ही यह बात कहीं है। आपने फ़रमाया तुम इसकी इस्तिताअ़त नहीं रख सकते। रोज़: रक्खो और इफ़्तार करो। सोओ और जागो और महीने में तीन दिन रोज़े रक्खो। एक रोज़े में दस रोज़े का सवाब मिलेगा, इसी तरह पूरे रोज़ों का सवाब मिलेगा। मैंने कहा, मैं इससे ज़ियादः की ताक़त रखता हूं। फ़रमाया, एक दिन रोज़: रक्खो और दो दिन नाग़ा करो। मैंने कहा, मैं इससे ज़ियादः कर सकता हूं। आपने फ़रमाया, एक दिन रोज़: रक्खो, एक दिन नाग़ा करो। हज़रत दावूद (अ०) इसी तरह रोज़े रखते थे और यह रोज़े की सबसे ज़ियादः मुअ़तदिल शक्ल है।

एक रिवायत में है कि यह रोज़े सबसे ज़ियादः अफ़ज़ल हैं। मैंने कहा, मैं इससे ज़ियादः की ताक़त रखता हूं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मैं इससे जियादः अफ़ज़ल नहीं समझता।

हज़रत अब्दुल्लाह (र०) कहते हैं कि अगर मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के फ़रमाने के मुताबिक़ तीन रोज़ों को क़बूल करता तो यह मुझे मेरे घर वालों और माल से ज़ियादः महबूब होते।

और एक रिवायत में है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझसे फ़रमाया, मैंने सुना है कि तुम दिन में रोज़े रखते हो और रात में अ़िबादत करते हो, मैंने कहा, हाँ या रसूलल्लाह! फ़रमाया, नहीं तुम यह न करो, रोज़े रक्खो और इफ़्तार करो, सोओ और जागो, बेशक तुम्हारे जिस्म का तुम पर हक़ है। तुम्हारी बीवी का तुम पर हक़ है। और तुम्हारे मिहमानों का तुम पर हक़ है। महीने में तीन दिन रोज़े रक्खो, यह तुम्हारे लिए काफ़ी है। तुम्हारे लिए इसमें दस गुना सवाब है। यह पूरे ज़माने के रोज़े हैं। लेकिन मैंने सख्ती की तो मुझ पर सख्ती की गयी। मैंने कहा, या रसूलल्लाह! मुझमें कुव्वत है। आपने फ़रमाया, हज़रत दावूद (अ०) के रोज़े रक्खो जैसे वह रखते थे; इससे ज़ियादः न रक्खो। मैंने कहा, हज़रत दावूद (अ०) के रोज़े कैसे थे? आपने फ़रमाया, आधे ज़माने के।

हज़रत अब्दुल्लाह (र०) जब बूढ़े हो गये तो कहते थे, ऐ काश मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इर्शाद पर अ़मल करता।

एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मुझको खबर पहुंची है कि तुम दिन में रोज़े रखते हों और रात को क़ुरआन पढ़ते हो। मैंने कहा, हाँ या रसूलल्लाह! इसमें मेरी नीयत भलाई की है। आपने फ़रमाया हज़रत दावूद अलैहिस्सलाम के ऐसे रोज़े रक्खो। वह लोगों में सबसे ज़ियादः अिबादत करने वाले थे। और क़ुरआन हर महीने खत्म करो। मैंने कहा, या नबीयल्लाह! मैं इससे ज़ियादः ताक़त रखता हूं। फ़रमाया, बीस दिन में ख़त्म करो। मैंने अर्ज़ किया कि मुझमें इससे ज़ियादः ताक़त है। फ़रमाया, सात दिन में ख़त्म करो। मैंने कहा, या नबीयल्लाह! मैं इससे ज़ियादः ताक़त पाता हूं। फ़रमाया, सात दिन में खत्म करो और इस पर ज़ियादती न करो। पस मैंने सख़्ती की तो मुझ पर सख्ती की गयी। नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, तुम नहीं जानते शायद तुम्हारी उम्र लंबी हो। आपने जो मुझसे फ़रमाया था वही हुआ। जब मैं बूढ़ा हुआ तो तमन्ना करता था कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बात मान लेता। एक रिवायत में है, जिसने हमेशा रोज़े रक्खे उसके रोज़े नहीं। (तीन बार फ़रमाया)।

एक रिवायत में है कि अ़ल्लाह तआ़ला को सबसे ज़ियादः हज़रत दावूद

(अ०) के रोज़े महबूब थे। और अल्लाह तआला को सबसे ज़ियादः हज़रत दावूद (अ०) की नमाज़ महबूब थी। वह निस्फ़ रात को सोते थे, तिहाई रात को अिबादत करते थे। और उसके छठे हिस्से में सोते थे। और एक दिन रोज़ा रखते थे और एक़ दिन नाग़ा करते थे, और दुश्मनों से लड़ते थे तो भागते नहीं थे।

एक रिवायत में है कि हज़रत अब्दुल्लाह (र०) ने कहा, मेरे बाप ने एक हसब वाली औरत से मेरी शादी की। वह अपनी बहू से पूछा करते थे कि तुम्हारे शौहर कैसे हैं? वह जवाब में कहती थीं कि बड़े अच्छे आदमी हैं। जबसे हम आयें हैं न सोते हैं, न हमारी किसी बात पर मुअतरिज़ होते हैं। इसको एक ज़माना हो गया। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से इनका ज़िक्र किया गया तो आपने फ़रमाया उनको मुझसे मिलाओ। जब मैं मिला तो आपने फ़रमाया, तुम कैसे रोज़े रखते हो? मैंने कहा, हर रोज़। फरमाया, कुरआन कैसे ख़त्म करते हो? मैंने कहा, हर रात में एक (और उसी तरह ज़िक्र किया जैसे ऊपर गुज़र चुका है) वह (यानी हज़रत अब्दुल्लाह र०) दिन को अपने घर वालों से दौर करते थे ताकि रात को मिहनत में तख़्फ़ीफ़ हो और जब कुव्वत हासिल करने का इरादः करते थे तो कुछ दिनों के रोज़े छोड़ देते थे, उसको गिनते रहते थे, फिर बाद में रखते थे। यह नापसन्द करते कि जो काम हुज़ूर (स०) के ज़माने में करते थे, उसको छोड़ दें।

हालतों का फ़र्क़ निफ़ाक़ नहीं

हज़रत हनजलः इब्नुर्रबी (र०) से रिवायत है (यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कातिब थे) कि एक दिन अबू बक्र (र०) मुझसे मिले और मेरा हाल पूछा। मैंनें कहा, हनज़लः मुनाफ़िक़ हो गया। कहा, सुब्हानल्लाह! यह तुम क्या कहते हो? मैंने कहा, जब हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास होते हैं और आप जन्नत और दोज़ख़ का ज़िक्र करते हैं तो गोया हमारी आँखें देखती हैं और जब हम अपने घरवालों के पास होते हैं तो बीवी, बच्चे और खेती–बाड़ी में बहुत कुछ भूल जाते हैं। अबू बक्र (र०) ने कहा, तुमने तो मेरे दिल की कैफ़िय्यत बयान कर दी। मेरा भी यही हाल है। फिर हम दोनों चले। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आये और मैंने कहा, या रसूलुल्लाह, हनज़लः मुनाफ़िक़ हो गया। आपने फ़रमाया, यह क्या? मैंने कहा, या रसूलुल्लाह! जब हम आपके पास होते हैं और आप जन्नत–दोज़ख़ का ज़िक्र फ़रमाते हैं तो गोया हमारी आँखें देख रही हैं। और जब हम अपने घरवालों के पास जाते हैं तो बीवी, बच्चे, खेती–बाड़ी के शग़्ल में हम भूल जाते हैं। आपने फ़रमाया, क़सम है उसकी जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है। जिस हाल पर तुम मेरे पास रहते हो अगर इस पर हमेशा क़ायम रहो तो फ़िरिश्ते तुम्हारे रास्तों पर और तुम्हारे बिस्तरों पर तुमसे मुसाफ़हः करें। लेकिन ऐ हनज़लः यह बात गाहे गाहे। (तीन मर्तबः आपने फ़रमाया) (मुस्लिम)

धूप में खड़े रहने की मन्नत

हज़रत इब्नि अब्बास (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खुत्बः फ़रमा रहे थे। एक आदमी को खड़ा देखकर उसके मुतअ़ल्लिक दरयाफ़्त फ़रमाया कि यह कौन है? लोगों ने कहा, यह अबू इस्राईल हैं। उन्होंने मन्नत मानी है कि धूप में खड़े रहें, न साया लें न बात करें, न बैठें, और रोज़े रक्खें। आपने फ़रमाया, उनसे कहो बैठो, बात करो, साया लो और अपने रोज़े को पूरा करो। (बुखारी)

ईश–विधान

जग जन जो चाहें कल्याण।
सब अपनाएं ईश–विधान।।
भारत हो या पाकिस्तान,
अमरीका हो या जापान।
चीन, रूस अरु इंगलिस्तान,
सबको सम्मति दे भगवान।।
इसमें है सबका कल्याण।
सब अपनाएं ईश–विधान।।
साम्यवाद और पूंजीवाद,
तानाशाह भी अपवाद।
ऐहिकता ने दिए प्रसाद,
जग को दो–दो युद्ध महान।।
अब तो सोचें निज कल्याण।
सब अपनाएं ईश–विधान।।
मेघ पवन, जीवों के श्वास,
धरती, सूर्य, चन्द्र, आकाश।
कण–कण स्रष्टा का है दास,
निश्चित सबके लिए विधान।।
है इसमें सबका कल्याण।
सब अपनाएं ईश–विधान।।
तू भी मानव की सन्तान,
'सेवक', का ले कहना मान।
स्रष्टा ही को स्वामी जान,
इसमें है तेरा सम्मान।।
और कहीं झुकना अपमान।
सब अपनाएं ईश–विधान।।

(बृहस्पति)

नमाज़ में

अल्लाह के रसूल स० का तरीक़ा

मौ० स० अबुल हसन अली हसनी

सुनन व नवाफ़िल में बारह रकाअतों का क़ियाम की हालत में आप हमेशा एहतिमाम फरमाते थे, ज़ुहर फर्ज़ से पहले चार रक़अत, और दो रकअत फर्ज़ के बाद, और मग़रिब में फर्ज़ के बाद दो रकअत, और इशा में फर्ज़ के बाद दो रकअत, और फ़ज्र में फ़र्ज़ से पहले दो रक़अतें। आप इन सुन्नतों को अक्सर अपने घर में पढ़ा करते थे और क़ियाम की हालत में कभी इनको तर्क नहीं फरमाते थे। आप का तरीक़ा यह था कि किसी काम को शुरू करते तो उसको मामूल बना लेते। इन सुन्नतों में सबसे अहम सुन्नत फ़ज्र की सुन्नतें है। हज़रत आयशा रज़ी० फ़रमाती हैं कि अल्लाह के रसूल स० नवाफ़िल व सुनन में किसी नमाज़ का इतना एहतमाम नहीं फरमाते थे, जितना फ़ज्र की इस दुगाना सुन्नत का। आप का मामूल था कि नवाफ़िल व सुनन घर पर अदा फ़रमाते थे, और वित्र का सफ़र व हज़र में एहतमाम फरमाते थे। फ़ज्र की सुन्नत अदा फरमाकर आप दाहिनी करवट आराम फरमाते। जमाअत के बारे में आप का इरशाद है कि "जमाअत की नमाज़ तनहा पढ़ी जाने वाली पर सत्ताईस दर्जा फौक़ियत रखती है"। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ी० बयान करते हैं कि "हमने अपने आपको इस हाल में देखा है कि (जमाअत से) पीछे रहने वाला वही मुनाफ़िक़ होता था जिसका निफ़ाक़ खुला हुआ हो (वरना जमाअत में) वह आदमी भी लाया जाता था, जिसको दो शख्स पकड़ कर लायें और सफ़ में खड़ा कर दें।" (मुस्लिम शरीफ)

अल्लाह के रसूल स० सफ़र व हज़र में कभी तहज्जुद तर्क नहीं फ़ारमाते थे और अगर कभी नींद ग़ालिब आ जाये या तकलीफ़ की वजह से न पढ़ सके तो दिन में बारह रकअतें पढ़ लेते थे। रात में आप (वित्र के साथ) ग्यारह या तेरह रकअते पढ़ते। तहज्जुद और वित्र का मामूल मुख्तलिफ़ रहा है। वित्र में क़ुनूत भी पढ़ते थे। रात को क़िराअत कभी सिर्री फ़रमाते कभी जेहरी। कभी तवील रकअतें पढ़ते कभी मुख्तसर। और ज्यादातर आख़री रात में वित्र पढ़ते थे। रात दिन में किसी वक़्त भी सफ़र की हालत में सवारी पर चाहे किधर ही उसका रुख़ हो नफ़िल नमाज़ें पढ़ लेते थे। और रुकू व सज्दा इशारा से फ़रमाते थे।

अल्लाह के रसूल स० और सहाबाकिराम रज़ी० किसी बड़ी नेमत के मिलने या बड़ी मुसीबत के टल जाने पर सज्दये शुक्र बजा लाते थे, और क़ुरआन में अगर आयते सज्दा तिलावत फ़रमाते या सुनते तो अल्लाहु अकबर कहकर सज्दा में चले जाते।

जुमा की बड़ी ताज़ीम व एहतिराम फ़रमाते और इसमें कुछ ऐसी इबादतें फ़रमाते जो और दिनों में न फ़रमाते। जुमा के गुस्ल, इत्र लगाने और नमाज़ के लिए जल्दी जाने को आपने मसनून करार दिया है। जुमा के दिन आप सूरः कहफ़ की तिलावत का एहतमाम फ़रमाते थे। जहाँ तक हो सकता अच्छे कपड़े पहनते थे। इमाम अहमद र० हज़रत अबू अयूब अंसारी रज़ी० के हवाले से बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल स० को फ़रमाते हुए सुना कि, "जुमा के दिन गुस्ल करे और इत्र–अगर उसके पास हो–लगाये। और जहाँ तक हो सके अच्छे कपड़े पहने फिर सुकून के साथ मस्जिद जाये। फिर अगर चाहे तो नवाफ़िल पढ़े, और किसीको तकलीफ़ न दे। और फिर जब इमाम मेंबर पर आ जाये उस वक्त से नमाज़ के ख़त्म तक ख़ामोश रहे। और ध्यान से खुतबा सुने। अगर ऐसा करेगा तो एक जुमा से दूसरे जुमा तक गुनाहों के लिए यह कफ्फारा होगा"। जुमा के दिन एक क़बूलियत की घड़ी है। हज़रत अबू हुरैरा रज़ी० की रिवायत है कि "जुमा के दिन एक ऐसी घड़ी है कि अगर कोई मुसलमान बन्दा इसको इस हाल में पाले कि वह खड़ा हुआ नमाज़ पढ़ रहा हो और अल्लाह से सवाल कर रहा हो तो अल्लाह तआला उसको जरूर इनायत फ़रमायेगा।" इस साअत के वक्त के बारे में उलमा का इख्तेलाफ़ है। इमाम अहमद और जमहूर सहाबा व ताबईन का क़ौल है कि वह अस्र के बाद की एक साअत है।

जुमा में ख़ुतबा मुख्तसर देते और नमाज़ तवील पढ़ते थे, और ज़िक्र की करारस करते थे। ख़ुतबा में

सहाबाकिराम को इस्लाम के उसूल व क़वायद और अहकाम की तालीम देते। और ज़रूरत के मुताबिक किसी चीज़ से रोकते किसी चीज़ का हुक्म देते। हाथ में तलवार वगैरह नहीं लेते थे। हाँ मेंबर बनने से पहले कमान या असा पर टेक लगाते थे। खड़े होकर ख़ुतबा देते थे। फ़ारिग़ होते ही हज़रत बेलाल रज़ी० इक़ामत शुरू कर देते थे।

ईद और बक़रीद की नमाज़ें ईदगाह में पढ़ते थे, सिर्फ एक बार बारिश की वजह से अपनी मस्जिद में ईद की नमाज़ अदा फ़रमाई। ईदैन के दिन ख़ूबसूरत पोशाक पहनते थे। ईद के दिन ईदगाह जाने से पहले ताक अदद खजूरें नोश फ़रमाते थे, और बक़रीद के दिन ईदगाह से वापसी से पहले कुछ नहीं खाते थे। वापस आकर कुरबानी का गोश्त तनाउल फरमाते। ईदैन के लिए गुस्ल फ़रमाते थे और ईदगाह पहुंचते ही अजान व इक़ामत के बग़ैर नमाज़ शुरू फ़रमा देते। ईदगाह में आप और आपके सहाबा क्राम न नमाज़ ईद से पहले कोई नमाज़ पढ़ते, और न नमाज़ ईद के बाद ख़ुतबा से पहले दुगाना ईद अदा करते और तकबीरात में इज़ाफ़ा फ़रमाते। जब नमाज़ पूरी कर लेते तो लोगों की तरफ रुख़ करके खड़े हो जाते, इस हाल में कि लोग बैठे होते और फिर वाज़ व नसीहत फरमाते। कोई हुक्म देना होता तो हुक्म देते। किसी बात से रोकना होता तो रोकते, कोई वफद या लशकर भेजना होता तो भेजते, या जैसी जरूरत होती वैसा करते। फिर औरतों के पास आकर उनको वाज व नसीहत फरमाते। औरतें कसरत से सदक़ात व ख़ैरात करतीं। ईद व बक़रीद के ख़ुतबों में कसरत से तकबीर के अल्फाज़ दोहराते। ईद के दिन एक रास्ते से आते और दूसरे रास्ते से जाते।

अल्लाह के रसूल स० ने सूरज़गहन की नमाज़ भी पढ़ी है। और इस मौके पर बड़ा ताक़तवर ख़ुतबा भी दिया है। यह नमाज़ सिर्फ़ एक बार हज़रत इब्राहीम की वफ़ात के मौके पर आपने अदा फ़रमाई और ग़लत ख्यालात की यह एलान करके तरदीद फ़रमाई:–

तर्जुमा : "सूरज और चाँद अल्लाह की निशानियों में दो निशानियाँ हैं, किसी की मौत व हयात की वजह से इनमें गहन नहीं लगता जब तुम ऐसा देखो तो अल्लाह से दुआ करो, उसकी अज़मत बयान करो, नमाज़ पढ़ो, सदक़ा ख़ैरात करो।"

नमाज़ इस्तेस्का भी मुख़्तलिफ़ तरीकों से आप से साबित है। जनाजा के सिलसिले में आप का तरीक़ा व सुन्नत तमाम क़ौमों के तरीक़ों से अलग था। नमाज़ जनाज़ा दो चीज़ों की जामे होती– ख़ुदा की इबादत और बन्दगी का खुला हुआ इक़रार और मैयत के लिए दुआ व इस्तेग़फ़ार और उसके साथ बेहतरीन तअल्लुक़ का इज़हार। आप और तमाम मुसलमान सफें बान्धकर खड़े हो जाते, ख़ुदा की हम्द व सना बयान करते और मैयत के लिए दुआ व इस्तेग़फ़ार करते। नमाज़ जनाज़ा का असल मक़सद ही मैयत के लिए दुआ है जब कब्रिस्तान तशरीफ़ ले जाते तो मुर्दों के लिये दुआ व इस्तेग़फ़ार और उनके हक़ में ख़ुदा की रहमत की दुआ करते। सहाबा क्राम को क़ब्रों की ज़ियारत के वक्त यह कहने की वसीयत फ़रमाते।:–

"तुम पर सलामती हो ऐ क़ब्रिस्तान के मोमिनो और मुसलमानो! हम भी इंशा अल्लाह तुमसे मिलने वाले हैं, हम ख़ुदा तआला से अपने और तुम्हारे लिए आफ़ियत के तालिब हैं"।

(पृष्ठ ३६ का शेष)

दाढ़ियों के लिए बड़ी ही लाभदायक थी। तदोपरान्त मैं हारून रशीद ने "ग़ैर मुस्लिमों में इस्लाम का परिचय" विषय पर विस्तार से बात की और बताया कि आप अगर अच्छे आचरण के न होंगे तो ग़ैर मुस्लिमों में काम न कर सकेंगे। ज़ुहर की नमाज़ के पश्चात आए हुए प्रतिनिधियों के मनुभाव सुने गये अन्त में मौ० मु० ग़ुफ़रान की दुआ पर कार्यक्रम समाप्त हुआ। पूरा कार्यक्रम बड़े ही अच्छे वातावरण में सम्पन्न हुआ। तीन बजे हम लोग संघ (मजलिस) का मैदानी काम देखने निकले कई गांव में उनकी मस्जिदें और मदरसे देखे हर जगह के लोगों से बातें कीं और इशा में वापस आए जमअ़ीयते शबाब का आफ़िस और एक मदरसा ११ ही को देख लिया था। १३ की सुब्ह को दारूल उलूम नूरूल इस्लाम के विद्यार्थियों ने धन्यवाद सभा का आयोजन किया जिस में मदरसे के मुहतमिम साहब ने हम लोगों को धन्यवाद दिया तत्पश्चात हम लोगों को दारूल उलूम की शाख़ मदरसा तालीमुल इस्लाम में ले जाया गया जहां वहां के गुरूजनों ने हम लोगों का स्वागत किया और हम लोगों ने विद्यार्थियों तथा गुरूजनों को सम्बोधित किया। १ बजे हम लोग जोगबनी के लिए चल दिये इस प्रकार यह यात्रा परिश्रम पूर्ण तो थी परन्तु बड़ी ही लाभदायक थी।

दूसरी किस्त

सीरतुन्नबी

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अख़लाक़

अल्लामा शिबली नोमानी

इस्लाम और अख़लाक़े हसनः बन्दों के हुक़ूक़ को अहम्मियत

एक और नज़र से देखा जाये तो मालूम होगा कि नबी सल्ल० की शिक्षाओं ने अख़लाक की अहम्मियत (आचरण के महत्व) को इबादात (उपासना) से भी ज़ियादः बढ़ा दिया है। अख़लाक़ हुक़ूके इबाद अर्थात् इनसानों के आपस के मामलात और तअल्लुक़ात का नाम है और इबादात हुक़ूक़ अल्लाह अर्थात् ख़ुदा के फ़राइज़ हैं। अल्लाह ने जो बहुत रहम करने वाले हैं, और जिसकी रहमत का दरवाज़ा किसी अच्छे व बुरे पर बन्द नहीं है, शिर्क और कुफ़्र के अलावा हर गुनाह को अपनी इच्छानुसार माफ़ी के क़ाबिल क़रार दिया है। मगर हुक़ूके इबाद यानी इन्सानों के आपस के अख़लाक़ी फ़राइज़ की कोताही और चूक की माफी ख़ुदा ने अपने हाथ में नहीं बल्कि उन बन्दों के हाथों में रखी है जिनके हक़ में वह ज़ुल्म व ज़ियादती हुई है। और ज़ाहिर है कि उन से उस रहम व करम की उम्मीद नहीं हो सकती जो उस बहुत मेहरबान की बेनियाज़ (निःस्पृह) ज़ात से है। इसी लिए आँहज़रत सल्ल० ने फ़रमाया कि "जिस भाई ने दूसरे भाई पर कोई ज़ुल्म किया हो तो उसको चाहिए कि वह इसी दुनिया में उस (मज़लूम भाई) से उसको माफ करा ले। वरना वहाँ तावान अदा करने के लिये किसी के पास कोई दिरहम या दीनार (पैसा) न होगा। सिर्फ़ आमाल होंगे। ज़ालिम की नेकियाँ मज़लूम को मिल जायेंगी। और नेकियाँ न होंगी तो मज़लूम की बदियाँ ज़ालिम के नाम–ए–आमाल में लिख दी जायेंगी। एक और हदीस में है कि क़ियामत में नाम–ए–आमाल की तीन फ़र्दें होंगी, एक वह जिसकी कोई परवाह ख़ुदा न करेगा, दूसरी वह जिस में से ख़ुदा एक अक्षर को भी न छोड़ेगा, और तीसरी वह जिसमें कुछ न माफ़ फ़रमायेगा। जिस फ़र्द के गुनाह माफ़ न होंगे वह शिर्क है और जिस फ़र्द की कोई परवाह उसको न होगी तो वह ज़ुल्म है जो इन्सान ने ख़ुद अपने ऊपर किया है और जिस का मामला ख़ुद उस बन्दः और उस के ख़ुदा के बीच है जैसे उसने रोज़ा न रखा हो या नमाज़ न पढ़ी हो तो अल्लाह जिस को चाहेगा उस के इस फ़र्द के गुनाह को माफ़ कर देगा। अतएव इसी लिये अल्लाह ने हज की फर्ज़ियत उस समय तक बन्दः पर आयद नहीं की है जब तक वह अपने अहल व अयाल के नफ़क़ः (मेंटेनेन्स) का पूरा सामान न करे। और ज़कात बन्दः के उसी माल में फ़र्ज़ है जो उस के और उस के अहल व अयाल के ख़र्च से ज़्यादा की हो। यानी अल्लाह ने अपना हक़ उस वक़्त तक बन्दः पर वाजिब नहीं किया जब तक वह बन्दों के हुक़ूक़ से फ़ुरसत न पा ले।

इस्लाम के पाँच अरकान और अख़लाक़

बाज़ उन हदीसों की बिना पर जिनमें इस्लाम की इमारत को ईमान के बाद नमाज़, रोज़ा, हज और ज़कात के चार स्तम्भों पर क़ाइम बताया गया है, ऊपर से देखने में यह ग़लतफ़हमी पैदा होती है कि इस्लाम की इस इमारत में अख़लाक़ हसनः को कोई जगह ही नहीं दी गई है। और बेसमझ वाइज़ों की ग़लत बयानी से इस ग़लतफ़हमी को बढ़ावा मिला है। हालांकि जैसा कि इबादात के शुरू में हम बता चुके हैं कि दूसरे महत्वपूर्ण उद्देश्यों के अलावा इन इबादात से एक मक़सद इन्सान के अख़लाक़ हसनः की तरबियत और तकमील है। क़ुर्आन पाक में यह नुक़्तः हर जगह साफ़ तरीक़ः से स्पष्ट कर दिया गया है, अतएव नमाज़ का एक फ़ायदा उस ने यह बताया है कि वह बुरी बातों से बाज़ रखती है। रोज़ा की निस्बत बताया है कि वह तक़वः (परहेज़गारी) की तालीम देता है। ज़कात पूरी की पूरी इन्सानी हमदर्दी और ग़मख़्वारी का सबक़ है और हज भी अनेक तरीक़ों से हमारी अख़लाक़ी इस्लाह व तरक़्क़ी का ज़रियः और अपनी व दूसरों की इमदाद का वसीलः है।

इस तफ़सील में ज़ाहिर होता है कि इस्लाम के इन चारों अरकान के नाम अलग अलग जो कुछ हों मगर उनके बुनियादी मक़ासिद में अख़लाक़ी तालीम का राज़ छिपा है। अगर इन

इबादात से यह रूहानी और अख़लाक़ी नतीजा ज़ाहिर न हो तो समझ लेना चाहिये कि वह अहकामे इलाही की महज़ लफ़्ज़ी तामील ओर इबादत के जौहर व माअनी से एकदम ख़ाली है, वह पेड़ हैं जिन में फल नहीं, वह फूल हैं जिन में ख़ुश्बू नहीं वह क़ालिब हैं जिन में रूह नहीं। कुर्आन पाक और तालीमे नबवी के जो इशारे इस बाब में हैं, हज़रात सूफ़ियः ने अपनी किताबों में इनकी पूरी तशरीह कर दी है।

इमाम ग़ज़ाली अहया–उल–उलूम में लिखते हैं :–

"ख़ुदा फ़रमाता है कि नमाज़ को मेरी याद के लिए खड़ी करो और फ़रमाया कि भूलने वालों में न हो, और फ़रमाया कि नशा की हालत में तब तक नमाज़ न पढ़ो जब तक तुम यह न समझो कि तुम क्या कह रहे हो। कितने नमाज़ी हैं जिन्हों ने गो शराब नहीं पी, मगर जब वह नमाज़ पढ़ते हैं तो नहीं जानते कि वह क्या कर रहे हैं। आप ने फ़रमाया कि जो शख़्स दो रकअत भी नमाज़ ऐसी अदा करे जिन में किसी दुनियावी चीज़ का ध्यान न आवे तो ख़ुदा उसके गुनाह को माफ़ कर देगा। फिर फरमाया कि नमाज़ आजिज़ी, फ़रोतनी (विनय) दर्दमन्दी ओर शर्मिन्दगी का नाम है और यह कि हाथ बान्ध कर कहो कि ऐ मेरे अल्लाह! जिस ने यह बात नहीं पैदा की उस की नमाज़ नाक़िस है, और अगली किताबों में है कि, "अल्लाह फरमाता है कि मैं हर एक नमाज़ कुबूल नहीं करता, मैं उस की नमाज़ कुबूल करता हूं जो मेरी बड़ाई के सामने नतमस्तक है। मेरे बन्दों पर अपनी बड़ाई नहीं जताता, ओर जो भूखे मुहताज को मेरे लिए खाना लिखलाता है"। और आँहज़रत सल्ल० ने फ़रमाया कि "नमाज़ इसीलिये फ़र्ज़ की गई और इसीलिए हज के अरकान बनाये गये ताकि ख़ुदा की याद की जाये।"। तो अगर दिल में यह कैफ़ियत पैदा न हो जो मक़सद है तो इस यादे इलाही की क़द्र व क़ीमत क्या है? हदीस में है कि आप ने फ़रमाया कि, "जिस की नमाज़ उसको बुराई और बदी से न रोके तो ऐसी नमाज़ उसको ख़ुदा से और दूर कर देती है।"

इस अख़ीर हदीस को इब्ने जरीर, इब्ने अबी हातिम और दूसरे अहले तफ़सीर मुहद्दिसों ने अपनी किताबों में सनद के साथ ज़िक्र किया है। और हाफ़िज़ इब्ने कसीर ने अपनी तफ़सीर (सूरः अनकबूत) में इन तमाम रवायतों को एकजा कर दिया है। इस हदीस की दूसरी रवायत में अल्फ़ाज़ यह हैं कि "जिस को उस की नमाज़ बुराई और बदी से बाज़ न रखे उस की नमाज़ ही नहीं"। इसी क़िस्म के अल्फ़ाज़ रोज़ों के बारे में आप ने फरमाये, इरशाद हुआ कि "रोज़ा रखकर भी जो शख़्स झूठ और फ़रेब को न छोड़े तो ख़ुदा को इस की ज़रूरत नहीं कि इन्सान अपना खाना पीना छोड़ दे।" इन तालीमात से अन्दाज़ा होगा कि इबादात का एक बड़ा मक़सद अख़लाक़ को माँझना और चमकाना भी है।

अख़लाक़े हसनः और ईमान

इस में बड़ी बात यह है कि ईमान जो गो मज़हब का असल उसूल है लेकिन इस बिना पर कि वह दिल के अन्दर की बात है जिस को कोई दूसरा जानता नहीं और ज़बान से ज़ाहिरी इक़रार हर शख़्स कर सकता है। इसलिये इस ईमान की पहचान उस के नतीजः व आसार, यानी अख़लाक़ हसनः को क़रार दिया गया है। अतएव सूरः मोमिनून में इबादात के साथ साथ अख़लाक़ को भी अहले ईमान की उन ज़रूरी सिफ़ात में गिनाया गया है जिन पर उनकी कामयाबी का मदार है। फरमायाः–

तर्जुमः बेशक ईमान वाले कामयाब हो गये, जो नम्रता और विनय के साथ अल्लाह के लिये अपनी नमाज़ अदा करते हैं और जो निकम्मी बात से दूर रहते हैं, और जो अपनी ज़कात बराबर अदा करतें हैं और जो अपनी शर्मगाहों (गुप्त अंगों) की हिफ़ाज़त करते हैं। और जो अपनी ज़मानतों और अपने वाअदों का लिहाज़ रखते हैं और जो अपनी नमाज़ों की पाबन्दी करते हैं (१–५)

अख़लाक़ हसनः और तक़वा

इस्लाम की शब्दावली में इन्सान के उस अन्तःकरण का नाम जो हर तरह की नेकियों की जन्नी है, तक़वा है। तक़वा वाले लोगों के औसाफ़ (गुण) यह हैं। कुर्आन कहता हैः–

तर्जुमः नेकी यही नहीं है कि तुम नमाज़ में अपना मुंह पूरब या पच्छिम की तरफ करो, बल्कि असल नेकी उसकी है जो ख़ुदा पर, क़ियामत पर, फरिश्तों पर, किताब पर और पैग़म्बरों पर ईमान लाया और माल की इच्छा के बावजूद (या ख़ुदा की मुहब्बत की वजह से) अपना माल रिश्तेदारों को, यतीमों को, ग़रीबों को, मुसाफ़िर को, माँगने वालों को और ग़ुलामों को आज़ाद करने में दिया और नमाज़ अदा करता रहा और ज़कात देता रहा और जो वाअदा करके अपने वायदे को पूरा करते

हैं,और जो मुसीबत, तकलीफ़ और लड़ाई में साबित कदम (अडिग) रहते हैं। वही हैं जो सच्चे हैं सीधे हैं और यही तक़वा वाले हैं। (सूरः अल–बक़रः १७७)

इस से ज़ाहिर हुआ कि सच्चाई और तक़वा का पहला नतीजा जिस तरह ईमान है उसी तरह इन का दूसरा लाज़िमी नतीजा अख़लाक़ के बेहतरीन औसाफ़, फ़ैय्याज़ी (उदारता) वादा पूरा करना, धैर्य आदि भी हैं।

अख़लाक़ हसनः और ख़ुदा का परम भक्त होने का गौरव

हज़रत मुहम्मद सल्ल० की तालीम में ख़ुदा के नेक और मक़बूल बन्दे वही क़रार दिये गये जिनके अख़लाक़ भी अच्छे हों और वही बातें ख़ुदा के नज़दीक उन के मक़बूल होने की निशानी हैं। सूरः अल–फ़ुर्कान में इरशाद हुआः–

तर्जुमः "और रहम वाले ख़ुदा के बन्दे वह हैं जो ज़मीन पर दबे पाँव चलते हैं और जब नासमझ लोग उन से बात करें तो वह सलाम कहें और जो अपने परवरदिगार की ख़ातिर क़ियाम और सज्दः में रात गुज़ारते हैं और जो कहते हैं कि ऐ हमारे परवरदिगार! हम से जहन्नम का अज़ाब दूर कर कि उसका अज़ाब बड़ा तावान (सज़ा) है और जहन्नम बुरा ठिकाना है और जो खर्च जब करते हैं तो न फिजूल खर्ची करें और न तंगी करें बल्कि इन दोनों के बीच से वह सीधे गुज़रें और जो ख़ुदा के साथ किसी और ख़ुदा को नहीं पुकारते और जो किसी जान का बेगुनाह ख़ून नहीं करते जिसको ख़ुदा ने मना किया है और न बदकारी करते हैं कि जो ऐसा करेगा गुनहगार होगा. ..और जो झूठे काम में शामिल नहीं होते और जब कभी लग़वियात (बेफ़ायदा) पर गुज़रते हैं तो सन्जीदगी के साथ गुज़र जाते हैं और जब ख़ुदा की निशानियाँ उन को सुनाई जायें तो वह अन्धे और बहरे न हो पड़ें और यह दुआ मांगते हैं कि ऐ हमारे परवरदिगार! हमको हमारे बीवी बच्चों से आँख की ठंडक बख़्श और हमको परहेज़गारों का पेशवा बना। (सूरः फ़ुर्कान ६३–६८, ७२–७४)

ईमान वालों के अख़लाक़ी औसाफ़

वह लोग जो ख़ुदा के प्यारे और मक़बूल बन्दे हैं अल्लाह के रसूल मुहम्मद सल्ल० की ज़बानी उन के अख़लाक़ी औसफ़ यह बयान हुए हैं: तर्जुमः और वह अपने परवरदिगार पर भरोसा रखते हैं और जो बड़े–बड़े गुनाहों और बेहयाई के कामों से परहेज़ करते हैं और जो गुस्सा की हालत में माफ करते हैं और अपने परवरदिगार की पुकार का जवाब देते हैं, नमाज़ अदा करते हैं और उन के काम आपस के मशविरः से होते हैं। और हम ने उन को जो दिया है उस में से कुछ ख़ुदा की राह में देते हैं और जब उन पर चढ़ाई हो तो वह बदला लेते हैं ओर बुराई का बदला वैसी ही बुराई है तो जो कोई माफ कर दे ओर नेकी करे तो उसका सवाब अल्लाह के ज़िम्मः है। वह जुल्म करने वालों को प्यार नहीं करता और अगर कोई मज़लूम होकर बदला ले ले तो उस पर कोई मलामत नहीं। मलामत तो उन पर है जो लोगों पर जुल्म करते हैं और ज़मीन पर नाहक़ फ़साद मचातें हैं उन के लिये बड़ा दर्दनाक अज़ाब है और बेशक जो (मज़लूम होने पर भी) ज़ालिम को माफ़ फ़रमा दे और सह ले तो यह हिम्मत के काम हैं। जन्नत उन परहेज़गारों के लिये तैयार की गयी है जो सुख–दुख दोनों हालतों में ख़ुदा की राह में कुछ खर्च करते हैं और जो गुस्सा को दबाते हैं और लोगों को माफ़ करते हैं और ख़ुद को दबाते हैं और लोगों को माफ़ करते हैं और ख़ुदा अच्छे काम करने वालों को प्यार करता है। (सूरः शूरा– ३६–४३; सूरः आले इमरान–१३४)

यह वह हैं जिन को दोहरा सवाब मिलेगा इसलिये कि उन्होंने सब्र किया और वह बुराई को भलाई से दूर करते हैं और जो हम ने दिया है उस से कुछ ख़ुदा की राह में ख़र्च करते हैं ओर जब कोई बेहूदः बात सुनते हैं तो उससे किनारा कर लेते हैं और कह देते हैं कि हमारे लिये हमारा अ़मल और तुम्हारे लिये तुम्हारा अ़मल है। तुम सलामत रहो। हम ना समझों को नहीं चाहते। (सूरः क़सस–५५)

और खाने की ख़ुद ज़रूरत होते हुए दीन–दुख्या, अनाथ और क़ैदी को खिला देते थे। (सूरः दहर–८)

इन आयतों की और इसी तरह की दूसरी आयतों की जो तशरीह (व्याख्या) आँहज़रत सल्ल० ने अपनी ज़बान मुबारक से फ़रमाई वह हदीसों में महफ़ूज़ हैं। हम इन हदीसों को अलग–अलग उनवानों के नीचे यहाँ लिखते हैं ताकि मालूम हो सके कि आप सल्ल० के तालीमी निसाब (पाठ्यक्रम) में अख़लाक़ के सबक़ की क्या अहम्मियत है।

अख़लाक़ हसनः का दर्जा इस्लाम में

इस्लाम में अख़लाक़ को जो अहम्मियत हासिल है वह इस से ज़ाहिर है कि आँहज़रत सल्ल० नमाज़ में जो दुआ माँगते थे उस में यह भी होता

था, "और ऐ मेरे ख़ुदा तू मुझ को बेहतर से बेहतर अख़लाक़ की रहनुमाई कर, तेरे सिवा कोई बेहतर से बेहतर अख्लाक की राह नहीं दिखा सकता और बुरे अख़लाक़ को मुझ से फेर दे और उनको कोई नहीं फेर सकता, लेकिन तू।

ईमान से बढ़कर इस्लाम में कोई चीज़ नहीं लेकिन यह भी अख़लाक़ ही से पूरा होता है। फ़रमायाः—

"मुसलमानों में कामिल ईमान उसका है जिसका अख़लाक़ सब से अच्छा है।"

इससे मालूम होता है कि इस्लाम में ईमान के कमाल का पैमाना जिस चीज़ को ठहराया गया है वह हुस्ने अख़लाक़ है कि यही वह फल है जिस से ईमान के पेड़ की पहचान होती है।

इस्लाम में नमाज़ और रोज़ा की जो अहम्मियत है वह ज़ाहिर है लेकिन अख़लाक़ हसनः को भी इन की क़ाइम मुक़ामी का शर्फ भी कभी हासिल हो जाता है इरशाद हुआ, "इन्सान हुस्ने अख़लाक़ से वह दर्जा पा सकता है जो दिन भर रोज़ा रखने और रात भर इबादत करने से हासिल होता है।"

इस से ज़ाहिर होता है कि नफ़िल नमाज़ों में रात भर जागने और नफ़िल रोज़ों में दिन भर की भूख—प्या से जो दर्जा हासिल हो सकता है वही दर्जा अच्छे अख़लाक़ से भी हासिल हो सकता है।

इस्लाम में अख़लाक़ ही व पैमाना है जिस से इन्सानों में दर्जा और रुतबः का फ़र्क ज़ाहिर होता है। फ़रमाया, "तुम में सब से अच्छा वह है जिसके अख़लाक़ सब से अच्छे हों।" एक और हदीस में है, "(क़ियामत की) तराज़ू में हुस्ने अख़लाक से ज़ियादा भारी कोई चीज़ न होगी कि हुस्ने अख़लाक़ वाला अपने हुस्ने ख़ुल्क़ से हमेशा के रोज़ादार और नमाज़ी का दर्जा हासिल कर सकता है।" इस हदीस ने पूरी तरह साफ कर दिया कि इस्लाम की तराज़ू में हुस्ने अख़लाक़ से ज़ियादा भारी कोई चीज़ नहीं। एक ओर हदीस में है "लोगों को कुदरते इलाही की तरफ से जो चीज़ें दी गई हैं उन में सबसे बेहतर अच्छे अख़लाक़ हैं।" एक ओर हदीस में आँहज़रत सल्ल० ने फ़रमाया, "अल्लाह के बनदों में अल्लाह का सब से प्यारा वह है जिस के अख़लाक़ अच्छे हों।"

इस से मालूम हुआ कि हुस्ने ख़ुल्क़ ख़ुदा की मुहब्बत का ज़रियः और दरअसल रसूल की मुहब्बत का भी यही ज़रियः है। फ़रमाया, "तुममें मेरा सबसे प्यारा और बैठक में मुझसे सब से नज़दीक वह है जो तुम में ख़ुश ख़ुल्क़ हैं और मुझे नापसन्द और क़ियामत में मुझसे दूर वह होंगे जो तुम में बदअख़लाक़ हैं।

आँहज़रत सल्ल० के मुबारक ज़माने में दो सहाबी बीवियाँ थीं, एक रात भर नमाज़ पढ़ती, दिन को रोज़ा रखती ओर सदक़ः देतीं मगर अपनी ज़ुबान दराज़ी से पड़ोसियों का दम नाक में किये रखती थीं, दूसरी बीवी सिर्फ फ़र्ज़ नमाज़ पढ़तीं और ग़रीबों को चन्द कपड़े बाँट देती मगर किसी को तकलीफ़ न देतीं। आप सल्ल० से इन दोनों की निस्बत पूछा गया तो आप ने पहली की निस्बत फ़रमाया कि, "उस में कोई नेकी नहीं, वह अपनी बदख़ुल्की की सज़ा भुगतेगी" और दूसरी की निस्बत फ़रमाया कि, "वह जन्नती होगी।"।

हज़रत बरआ बिन आज़िब रज़ी० कहते हैं कि एक बदवी ने आँहज़रत सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ की कि मुझे वह काम सिखाइये जो मुझे जन्नत को ले जाये। फ़रमायां, "इन्सान को गुलामी से आजाद कर, इन्सान की गर्दन को कर्ज़ के बन्धन से छुड़ा और ज़ालिम रिश्तेदार का हाथ पकड़, अगर तू यह न कर सके तो भूखे को खिला, प्यासे को पिला और नेकी बता और बुराई से रोक अगर यह भी न कर सके तो भलाई के सिवा अपनी ज़ुबान रोक ले।' ग़ोर कीजिये कि यह हदीस अख़लाक़ी अज़मत को कहाँ तक बढ़ा रही है।

ईमान के औसाफ़ व लवाज़िम

इनके अलावा कसरत से ऐसी हदीसें हैं जिनमें आप सल्ल० ने यह इरशाद फ़रमाया है कि फुलाँ फुलाँ औसाफ़ व अख़लाक़ ईमान के लवाज़िम व ख़ुसूसियात हैं, जिस क़दर इनमें ज़ियादती और कमी होगी गोया उसी कदर इन में ज़ियादती और कमी होगी गोया उसी क़दर इस ईमान की मंशा में ज़ियादती व कमी होगी, यानी हमारे यह ज़ाहिरी अख़लाक़ हमारी अन्दुरूनी ईमानी कैफ़ियत का पेमाना है। हमारे दिल के अन्दर का ईमान हमारे घर चिराग़ ज़ेर दामन है जिस की चमक दमक ओर रौशनी का अन्दाज़ा उसकी बाहर निकलने वाली किरणों से किया जायेगा। आपने फ़रमायाः—

१. ईमान की सत्तर (७०) से ऊपर शाख़ें हैं जिन में से एक हया (लज्जा) है।

२. ईमान की बहुत सी शाख़ें हैं जिन में सबसे बढ़कर तौहीद का इक़रार

है और सबसे कम दर्जा यह है कि तुम रास्ता से किसी तकलीफ की चीज़ को हटा दो (ताकि तुम्हारे दूसरे भाई को तकलीफ़ न हो।)

३. जिसमें तीन बातें हों उस ने ईमान का मज़ा पाया

(१) जिसको ख़ुदा और उसका रसूल सबसे प्यारा हो,

(२) जो दूसरे को सिर्फ़ ख़ुदा के लिये प्यार करे और

(३) जिसको ईमान के बाद फिर कुफ़्र में लिप्त हो जाने से उतना ही दुख हो जितना आग में पड़ने से।

४. जिसमें यह तीन बातें हों उस ने ईमान का मज़ा पाया,

(१) हक़ बात के सामने झगड़ने से बाज़ रहना।

(२) मुज़ाहमत (हस्तक्षेप) के बावजूद झूठ न बोलना और

(३) यक़ीन करना कि जो कुछ पेश आया वह हट नहीं सकता था।

५. तीन बातें ईमान का हिस्सा (अंश) है, (१) ग़रीबी में भी ख़ुदा की राह में देना (२) दुनिया में अमल व सलामती फैलाना और (३) ख़ुद अपने नफ़्स (आत्मा) के मुक़ाबले में भी इन्साफ़ करना।

६. तुम में से कोई उस समय तक पूरा मोमिन नहीं हो सकता है जब तक अपने भाई के लिये वही पसन्द न करे जो अपने लिये करता है।

७. मुसलमान वह है जिस के हाथ और जुबान से मुसलमान सलामत रहें ओर मोमिन वह है जिस पर लोग इतना भरोसा करें कि अपनी जान माल उसकी ज़मानत में दे दें।

८. एक व्यक्ति आकर पूछता है कि या रसूलल्लाह (सल्ल०)! कौन सा इस्लाम सबसे बेहतर है? फ़रमाया (भूखो को) खाना लिखलाना, और जाने अनजाने हर एक को सलामती की दुआ देना (सलाम करना)।

९. एक व्यक्ति पूछता है कि ऐ अल्लाह के रसूल ! इस्लाम क्या है? फ़रमाया अच्छी बात बोलना और खाना खिलाना फिर पूछा ईमान क्या है? फ़रमाया, सब्र करना और अख़लाक़ी जवाँमर्दी दिखाना।

१०. मोमिन वह है जो दूसरों से उल्फ़त करता है और जो न दूसरे से उल्फ़त करता और न कोई उस से उल्फ़त करता है उस में कोई भलाई नहीं।

११. मोमिन न तो किसी पर तअन करता है न किसी को बददुआ देता है और न गाली देता है और न बदज़ुबान होता है।

१२. हर मुसलमान दूसरे मुसलमान का भाई है न उस पर वह जुल्म करे और न उस को गाली दे। जो अपने किसी भाई की मदद में होगा ख़ुदा उस की मदद में होगा। जो किसी मुसलमान की किसी मुसीबत को दूर करेगा तो ख़ुदा उसकी मुसीबत दूर फ़रमायेगा।

१३. मोमिन वह है जिस को लोग अमीन समझें, मुस्लिम वह है जिसकी ज़ुबान और हाथ से लोग सलामत रहें, मुहाजिर वह है जिसने बदी को छोड़ दिया है। उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है कोई तब तक जन्नत में नहीं जा सकता जब तक उसका पड़ोसी उसके गुस्सा से महफ़ूज़ न रहा हो।

१४. जो ईमान वाला है उसको चाहिए कि अपने मेहमान की इज़्ज़त करे।

१५. बेईमान (मुनाफ़िक़) की पहचान तीन है (१) बोले तो झूठ बोले। (२) वादा करे तो ख़िलाफ़ करे और (३) उसको अमानत सुपुर्द की जाये तो ख़ियानत करे।

अच्छे अख़लाक़ अल्लाह की सिफ़ात का सायः हैं

लेकिन इस्लाम ने अच्छे अख़लाक़ का इस से भी एक और उच्च विचार प्रस्तुत किया है ओर वह यह है कि अच्छे अख़लाक़ दरअसल अल्लाह की सिफ़ात का सायः है। हदीस में है कि आप सल्ल० ने फरमाया कि ख़ुश ख़ुल्की अल्लाह का ख़ुल्क़े अज़ीम है। हम उन्हीं अख़लाक़ को अच्छा कहते हैं जो अल्लाह की सिफ़ात की छाया हैं और उन्हीं को बुरा कहते हैं जो ख़ुदा की सिफ़ात के विपरीत हैं। अलबत्ता यह ज़ाहिर है कि ख़ुदा की बाज़ सिफ़ात ऐसी भी हैं जो उसी के साथ मख़सूस हैं और दूसरे में उनको सोचा भी नहीं जा सकता जैसे उसका एक (वाहिद) होना, ख़ालिक़ होना और कुछ ऐसी जलाल से भरी सिफ़तें हैं तो सिर्फ़ ख़ुदा ही को ज़ेबा हैं जैसे उसकी किबरियाई और बड़ाई आदि। इस क़िस्म की सिफ़ात का बन्दः में क़माल यह है कि उन के विपरीत गुण उस में पैदा हों। ख़ुदा की किबरियाई के मुकाबले में बनदा में खाकसारी (विनम्रता) हो और ख़ुदा की बुलन्दी के मुक़ाबले में बन्दः में आजिज़ी और पस्ती हो। अलग़र्ज इस्लाम ने इनसान की रूहानी तकमील का ज़रियः अख़लाक़ को इसी लिये क़रार दिया है कि वह सिफ़ाते इलाही के अनवार के कसब व फ़ैज़ का सबब है। हम जिस हद तक इस कमाई में तरक़्क़ी करेंगे हमारी रूहानी तरक़्क़ी का सिलसिला जारी रहेगा। और यही हमारी ज़िन्दगी की रूहानी (आध्यात्मिक) सैर की आख़िरी मंज़िल है। (जारी) प्रस्तुति : एम० हसन अन्सारी

अब्दुस्सलाम किंदवाई नदवी

मुत्तक़ी ३२६–३३३ हि०– मुस्तकफ़ी ३३३–३३४ हि०

रांज़ी के बाद मुत्तक़ी और उसके बाद मुस्तकफ़ी बादशाह हुआ लेकिन दोनों थोड़े–थोड़े दिनों के बाद तख़्त से उतार दिए गये। अब ख़िलाफत का नाम ही नाम बाक़ी था अनयथा असल में हुकूमत पूरे तौर से बनी बूयः के हाथ में थी। यह जिसे चाहाते तख़्त पर बैठा देते और जब चाहते उतार देते। ख़लीफ़ा की हैसियत एक कठपुतली से अधिक न थी अब्बासियों की कमज़ोरी से मुल्क में जगह जगह नई हुकूमतें क़ाइम हो गई थीं। उस समय अगली पिछली ग्यारह बादशाहतैं मौजूद थीं।

(१) उन्दुलुस में बनी उमय्या की सलतनत काइम थी अब्दुर्रहमान अल नासिर बादशाह था।

(२) अफरीका में इदरीसी और ग़लबी हुकूमतों की जगह फ़ातिमी सलतनत काइम हो गई थी। यह लोग अपने को ख़लीफ़ा कहते थे। उस समय इसमाईल मंसूरी उनका ख़लीफ़ा था।

(३) मिस्र में उख़शीदी हुकूमत कर रहे थे जो नाम मात्र अब्बासियों को मानते थे। अनूजोर बिन मुहम्मद उख़शीद उस खान्दान का हाकिम था।

(४) हलब में हमादानियों की बादशाहत थी। उसका अमीर सैफ़ुद्दौला था। यहाँ भी अब्बासियों के नाम का ख़ुतबा पढ़ा जाता था।

(५) फ़ुरातिया द्वीप में नासिर हमदानी बादशाह था। यह भी अब्बासियों का ख़ुतबा पढ़ता था।

(६) इराक़ बनी बूयः के कब्ज़े में था। यहाँ पहले अब्बासी खलीफ़ा था फिर उसके साथ मआज़ुद्दौला का नाम लिया जाता था।

(७) उमान, बहरैन, यमामा और बसरा में क़रामता का जोर था जो फातिमी इमाम का ख़ुतबा पढ़ते थे।

(८) फ़ारस और हवाज़ में अब्बासी ख़लीफ़ा और उसके बाद अली बिन बूयः इमामुद्दौला का वर्णन होता था जो अमीरुल उमरा भी कहलाता था।

(९) बिलाल व जबल और 'रे' में ख़लीफ़ा और रुकनुद्दीन हसन बिन बूयः का नाम लिया जाता था।

(१०) जुरजान और तबरिस्तान में सामानियों और दश्मगीर के झगड़े थे।

(११) ख़ुशसान और मावराउन्नहर जिसकी राजधनी बुरवारा थी, सामानियों के आधीन था। यहाँ अब्बासियों का ख़ुतबा पढ़ा जाता था।

यह तमाम बड़ी–बड़ी सलतनतें जो पहले एक ही बादशाह के आधीन थीं अब अलग अलग हो गई थीं और आपस ही में लड़ती भिड़ती रहती थीं। यहाँ यह बात याद रखने की है कि वह अरब जो कभी स्याह व सफेदी के मालिक थे, अब्बासियों की ग़लती से अब हुकूमत से बिल्कुल अलग हो चुके थे और हमदानियों को छोड़ कर कहीं भी उन की बादशाहत न थी। हमदानियों की भी हालत यह थी कि वह बनी बूयः के मातहत थे।

मुतीअ़ ३३४–३६३ हि०

मुस्तकफ़ी के बाद उसका चचाज़ाद भाई मुतीअ़ तख़्त पर बैठा। सलतनत पहले ही बनी बूयः के कब्जे में थी। अब मंत्री का पद खत्म हो गया और खलीफ़ा के पास केवल मीर मुंशी रहने लगा। उधर ताकत बढ़ते ही बनी बूयः आपस में झगड़ने लगे जिससे और भी हालत खराब हो गई।

यह अजीब परेशानी का ज़माना था। जगह जगह छोटी–छोटी हुकूमतें क़ाइम थीं और आपस ही में लड़ रही थीं। ऊपर ग्यारह हुकूमतों का ज़िक्र पढ़ चुके हैं। मुतीअ़ के ज़माने में वासित और बसरा के बीच इब्ने शाहीन ने एक और हुकूमत काइम कर ली (३२९–४०८)। मिस्र में काफूर अख़शीदी का देहान्त हो गया। फ़ातिमी बहुत दिनों से ताक में थे। मआज़ुद्दीन ने तुरंत अपने सेनापति जौहर को रवाना किया, जिस ने वहाँ पहुंचकर फ़ातिमियों का झण्डा गाड़ दिया। इस अफरातफरी से मुसलमानों को सख़्त नुक्सान पहुंचा। दुश्मनों के दिल से उन का रोब जाता रहा और उनकी हवा उखड़ गई। रूमी जिनके चन्द हजार बद्दुओं ने परख़चे उड़ा दिये थे, जिन्हें अमवीयों ने पग

पग पर पराजित किया था, कैसर को रूमी कुत्ता कह डांटता था, जिन की इज़्ज़त यह थी कि एक लौंडी की फर्याद पर मुतअस्सिम फौजें लेकर बढ़ता था और दमके दम में अमूरिया को तहस नहस कर डालता था और शहरों की खाक उड़ा देता था और आज आपस के झगड़ों के कारण वही रूमी इतने शेर हो गए कि दिन धाड़े मुसलमान मुल्कों में घुस आते और खून की नदियां बहा देते। औरतों की परेशानी, बच्चों की बिलबिलाहट बूढ़ों की चीख और बीमारों की आह से आसमान हिल जाता धरती कांप उठती लेकिन फरियाद को कौन पहचानता, मुसलमान तो खुद आपस में ही उलझे रहे थे। उन्हें इसका ख्याल कैसे होता? मजबूर होकर उलमा ने खुद मुकाबले का सामान किया लेकिन बनीबूयः ने आगे न बढ़ने दिया और दर्मियान ही में उनका ख़ात्मा कर दिया।

ताइअ़–३६३–३८१ क़ादिर ३८१–४२२

मुतीअ़ के बाद ताइअ़ और फिर उस के बाद क़ादिर तख़्त पर बैठा। उन के ज़माने में दशा और खराब हो गई। क़ादिर खुद स्वभाव का अच्छा था लेकिन सलतनत की जो दशा हो चुकी थी उस का संभालना उस के बस से बाहर था।

यमन की ज़ियादिया हुकूमत का ज़िक्र आ चुका है। ४१२ हिजरी में बनी उमय्या का गुलाम मुइद नज्जाह ने बादशाहत पर कब्ज़ा कर लिया। यह सलतनत ५५४ हि० तक क़ाइम रही। इसके बाद महदी हुकूमत क़ाइम हुई। मूसल में हमदानियों के बाद अक़ीली हुकूमत क़ाइम हुई (३८६–३८६ हि०)

सन् ३८० हि० में अबू अली हसन बिन मरवान ने एक नई हुकूमत क़ाइम की जो दौलत मरवानिया के नाम से ४८६ हि० तक खन्दाने मरवास हुकूमत करता रहा। पूरब की तरफ अफगानिस्तान में ग़जनवी हुकूमत काइम हुई जिसमें सुलतान महमूद ग़ज़नवी बहुत प्रसिद्ध है।

क़ाइम ४२२–४६७ हि०

बाप के मरने के बाद क़ाइम बादशाह हुआ। अब्बासियों की शक्ति पहले ही समाप्त हो चुकी थी। अब बनी बूयः भी आपस में लड़–लड़ कर तबाह हो चुके थे। उन में कोई कूवत बाकी न थी। पूरे मुल्क का क्या ज़िक्र है, बग़दाद का प्रबन्ध भी उन से न संभलता था और यहाँ दिन धाड़े लूट मार होने लगी। बग़दाद में शिया उमरा ने यह देखकर यहां फ़ातिमीयों की हुकूमत क़ाइम कर देने की कोशिश की मगर सलजूक़ियों का जोर बढ़ चुका था और बग़दाद से उन का सम्बन्ध स्थापित हो चुका था। इसलिए क़ाइम ने सलजूकी सुलतान तुग़रलबक से सहायता मांगी। वह तो इस के लिए तैयार ही था। तुरंत रवाना हो गया। बनीबूयः का आखिरी बादशाह मलिक रहीम गिरिफ्तार हुआ और दैलमियों की जगह सलजूक़ी की हुकूमत काइम हो गई। तुगरल ने अपनी भतीजी अरसलान खातून ख़लीफ़ा के निकाह में दी और ख़ुदखलीफ़ा के बेटी के साथ अपना निकाह किया।

क़ाईम के ज़माने में रूमियों ने फिर मुकाबले की हिम्मत की लेकिन अब सलजूक़ियों की मज़बूत हुकूमत क़ाइम थी। सुलतान अल्प अरसलान तेजी से आगे बढ़ा। ख़लात के निकट मुकाबला हुआ जिसमें रूमियों की भारी पराजय हुई। रूमी बादशाह गिरिफ्तार हुआ और पन्द्रह लाख दीनार देकर छूटा। स० ३५८ हि० में अनताकिया रूमियों के हाथ से निकल कर फिर मुसलमानों के कब्ज़े में आ गया।

अनुवाद : हबीबुल्लाह आज़मी

देश का हाल

वक़्ते आफ़िस दस बजे है
ग्यारा पर आते है सब
घर के झगड़े बैठ कर
आफ़िस में सुलझते हैं सब
फून कर कर दूर से
बच्चों को समझाते हैं सब
फून रख कर हाथ से फिर
सर को सहलाते हैं सब
सज्जनों लो देख लो
यह देश का अब हाल है
झूट है हर ओर छाया
सत्य का यां काल है
है यहां तअलीमे अअला
बस अमीरों के लिए
हो ज़िहन जितना भी अअला
तअलीमे अअला के लिये
गर डोनेशन है नहीं
उनके इदारे के लिए
मुन्तखब होगे नहीं
तअलीमे अअला के लिए
सज्जनों लो देख लो
यह देश का अब हाल है
झूठ है हर ओर छाया
सत्य का यां काल है
मेडिकल तअलीम की यां
लाख बाइस फीस है
इंजीनियर बनने की भी तो
भारी भरकम फीस है
है इसी अनुपात से फिर
डाक्टर की फीस है
और मुहन्दिस लेता कम से कम
हजार इक्कीस है
सज्जनो लो देख लो
यह देश का अब हाल है
झूठ है हर ओर छाया
सत्य का यां काल है

गुरूजनों से दो दो बातें

अबू मर्गूब

आम तौर से सभी सरकारी स्कूल, कालेज मई में अपना तअ़लीमी साल (शैक्षिक वर्ष) पूरा करते हैं। गर्मियों की छुट्टी रहती है जुलाई में फिर पढ़ाई शुरूअ़ करते हैं। जिन्होंने अप्रैल मई में होने वाले इम्तिहानों में सफलता पाई वह अब अगला दर्जा (कक्षा) पाएंगे। कितनों का तो स्कूल भी बदल जाएगा। कोई प्राइमरी स्कूल से मिडिल स्कूल जाएगा, कोई मिडिल से हाईस्कूल और कोई हाईस्कूल से इन्टर कालेज और कितने इन्टर से डिग्री कालेज और यूनीवर्सिटी में एडमीशन लेंगे। नई किताबें, नया दर्जा नया स्कूल, तलबा (विद्यार्थियों) में एक नई लगन नई उमंग और नया जोश है, हर तरफ़ खुशी का माहौल (वातावरण) है। एडमीशन हो रहे हैं छोटे बच्चों को किताबों और कापियों की सिलिपैं मिल रही हैं स्टेशनरीयों की दुकानों और कोर्स की किताबों की दुकानों पर मेला लगा है।

कितने स्कूल और कालेज एडमीशन टेस्ट ले रहे हैं ताकि उनके स्कूल या कालेज में अच्छे से अच्छे लड़के पढ़ें और बोर्ड या यूनीवर्सिटी के इक्ज़ाम में डिवीज़न लाकर उनके इदारे का नाम रौशन करें। कितने स्कूलों ने शुहरत (ख्याति) हासिल करके अपने यहाँ एडमीशन पर डोनेशन का एअलान कर रखा है, दौलत वाले लोग अपने बच्चों को वहाँ दाख़िला दिला रहे हैं।

अब क़ौम में ऐसे दानिश्वर (बुद्धिजीवी) नहीं रहे जो एडमीशन टेस्ट और डोनेशन के नतीजों पर ध्यान दे सकें। आख़िर सालाना इम्तिहान पास कर लेने के बअ़द एडमीशन टेस्ट क्यों? जो तलबा एडमीशन टेस्ट में नाकाम हुए टेस्ट लेने वाले इदारे ने उन के विषय में क्या सोचा है? पढ़ाई छोड़ दें? फिर क्या करें? इसी तरह डोनेशन न दे सकने वाले तलबा के बारे में डोनेशन लेने वाले इदारों ने क्या सोचा है? क्या वह केवल धनवानों के लड़कों ही की सेवा के लिये हैं? फिर ग़रीबों के बच्चों के बारे में उन्होंने क्या फ़ैसला लिया है? क्या उन्होंने इधर नहीं ध्यान दिया कि इस रवैये से ग़रीब नवजवानों में उनके लिये क्या जगह बनेगी?

भला हो बेरोज़गारी का कि कितने ग्रेजवेट और पोस्ट ग्रेजवेटों को कहीं नौकरी न मिल पाई तो उन्होंने स्कूल, कालेज खोल लिये और इक्ज़ाम टेस्ट में नाकाम होने वालों, बल्कि सालाना इम्तिहान में फेल होने वाले तलबा का इस्तिक़बाल (स्वागत) किया, दाख़िला भी दिया और आने वाले सालाना इम्तिहान में पास भी करा दिया।

कुछ इंग्लिश मीडियम स्कूलों ने अपना तअ़लीमी साल (शैक्षिक वर्ष) अप्रैल से मार्च रखा है जबकि वह समर वकेशन के नाम से अपना इदारा जून में बन्द रखते हैं, ऐसी सूरत में अगर बच्चा इंग्लिश मीडियम से सरकारी स्कूल में जाना चाहे तो उसको अप्रैल मई जून तीन महीने बेकार रहना पड़ेगा, और बचपन की उम्र में तीन तीन महीनों तक उनको मुअ़त्तल (निलम्बित) रखना उनको भारी नुक्सान पहुंचाना है। अतः ऐसे स्कूलों को चाहिये कि वह अपना तअ़लीमी साल आम पब्लिक तथा सरकारी स्कूलों के अनुसार करें। लेकिन वह मेरी बात कहाँ सुन सकते हैं, उनकी बला से किसी को हानि पहुंचे।

इसी प्रकार प्राइवेट दीनी मकातिब का साल अ़रबी महीने शव्वाल से शअ़बान तक रहता है, वहाँ भी बच्चा अगर क़ुर्आन शरीफ़, उर्दू, और ज़रूरी दीनियात वाला कोर्स पूरा करके सरकारी स्कूल की तअ़लीम अपनाना चाहे तो कई महीने बेकार रहना पड़ता है। अतः चाहिये कि दीनियात वाले मकातिब भी अपना तअ़लीमी साल जुलाई ता मई रखें। मैं समझता हूं कि इसमें वह कोई दुश्वारी (कठिनाई) न महसूस करेंगे।

कुछ इदारों ने नियम बना रखा है कि वह फेलियर तलबा को अपने मदरसे में पढ़ाने से महरूम (वंचित) कर देते हैं। यह नियम भी ठीक नहीं लगता, यह ज़ाब्ता केवल मदरसे से महरूम नहीं करेगा बल्कि तअ़लीम ही से महरूम कर देगा और यह बहुत ही ग़लत है।

जो बच्चा, खाना, पीना, पाख़ना, पेशाब, कपड़े पहनना, बातचीत करना आदि में स्वाभाविक (नारमल) है, वह पढ़ भी सकता है। उसकी नाकामी (असफलता) का कारण मअ़लूम करके कारण को दूर करना चाहिये और उसको

पढ़ा के दिखाना चाहिये, लेकिन इस काम के लिये ज़रूरी है कि उस्ताद (गुरू) माहिर और शफ़ीक़ (कुशल तथा स्नेही) हो और घर वाले भी सहयोग दें। कभी बच्चा बे बाप का होता है या बे माँ का होता है या माँ बाप दोनों से महरूम होता है ऐसी सूरत में उस्ताद को अपने नफ़्स को मार कर बच्चे पर ध्यान देना चाहिये। हो सकता है बच्चा अपनी ना समझी के सबब आपकी मुख़ालफत करे, बल्कि आपको दुख पहुंचाए लेकिन आप अल्लाह वास्ते उसके पीछे पड़ जाएं और उसकी ज़रूरी तअ़लीम व तर्बियत कर ही के दम लें।

जो बच्चा शरीर है वह ज़हीन है, उसका ज़ेहन फेरना उस्ताद का काम है। आज कल ट्रेनिंग का बड़ा ज़ोर है। ट्रेनिंग के बिना अब तो सरकारी स्कूलों में टीचिंग का काम मिलता ही नहीं, दीनी मदरसों में साल दो साल ट्रेनिंग कोर्स पढ़ाना आसान नहीं लेकिन तदरीस व तर्बियत का किसी हद तक वहाँ भी इन्तिज़ाम है। ज़रा ध्यान दें अगर ट्रेनिंग कोर्स में शरीर (उपद्रवी) तथा कुन्द जेहन (मन्द बुद्धि) वाले बच्चों की तअ़लीम का इन्तिज़ाम (व्यवस्था) नहीं है तो ट्रेनिंग नाक़िस है, अधूरी है।

बच्चों की शरारत दो तरह की होती है एक शरारत बेवकूफ़ी वाली होती है, जैसे बे सबब साथी को मार देना, बे मौक़ा हंसना, किसी की अच्छी चीज़ देखकर अपने क़ब्ज़े में कर लेना वग़ैरह। दूसरी शरारत ज़िहानत की होती है जैसे किसी को धोखा दे देना, उस्ताद की गिरिफ़्त से अपने को बचा लेना, अपनी ग़लती को तदबीरों से दूसरे के सर मढ़ देना वग़ैरह।

कोशिश दोनों तरह के बच्चों के ज़ेहन खोलने की होना चाहिये, बेवकूफ़ी की शरारतें करने वाले बच्चे का ज़ेहन तदबीरों से तरक़्क़ी कर सकता है जबकि ज़िहानत की शरारत करने वाले के ज़ेहन को तदबीरों से सिर्फ़ इल्म की जानिब मोड़ना है।

गुरू जन चाहे सरकारी स्कूल के हों या धार्मिक पाठशालाओं तथा दीनी मक्तबों और मदरसों के सबका एक ही काम है अर्थात कौम के बच्चों को मुहज़्ज़ब बनाना, केवल लिखना, पढ़ना सिखा देना भी बड़ा काम है लेकिन तअ़लीम का मक़्सद (उद्देश्य) इसके आगे है। बच्चा अच्छे बुरे में तमीज़ (अंतर) कर सके और उसका मिज़ाज इस तरह का हो जाए कि वह बुराई से नफ़रत (घृणा) करे और भलाई से उसको उन्स (प्रेम) हो जाए। मुआशरे में मिल जुल कर रहने के उसूलों (नियमों) से वाकिफ़ भी हो जाए और उन को अपनाने वाला भी बन जाए। अख़लाक़ अच्छे हो जाएं। अपने दीन व धर्म की क़द्र करने वाला भी हो और उन पर चलने वाला भी। हलाल रोज़ी की फ़िक्र करने वाला भी हो और हराम से बचाने वाला भी।

गुरूजनों का कर्तव्य है कि जहाँ स्कूल का स्लेबस पढ़ाएं वहीं इन उपरोक्त बातों के लिये भी कोशिश करें ईश्वर चाहेगा तो शत प्रतिशत सफ़लता मिलेगी।

मौका और मूड देख कर कभी तो वर्जिश और सिहत की बात करें कभी जैसी करनी वैसी भरनी पर वाकिआ़त सुना कर पापों से रोकें। कभी मां बाप की सेवा, भाई बहनों के साथ अच्छा सुझाव बड़ों का आदर, अदब की बातें समझाएं किताबों में जो सीख की बातें आई हों उन पर अ़मल करने की बात करें। परन्तु ऐसा न हो कि आप का पीरियड पंडित का उपदेश और मौलाना का वाज़ हो जाए, यह काम कभी और मौके मौके से हो। आप विद्यार्थी के धर्म का लिहाज करते हुए कभी कभी ईश प्रेम ईश्वर से डरने की बातें भी कर लिया करें। मेरे प्रेप्रेट्री के उस्ताद मुंशी हर परसाद ने एक दिन मुझ से कहा तुम नमाज नहीं पढ़ते हो? मैं बहुत झेंपा और कहा मुंशी जी मुझे नमाज पढ़ना नहीं आती है। उन्होंने मुझ से बड़े एक विद्यार्थी को बुलाकर मुझे सिखाने का आदेश दिया और फिर मुझे नमाज पढ़ने का आदेश देते रहे।

●●●

(पृष्ठ २८ का शेष)

सभी उसके साथ मिलकर अपनी इस्लाह भी कर सकते हैं और दूसरे भाइयों को भी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के लाए हुए दीन की ख़िदमत की दअ़वत दे सकते हैं।

मेरे आका ने उम्मत को हर मौक़े पर अल्लाह से जोड़ा है खाना खाओ तो अल्लाह को याद करो पानी पियो तो अल्लाह की हम्द करो सोओ और सोकर उठो तो अल्लाह को याद करो घर से निकलो और घर आओ तो अल्लाह को याद करो मस्जिद जाओ और वहाँ से आओ तो अल्लाह को याद करो मुसीबत पड़े तो अल्लाह को याद करो मेरे आक़ा ने जितनी दुआ़ए सिखाई हैं उन सबसे पता चलता है कि मेरे आका का मन्शा है कि मेरा हर उम्मती अल्लाह से जुड़े और अल्लाह का हुक्म है कि मेरा हर बन्दा मेरे हबीब की इताअ़त के रास्ते मेरी इताअ़त कर के मेरा बने।

उम्मत के मसाइल का हल

फ़र्ज़े मन्सबी की अदाएगी में है

मौ० मुहम्मद राबे हसनी

मुसलमानों को अल्लाह तआ़ला ने उम्मते वसत (सन्तुलित तथा श्रेष्ठ समुदाय) बनाया है यह बुलन्द मकाम रखने वाली है और दूसरों की निगराँ (नियंत्रक) है। अतः इसको अअ़ला किरदार (उत्तम आंचरण) और बुलन्द मिअ़यार (श्रेष्ठता) का सुबत देना होता है और दूसरों की निगराँ होने की बिना पर दूसरी उम्मतों (समुदायों) पर यह नज़र रखना होता है कि राहे हक़ और अअ़ला किरदार को इख़्तियार करने में उनका क्या रवय्या है, कुर्आन मजीद में है:

और इसी तरह हमने तुम को एक मुअ़तदिल उम्मत (सुंतुलि समुदाय) बनाया है ताकि तुम लोगों के मुक़ाबले में गवाह हो और तुम्हारे लिये रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) गवाह हों। (२:१४३)

इसी के साथ–साथ कुर्आने मजीद में यह भी बताया गया है कि मुसलमानो तुम बेहतरीन उम्मत बनाकर इन्सानों के लिये भेजे गये हो (तुम्हारा काम यह है कि) तुम उनको अच्छे कामों का हुक्म देते हो और बुरे कामों से रोकते हो (३:११०) इस तरह मुसलमानों पर तीन जिम्मेदारियाँ डाली गई है। एक तो मिअ़यारी और अअ़ला किरदार वाली उम्मत बनने की, दूसरे, दूसरे समुदायों को अअ़ला किरदार (उत्तम आचरण) पैदा करने की तलक़ीन (उपदेश) तीसरे, उनके कबूले हक़ और तर्के बातिल के अ़मल पर नज़र रखने की। इस उम्मत के साथ अल्लाह तआ़ला का मुआ़मला इन ही ज़िम्मेदारियों को पूरा करने न करने के लिहाज़ से होता है। मुसलगानों का माज़ी और हाल (भूत तथा वर्तमान) भी इस पर गवाही देता है, वह अपनी इनही ज़िम्मेदारियों को निभाने और न निभाने के एअ़तिबार से इज़्ज़त और रह़मत के रास्तों से गुज़रते हैं। उन्होंने जब अपने मिअ़यार (स्तर) को सह़ीह रखने की और उसके मुंताबिक़ अपनी अ़मली ज़िन्दगी बनाने की कोशिश की तो उनको बुलंदी और बरतरी (उच्चता और श्रेष्ठता) हासिल हुई और जब उन्होंने अपनी हालत संवारने और अपने अअ़ला किरदार को जारी रखने में कोताही की तो उनको धक्के लगे और ज़िल्लत (हीनता) से गुज़रना पड़ा। मुसलमानों पर जो सख़्त हालात और ज़िल्लत वाले वाक़िआ़त उनकी तारीख़ में पेश आते रहे हैं वह कभी तो उनकी कोताहियों की सूरत में सज़ा के तौर पर पेश आए और कभी अअ़ला मिअ़यार (उच्च स्तर) बरक़रार न रखने की सूरत में भी पेश आए। यह वाक़िआ़त जब उन की आज़माइश और इम्तिहान (परीक्षा) के तौर पर पेश आए तो इसलिये कि अल्लाह तआ़ला देखे कि अज़ीमत और हिम्मत (श्रेष्ठता तथा साहस) इनमें कहाँ तक काइम है। सख़्त हालात पेश आने की सूरत में मुसलमानों को सबसे पहले अपने अअ़माल देखने चाहिये कि उनमें वह क्या कोताहियाँ हैं जो इस तरह की सज़ा का सबब हो सकती हैं, फिर उन कोताहियों को दूर करने की कोशिश करना चाहिये ताकि अल्लाह तआ़ला की मदद और रहमत को अपने लिये वापस लाएं और अगर गौर करने पर भी कोताहियाँ नज़र न आएं तो उन सख़्त हालात को अपने रब की तरफ से इम्तिहान (परीक्षा) समझना चाहिये और यह उम्मीद रखना चाहिये कि यह इम्तिहान गुज़र जाएगा और उनके सब्र व रज़ा का यह बदला मिलेगा कि उनकी साख इज़्ज़त व कुव्वत वापस आ जाएगी। मुसल्मानों को अल्ला तआ़ला ने अपनी मशीयत व मर्ज़ी नाफ़िज़ (प्रचलित) करने के लिये कारगुजारों की हैसीयत अ़ता फरमाई है वह इस कार गुज़ारी को अगर सहीह तौर पर पूरी करते हैं तो कोई ताकत उनको शिकस्त (पराजय) नहीं दे सकती, अल्लाह तआ़ला ने कुर्आन मजीद में वअ़दा फरमाया है कि, "तुम ही सबसे सर बुलन्द होगे अगर ईमान वाले होगे" (३:१३६)

मुसलमानों की चौदह सौ साला तारीख़ में बराबर इन बातों का जुहूर होता रहा है और बअ़ज़ मरतबा उम्मत पर उन के दुशमनों को ऐसा ग़ल्बा हासिल हुआ कि यह खतरा महसूस किया जाने लगा कि अब मुसलमान इस मसकनत व ज़िल्लत (अपमान और हीनता) से निकल न सकेंगे लेकिन फिर यही हुआ वह ज़िल्लत व मसकनत से सुर्ख़रूई (सम्मान) के साथ निकले, बल्कि :

"पास्बाँ मिल गये कअ़बे को सनम ख़ाने से"

उनके दुशमन खुद झुककर ताबिअ़दार बन गये और इस्लाम के मुहाफिज़ (रक्षक) बन गये। अब तो आ़लमे इस्लाम बहुत बड़ा और वसीअ़ (विशाल) हो चुका है, और उसके इक़्तिदार व इज़्ज़त के जरायअ़ (साधन) भी बहुत वसीअ़ (विस्तृत) हो चुके हैं, कभी सिर्फ अपनी ज़िम्मेदारियों को समझने की और अपनी कोताहियों और हक से मुंह फेरने को दूर करने की है। मुसलमानों में एक तरफ शान व शौकत का इज़हार खासा बढ़ा है दूसरी तरफ ग़ैरों के अख़्लाक़ी व तहज़ीबी तरीकों से बचने की कोशिशों में भी बड़ी कमी आ गई है, उसी के साथ–साथ दुशमनों की तरफ से की जाने वाली कारवाइयों और उनकी पालीसियों और चालों को समझने और उनका तोड़ करने की तरफ तवज्जुह देने में बड़ी कोताही हो रही है और उसके लिये फाइदेमन्द जरायअ़ (साधन) इख़्तियार करने में भी कोताही है। इस वक्त तअ़लीम (शिक्षा) और ज़रायअ़ अब्लाग़ (मीडिया) कौमों की इज़्ज़त व ज़िल्लत के मुआमले में बड़ा किरदार अंजाम दे रहे हैं और दोनों के सिल्सिले में मुसलमानों में खासी बे तवज्जुही और कोताही है, मुसलमानों के मुआ़शरे में जो बुरे तौर व तरीक फैलते चले जा रहे हैं उनकी इस्लाह की फिक्र भी नहीं की जा रही है, अल्लाह तआ़ला को मुश्रिकाना ख़यालात और जाहिलीयत के कामों से सख़्त नफरत है और यह ख़यालात उसकी रहमत को बहुत दूर करने वाले हैं, फिर भी हमारा मुआ़शरा गलत रस्मों और शिर्क की कैफीयत रखने वाले अ़माल से मुतअस्सिर (प्रभावित) होता चला जा रहा है और उनको रोकने का काम बहुत ही कम है। यह हमारी अन्दर की खराबियाँ हैं और बाहर के एअ़तिबार से हम देखें तो साफ नज़र आएगा कि मुसलमानों के बदख्वाहों (बुरा चाहने वालों) की तरफ से उनको जालिम और अम्न दुशमन साबित करने के लिये जरायेअ़ अब्लाग़ (मीडिया) और और ज़रायेअ़ तअ़लीम (शिक्षा) से क्या कुछ नहीं किया जा रहा है बल्कि बहुत से वाक़िआ़त फ़र्ज़ी कराए जाते हैं ताकि उनके ज़रीयेअ़ मीडिया को उनको बदनाम करने का मैटर मिल सके, हक़ीक़त कुछ होती है और उनको ताकतवर ज़रायेअ़ से कुछ और ही बनाकर पेश किया जाता है। इस तरह इस वक़्त सारा आलम मिलकर मुसलमानों को निशाना बना रहा है, जिसके असर से गैर तो गैर खुद मुसलमान धोखे में पड़ जाते हैं।

ज़रूरत है कि हम अपनी कमजोरियों का जाइज़ा दीनी और, दुन्यावी दोनों लाइनों से लें और ग़लतियों का तदारुत करने और कोताहियों को दूर करने और उम्मते मुस्लिमः को जो चैलंज दरपेश हैं उनका अहलीयत (योग्यता) के साथ मुक़ाबला करने की मुख़लिसाना कोशिश करें। इस तरह उम्मते मुस्लिमः एक नाकाबिले शिकस्त (पराजय न होने वाली) उम्मत साबित होगी और कामयाबी और सुर्ख़रुई (सफलता तथा सम्मान) जो अल्लाह तआ़ला ने उसके लिये रखी है, वह उसको हासिल होगी।

तुम ही सर बुलन्द रहोगे अगर तुम ईमान वाले हो। (पवित्र कुर्आन)

(पृष्ठ २७ का शेष)

कायम हो ताकि उनमें से किसी के अधिकार का हनन न हो।

विचार अभिव्यक्ति की स्वतंत्रा

इंसानी फिक्र की या विचार अभिव्यक्ति की आजादी बख़्शने में इस्लाम को एक अहम और प्रभावशाली शक्ति की हैसियत हासिल है। इस्लाम तो अन्धविश्वास व व्यर्थ मान्यताओं का हमेशा से अति अधिक विरोधी रहा है। इतिहास में मानवता विचार व कर्म के जिन विभिन्न पथभ्रष्टता (ज़लालत) और बुराइयों से दोचार होती रही है, उनमें से बाज़ तो इंसानों की कल्पनाओं की पैदावार थीं और उस युग के इंसान इस हैसियत से भली भांति परिचित भी थे लेकिन गुमराही के कुछ सिलसिले ऐसे भी मौजूद थे जिनकी वंशावली (शजर–ए–नसब) इंसान अपने खुद के बनाए हुए देवताओं की मूर्खता के वंश से मिलाते हैं। तात्पर्य यह कि इस्लाम के उदय से पहले मानव विचार यूंही अन्धेरे में टामक टुंये मार रहा था। इस्लाम ने आकर उसे प्रौढ़ता और पुख्तगी प्रदान की और उन तमाम अन्धविश्वासों व खुराफात से उसे आजाद किया जो इसके आने से पहले मनगढ़ंत देवमाला, इसराईलियात और इसाईयत के अधकचे और गलत विचार के रूप में दुन्या में पाए जाते थे और उसे एक बार फिर अपने हक़ीक़ी दीन और अपने वास्तविक आक़ा के दरबार में जा खड़ा किया। (जारी)

अनुवाद– हबीबुल्लाह आज़मी

खुदा ने आज तक उस कौम की हालत नहीं बदली न हो जिस को खयाल आप अपनी हालत के बदलने का

आपके प्रश्नों के उत्तर

इदारा

प्रश्न : किसी ने कहा ख़ुदा की बड़ाई की क़सम अब मैं सनीमा नहीं देखूंगा या कहा मैं कसम खाता हूं सनीमा नहीं देखूंगा फिर उसने सनीमा देख लिया तो इसका क्या हुक्म है?

उत्तर : जिसने अल्लाह तआ़ला की क़सम खाई और कहा अल्लाह क़सम, या ख़ुदा क़सम, या खुदा की इ़ज़्ज़त की क़सम, या ख़ुदा के जलाल की क़सम, ख़ुदा की बुज़ुर्गी व बड़ाई की क़सम फुलाँ काम नहीं करूंगा तो क़सम हो गई अगर ख़ुदा का नाम नहीं लिया सिर्फ़ इतना कहा कि क़सम खाता हूं फ़ुलाँ काम नहीं करूंगा तो क़सम हो गई अब अगर इसके ख़िलाफ़ करेगा तो बड़ा गुनाह होगा क़सम का कफ़्फ़ारा देना होगा। लिहाज़ा अगर किसी ने क़सम खाई कि सनीमा नहीं देखूंगा और सनीमा देख लिया तो उस पर कफ़्फ़ारा वाजिब है। साथ ही उस पर तौबा वाजिब है इसलिये कि सनीमा देखना ख़ुद गुनाह है। वह तौबा करे और आइन्दा सनीमा न देखने का अ़ह्द करे।

प्रश्न : क्या ख़ुदा के अ़लावा किसी और की क़सम खाने से क़सम हो जाती है जैसे कोई कहे कि रसूल की क़सम अब ऐसा काम न करूंगा फिर वह काम कर ले तो उस पर कफ़्फ़ारा होगा या नहीं?

उत्तर : अल्लाह के सिवा किसी और की क़सम खाने से क़सम नहीं होती जैसे कोई कहे रसूलुल्लाह की क़सम या कअ़बे की क़सम, या अपनी आंखों की क़सम, या अपनी जवानी की क़सम, या अपने बाप की क़सम या अपने बच्चे की क़सम या तुम्हारी क़सम या अपनी क़सम फ़ुलां काम अब न करूंगा, यह सब ग़ैरुल्लाह की क़समें हैं, अगर इन क़समों के ख़िलाफ़ किया तो कफ़्फ़ारा तो न देना पड़ेगा मगर अल्लाह तआ़ला के सिवा किसी की क़सम खाना बड़ा गुनाह है। ह़दीस में इसको रोका गया है। अल्लाह तआ़ला को छोड़कर किसी की क़सम खाना एक तरह का शिर्क है, इससे बचना चाहिये, लेकिन यह हल्का शिर्क है सज़ा मिलेगी यह वह शिर्क नहीं है जो बख़्शा न जाए न इससे निकाह टूटेगा। अल्बत्ता तौबा ज़रूरी है।

प्रश्न : क्या दूसरे के क़सम दिलाने से क़सम हो जाती है?

उत्तर : नहीं किसी और के क़सम दिलाने से क़सम नहीं होती जैसे कोई कहे तुम्हे ख़ुदा की क़सम जो आगे बढ़ो, तो अब आगे बढ़ने से न गुनाह होगा, न कफ़्फ़ारा देना होगा।

प्रश्न : किसी से गिलास टूट गया, लेकिन जब उससे पूछा गया कि गिलास तुमने तोड़ा? तो उसने कहा ख़ुदा की कसम न मैंने गिलास तोड़ा न मुझसे टूटा तो इसका क्या हुक्म है।

उत्तर : जो बात हो चुकी उस पर झूटी क़सम खाना बड़ा गुनाह है, तौबा लाज़िम है मगर उस पर क़सम का कफ़्फ़ारा नहीं है।

प्रश्न : क़सम तोड़ने का कफ़्फ़ारा क्या है?

उत्तर : क़सम तोड़ने का कफ़्फ़ारा यह है कि दस ग़रीबों को जो ज़कात के ह़क़दार हैं दोनों वक़्त खाना खिलावे या उन में से हर एक को एक किलो छः सौ चालीस ग्राम गेहूं दे या दस ग़रीबों को कपड़ा दे। अगर कोई ग़रीबी के सबब इनमें से कुछ नहीं कर सकता तो लगातार तीन रोज़े रखो, अलग–अलग रोज़े रखने से कफ़्फ़ारा अदा नहीं होगा।

प्रश्न : लड़की की तलाक़ हो जाने पर लड़की अपना महर वापस ले सकती है या नहीं और माँ–बाप की तरफ से दिया हुआ जहेज़ वापस लिया जा सकता है या नहीं?

उत्तर : लड़की को महर तो हर हाल में मिलना है तलाक़ हो या न हो, रहा जहेज़ तो जो चीज़ें लड़की के शौहर को तुहफ़े के तौर पर दी गई थी उनका वापस लेना दुरुस्त नहीं अल्बत्ता जो सामान लड़की को दिया गया था वह वापस लिया जाएगा और उसकी मालिक अब लड़की है भाई बाप नहीं, हाँ लड़की अपना जहेज़ अपने बाप वग़ैरा को हिबा कर सकती है।

प्रश्न : शादी शुदा लड़की जिसके अभी कोई औलाद न थी उस का इन्तिकाल हो गया तो उसका जहेज़ उसके मैके वाले वापस ले सकते हैं या नहीं?

उत्तर : अब जहेज़ वापस न होगा लड़की का माल उसके वारिसों में तक़्सीम होगा, शौहर भी हिस्से दार है। विरासत का मस्अला सहल नहीं होता है वारिसों का ज़िक्र करके सबका हिस्सा मअ़लूम करना चाहिये और हर एक को उसका शरअ़ी हिस्सा दे देना चाहिये। शौहर, माँ, बाप भाई, बहन इनमें से जो जो जिन्दा हों उनका ज़िक्र कर के किसी मुफ़्ती से सबके हिस्से मअ़लूम करके हर एक को हिस्सा दें।

दूसरी किस्त

क्या अब इस्लाम की आवश्यकता नहीं रही?

मुहम्मद कुत्ब

इस्लाम के बारे में एक भ्रम

जो लोग इस्लाम को पहले युग की एक कथा समझते हैं और वर्तमान युग में इसकी जरूरत और लाभकारी होने से इनकार करते हैं, वह वास्तव में न तो इस्लाम के सही अर्थ से परिचित हैं और न जीवन में उसके असल मिशन से वाक़िफ है। बचपन में सामराज के एजेन्टों ने पाठ्यपुस्तकों में उन्हें जो कुछ सिखाया था, वह अब तक उसको दुहराते चले आते हैं। उनके विचार में इस्लाम के आने का उद्देश्य मूर्ति पूजा से मुक्ति दिलाना था, एक दूसरे के दुश्मन अरब क़बीलों को मिलाकर एक बिरादरी बनाना था। उन्हें शराब पीने, जुवा खेलने बेटियों की हत्या करने और इसी तरह की और बहुत सी नैतिक (अख़लाकी) बुराइयों से पाक क़रना था। चूनाँचि इस्लाम ने अरबों की खानगी जंग (गृहयुद्ध) को समाप्त करके उनकी शक्ति को बरबाद होने से बचा लिया। और फिर उस शक्ति को दुन्या में अपने सन्देश के प्रचार क़े लिए इस्तेमाल किया। मुसलमानों को इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए दूसरी कौमों से लड़ाइयां भी लड़नी पड़ीं जिस के नतीजे में इस्लामी दुन्या अपनी मौजूदा सीमाओं और हदबन्दियों के साथ संसार के मानचित्र पर प्रकट हुई। यह एक ऐतिहासिक मिशन था जो अब पूरा हो चुका है। दुन्या से मूर्ति पूजा का खात्मा हो चुका है। अरब क़बीले बड़ी–बड़ी कौमों की सूरत इख़्तियार कर चुके हैं। इसलिए अब इस्लाम की कोई ज़रूरत नहीं रही क्योंकि जहां तक जुवा खेलने और शराब पीने का सम्बन्ध है, उन पर उन्नति और सभ्यता के वर्तमान युग में कोई पाबन्दी नहीं लगाई जा सकती। तात्पर्य यह है कि इन लोगों के नज़दीक इस्लाम एक विशेष युग के लिए बहुत ही उचित जीवन शैली थी, मगर अब दुनया इतनी आगे जा चुकी है कि इसके मार्गदर्शन (रहनुमाई) की आवश्यकता बाकी नहीं रही। अतः मार्गदर्शन और रोशनी के लिए अब हमें उसकी तरफ नहीं देखना चाहिये बल्कि आधुनिक विचार धारा और जीवन दर्शन (नज़रियात व फलसफ–ए–हयात) से यह पथप्रदर्शन और रोशनी मांगनी चाहिये। इसी में हमारी भलाई और मुक्ति है।

पश्चिम के यह पूर्वी शिष्य (शागिर्द) अपने अध्यापक के रटे रटाए वाक्य दुहरा कर, अनजाने में अपनी अज्ञानता और बेखबरी का पर्दाफ़ाश कर देते हैं। यह बेचारे न इस्लाम को जानते हैं और न जिन्दगी में इसके वास्तविक उद्देश्य से परिचित हैं। अतः आगे बढ़ने से पहले आवश्यक है कि इस्लाम का अर्थ और उसकी दावत व सन्देश पर विचार किया जाए।

इस्लाम का इन्क़लाबी अर्थ

एक वाक्य में बात को बयान करना चाहें तो हम कह सकते हैं कि इस्लाम गुलामी की हर उस चीज से आजादी का नाम है जो मानवता के विकास में रुकावट डालती है और उसको नेकी और भलाई की राह से रोकती है। यह आज़ादी का पैग़ाम है। अत्याचार हिंसा और मनमानी करने वाले नेताओं से, जो इंसानो के जानोमाल, मानमर्यादा, आत्म सम्मान और आत्मविश्वास सब कुछ लूट ले जाते हैं। इस्लाम इंसान को सिखाता है कि सत्ता (इक़तिदार) का असली मालिक खुदा और केवल खुदा है। वही इंसानों का सही शासक है। सारे इंसान उसकी पैदाइशी प्रजा हैं। वही इंसानों की तक़दीर का मालिक है। उसकी मर्ज़ी के बग़ैर न कोई किसी को लाभ पहुंचा सकता है न कोई मुसीबत या कष्ट दूर कर सकता है। कियामत के दिन (महाप्रलय के दिन) अगले पिछले सारे इंसान उसके दरबार में पेश होंगे। और वह उनमें से हर एक के जीवन के क्रियाकलापों का हिसाब लेगा। इस्लाम की यह तालीम इंसान को भय, अत्याचार, बेइंसाफी और दूसरे इंसानों की लूट घसोट से छुटकारा दिलाती है।

काम वासनाओं (ख़्वाहिशेनफ़्स) से आज़ादी

यही नहीं बल्कि कदम आगे बढ़ाकर इस्लाम इंसान की इच्छाओं व काम वासना की गुलामी से भी आजाद करता है। यहां तक कि खुद जिन्दगी की इच्छा से भी उसको लालसा रहित (बेनियाज़) बना देता है। जान के मोह की यही इंसानी कमजोरी है जिस से जालिम हुकमरां हमेशा अनुचित लाभ उठाते और दूसरे इंसानों को अपना गुलाम बनाते रहे हैं। अगर इंसान में

यह कमजोरी न होती तो वह कभी किसी की गुलामी पर राज़ी न होता और न अत्याचार के देव को यूं शैतानी रक़्स (नृत्य) की अनुमति देता। जुल्म व ज़ियादती के सामने सिर झुकाने के बजाए दृढ़ता से उसका मुकाबला करने की तालीम देकर इस्लाम ने इंसानियत पर एक बहुत बड़ा उपकार किया है। कुर्आन हकीम में उपदेश है अनुवाद– "ऐ नबी कह दो कि अगर तुम्हारे बाप और तुम्हारे बेटे और तुम्हारे भाई और तुम्हारी बीवियाँ और तुम्हारे सगे, सम्बन्धी और तुम्हारे वह माल जो तुमने कमाए हैं और तुम्हारे वह कारोबार जिनके घूमिल पड़ जाने का तुमको भय है और तुम्हारे वह घर जो तुम को पसंद हैं, तुमको अल्लाह और उसके रसूल और उस की राह में जिद्दोजुहद (प्रयास) से अज़ीज़ तर (अधिक प्रिय) हैं, तो इंतिजार करो यहां तक कि अल्लाह अपना फैसला तुम्हारे सामने ले आए और अल्लाह फासिक़ (दुराचारी) लोगों की रहनुमाई (पथप्रदर्शन) नहीं किया करता।"

ज़िन्दगी की असल कुव्वत

इस्लाम अल्लाह की महब्बत को जिसमें हमदर्दी, नेकी, सच्चाई और अल्लाह की राह में अर्थात जीवन के तमाम उच्च और पवित्र उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए संघर्ष निहित है, काम वासनाओं के मुक़ाबले पर ले आता है और उन्हें उसके अधीन बनाकर रखने की तालीम देता है। अन्धी बहरी इच्छाओं के मुंह ज़ोर घोड़े को वह ख़ुदा की महब्बत से काबू में लाना सिखाता है और जिन्दगी में केवल खुदा के प्रेम को प्रभावी और असल आदेशक (कारफरमा) की हैसियत से देखना चाहता है।

दुन्या परस्तों का भ्रम

सम्भव है लालच व काम वासना का कोई पुजारी अपनी नासमझी के कारण यह गुमान करे कि दूसरे लोगों के मुकाबले में उसकी जिन्दगी ज्यादा सफल और खुशियों से भरी है लेकिन अपनी इस कोताही की सजा उसे जल्द भुगतनी पड़ती है जब वह इस लापरवाही की नींद से जागता है तो अपने आपको कामवासना का बेबस गुलाम पाता है और उसके भाग्य में निराशा, दुष्टता और बेचैंनी व बेबसी के सिवा और कुछ नहीं होता क्योंकि इंसान अगर एक बार अपनी कामवासनाओं के सामने हथयार डाल दे, तो फिर कभी उन्हें अपने काबू में नहीं ला सकता। बल्कि उनकी उद्दण्डता जैसे जैसे बढ़ती जाती है, उनकी प्यास में भी इजाफा होता चला जाता है। इस तरह इंसान हैवानियत के न्यूनतम स्तर पर गिर जाते हैं और लज़्ज़त परस्ती में इस तरह डूब जाते हैं कि उन्हें किसी और चीज़ का होश ही नहीं रहता। जाहिर है कि जिन्दगी और उसकी विभिन्न समस्याओं के बारे में इस तरह की गतिविधि इंसानियत को भौतिक व आध्यात्मिक (माद्दी व रूहानी) उन्नति नहीं दिला सकती। उन्नति भौतिक हो या रूहानी इस के लिए इंसान का अपनी कामवासनाओं की गुलामी से आज़ाद होना पहली शर्त है। इसके बाद ही साइंस, आर्ट और मज़हब के मैदानों में कोई उन्नति सम्भव होती है।

दुन्या के सम्बन्ध में इस्लाम का दृष्टिकोण

इस्लाम ने काम वासनाओं की गुलामी से आजादी पर इसीलिए अधिक बल दिया है मगर इस ग़रज़ से वह अपने पैरवी करने वालों को न तो संसार त्याग करने की अनुमति देता है और न उनको अच्छी और पवित्र चीज़ों से लाभान्वित होने से रोकता है। इन दो चरम सीमाओं को छोड़कर वह बीच की राह इख़्तियार करता है। उसकी निगाह में इस संसार में जो कुछ पाया जाता है, वह सब इंसान के लिए पैदा किया गया है। इस्लाम इंसान को बताता है कि "जहाँ है तेरे लिए तू नहीं जहाँ के लिए"। इसलिए लज़्ज़त परस्ती और इच्छाओं की गुलामी को वह इंसान के अस्तर से कमतर समझता है। संसार का यह सरोसामान इंसान को केवल इसलिए दिया गया है कि उसके द्वारा वह अपने पैदा होने के उच्च उद्देश्य को प्राप्त कर सके। इंसान को पैदा करने का उद्देश्य खुदा के दीन का प्रचार व प्रसार है और इंसानियत की परिपूर्ति (तकमील) की यही एक राह है।

इस्लाम के दो प्रमुख उद्देश्य

जिन्दगी में इस्लाम के पेशेनज़र दो अहम और प्रमुख उद्देश्य हैं। व्यक्तिगत जीवन के दायरे में वह व्यक्ति को इतना कुछ सरोसामान जिन्दगी एकत्रित कर देना चाहता है कि जिसकी सहायता से वह साफ सुथरा और पवित्र जीवन गुजार सके और सामूहिक जीवन के दायरे में उसकी कोशिश यह होती है कि एक ऐसा समाज जन्म ले जिसकी सारी शक्ति इंसानियत की सार्वजनिक उन्नति में खर्च हो और जिन्दगी का कारवां इस्लामी सभ्यता के दृष्टिकोण की रोशनी में रवांदवां (गतिशील) रहे और व्यक्ति और समाज के बीच संतुलन

(शेष पृष्ठ २४ पर)

खुदा और हबीबे खुदा की ताअत ही नजात का रास्ता है

हैदर अली नदवी

जो शख्स अल्लाह और उसके रसूल की इताअत करेगा वह कामयाब होगा– सरवरे कानैन की महब्बत का तकाज़ा है कि उनका इत्तिबाअ़ हर काम में किया जाए महब्बत का दावा अगर है और इताअ़ते रसूल ज़िन्दगी में नहीं है तो ये महब्बत खोखली होगी और नजात के लिए काफी नहीं होगी। आज हमारा हाल यह है कि हम सिर्फ रसूल से महब्बत का दावा करेंगे जश्ने विलादते रसूले अकरम धूम धाम से मनाएंगे लेकिन उनकी लायी हुई शरीअ़त पर चलने की पाबन्दी नहीं करेंगे हमने यह समझ रखा है कि रसूल (स०) से, औलियाए किराम से सिर्फ महब्बत का दअ़वा काफी है उनकी पैरवी में हम कोताह है। महब्बते रसूल अनमोल शै है इससे इन्कार करना अपने को हलाक करना है प्यारे नबी ने फरमाया तुममे से कोई भी उस वक्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि मैं उसके नज्दीक उसके माल, उसकी जान उसकी औलाद और तमाम लोगों से अधिक महबूब न हो जाऊँ हुजूर (स०) की महब्बत तो ईमान वालों का सरमाया है लेकिन रसूल (स०) से महब्बत की पहचान आप की इताअत है, आपके तरीके को अपनाना है, आपकी लाई हुई शरीअ़त पर चलनां है। रसूल (स०) ने फरमाया सब आदमी जन्नत में जाएंगे सिवाए उनके जिन्होंने इन्कार किया– सहाबा (रज़ि०) ने पूछा आपको कौन इन्कार करने वाला है आपने फरमाया जिसने मेरी इताअत की मेरे बताए हुए तरीक़े पर चला उसने मेरी इताअत की उसने मुझसे महब्बत की और जिसने मेरी लायी हुई शरीअ़त पर अमल नहीं किया उसने मेरा इन्कार किया जिसने नमाज़ नहीं पढ़ी उसने मेरा इन्कार किया जिसने रोज़े नहीं रखे उसने मेरा इन्कार किया जिसने ज़कात नहीं निकाली उसने मेरा इन्कार किया जिसने फर्ज होने के बावजूद हज नहीं किया उसने मेरा इन्कार किया जिसने बेपर्दगी वाली ज़िन्दगी गुज़ारी उसने मेरा इन्कार किया ग़रज़ कि जिसने मेरी सुन्नत को मेरे तरीक़े को अपनाया उसने मुझ से महब्बत की और जिसने ग़ैरों का तरीका अपनाया उसने मेरा इनकार किया। जिसने शिर्किया काम किये, बिदआत को अपनाया उसने मेरा इन्कार किया कब्रों को सज्दा, खुशी में नाच, गाना, बाजा गमी में मातम, सीना कूबी यह सब बातें हमारे हुजूर (स०) की शरीअ़त के खिलाफ हैं। इनसे बचना ज़रूरी है तभी महब्बत साबित होगी।

रसूल (स०) से महब्बत की निशानी है शरअते रसूल की पाबन्दी दीन का इल्म रखने वाले के लिये दीन की इशाअ़त पर मेहनत, आपस में महब्बत मुसलमानों की खैर ख्वाही– बात में नर्मी, सच्चाई, अमानत दारी अदल व इनसाफ, ग़ीबत, चुग़लखोरी खयानत, कीना बुग्ज़ हसद रिश्वत किसी की दिल आज़ारी से परहेज अगर रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से महब्बत है तो इन सब बातों पर अमल कर के महब्बत का सुबूत दें।

मेरे आका की विलादत की खुशी में अबू लहब ने अपनी बांदी को आजाद कर दिया था लेकिन ईमान न लाने और शरीअते रसूल पर अमल न करने के कारण जहन्नमी है। अल्लाह और उसके रसूल (स०) की महब्बत का तक़ाज़ा है कि अव्वलन आपके लाए हुए दीन का इल्म हासिल करके उस पर अमल करें, हम इल्म गुअ़तबर किताबों और मुअ़तबर आलिमों से सीखें। अल्लाह तौफ़ीक़ दे आ़लिम बनें। अनपढ़ हों कम पढ़े हों तो जो इल्म सीखा है किसी आ़लिम से उसकी तस्दीक करा लें, फिर उस इल्म को दूसरे न जानने वाले तक हिक्मत व तदबीर से पहुंचाएं और बड़ा आसान तरीक़ा यह है कि इस तरह का काम करने वाली जमाअ़त से जुड़कर खुद अपनी इस्लाह करें और न जानने वालों को इस्लाम सीखने और उसको दूसरों तक पहुंचाने की दअ़वत दें। आलिम हों तो चाहिये कि दूसरों तक अपना इल्म मुन्तक़िल करें यह काम किसी दीनी मदरसे के ज़रीअ़े भी हो सकता है, तहरीर व तक़रीर के ज़रीअ़े भी हो सकता हैं, दीन का काम करने वाली किसी जमाअ़त से जुड़कर भी हो सकता है। जो जमाअत आज कल तब्लीग़ी जमाअत कहलाती है अ़वाम व ख्वास, उलमा व दानिशवर

(शेष पृष्ठ २२ पर)

सफलता की कुंजी

अब्दुल रशीद खैरानी

अल्लाह ताअ़ला ने इन्सान को इस संसार में आजमाईश के लिए पैदा किया है। इनसान को अच्छाई व बुराई से अवगत कराने के लिए अपने रसूल (पैगाम देने वाले) भेजे और हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसललम को अन्तिम सन्देष्टा बनाकर भेजा और आप पर अपनी किताब कुरआन मजीद उतारकर इन्सानों को भले व बुरे से अवगत करा दिया है।

कुरआन मजीद की सूरः अनफाल में अल्लाह ताअ़ला और उसके रसूल स.अ.व. का अनुसरण व आज्ञापालन तथा अल्लाह को ज्यादा से ज्यादा याद करने को दुनिया व आखिरत (मृत्यु उपरान्त जीवन) की सफलता प्राप्त करना बताया है। सूरः अन्फाल की आयत एक से चार में अल्लाह तआ़ला फरमाता है :–

१. (ऐ पैग़म्बर) तुम से अनफाल (लड़ाई में प्राप्त माल) के बारे में पूछते हैं। कहो यह अनफ़ाल तो अल्लाह और उसके रसूल के लिये हैं तो तुम लोग अल्लाह से डरो और अपने आपस के ताल्लुकात (सम्बन्ध) ठीक–ठाक रखो और अल्लाह और उसके रसूल का आज्ञापालन (फरमाबरदारी) करो अगर तुम ईमान वाले हो!

२. सच्चे ईमान वाले तो वो लोग हैं जिनके दिल अल्लाह का ज़िक्र सुनकर कांप उठते हैं और जब अल्लाह की आयतें उनके सामने पढ़ी जाती हैं तो उनका ईमान बढ़ जाता है और वे अपने रब पर भरोसा रखते हैं।

३. जो नमाज़ कायम करते हैं और जो कुछ हमने उनको दिया है उसमें से (हमारे रास्ते में) खर्च करते हैं।

४. ऐसे ही लोग सच्चे ईमान वाले हैं उनके लिए उनके रब के पास बड़े दर्जे हैं और गलतियों से माफी है और उत्तम रोजी है।

इसके बाद सूरः अनफाल के आयत नम्बर बीस में फरमान है–

२०. ऐ ईमान वालो! अल्लाह और उसके रसूल का आज्ञापालन करो और हुक्म सुनने के बाद उससे मुंह न फेरो !

२१. उन लोगों की तरह न हो जाओ जिन्होंने कहा कि हमने सुना हालांकि वो नहीं सुनते!

इसके पश्चात आगे फरमान है:–

२४. ऐ ईमान वालो! अल्लाह और उसके रसूल की पुकार को स्वीकार करो जबकि रसूल तुमको उस चीज़ की तरफ बुलाएं जो तुम्हे जीवन (ज़िन्दगी) प्रदान करने वाली है और जान रखो कि अल्लाह आदमी और उसके दिल के बीच आड़ बन जाता है और उसी की ओर तुम समेटे जाओगे!

२५. और बचो उस फितने से जो खास उन्ही लोगों पर वाके नहीं होगा जो तुममें इन गुनाहों के करने वाले हैं और जान रखो कि अल्लाह कड़ी सजा देने वाला है।

२७. ऐ ईमान वालो! जानते बूझते अल्लाह और उसके रसूल के साथ खियानत (विश्वासघात) न करो, अपनी अमानतो में भी खियानत न करो और तुम इन बातों को जानते हो,

२८. और जान रखो कि तुम्हारा माल और औलाद बड़ी आज़माईश है और अल्लाह के पास बदला देने को बहुत कुछ है,

२९. ऐ ईमान वालो! अगर तुम अल्लाह से डरोगे तो वह तुम्हारे लिए फर्क करने वाली चीज पैदा कर देगा (यानि तुमको मुमताज कर देगा) और तुम्हारे गुनाह मिटा देगा और तुम्हारे कुसूर माफ कर देगा और अल्लाह बड़ा अनुग्रह (रहम) करने वाला है। इसी तरह आयत नम्बर ४५ व ४६ में मुसलमानों को अल्लाह तआ़ला का डर रखने और आपस में एकता बनाये रखने का हुक्म देते हुए फरमाता है।

४५. ऐ ईमान वालो! जब किसी गिरोह से तुम्हारा मुकाबला हो तो जमे रहो और अल्लाह को बहुत ज्यादा याद करो आशा है कि तुमको सफलता मिलेगी।

४६. और अल्लाह और उसके रसूल का आज्ञापालन (फरमाबरदारी) करो और आपस में न झगड़ो वरना तुम्हारे अन्दर कमजोरी पैदा हो जाएगी और तुम्हारी हवा उखड़ जाएगा। सब्र से काम लो निःसंदेह अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है।

कुरआ़न मजीद की ऊपर दर्ज सूरः अनफाल की आयतों में अल्लाह

तआ़ला ने इंसान को इस संसार में ईमान व परहेज़गारी वाली ज़िन्दगी गुजारने का तरीका बताते हुए अपने सच्चे मोमिन बन्दे की पहचान बताई है। इन आयतों में अल्लाह तआ़ला ने इन्सानों के लिए जो हुक्म जारी किये हैं उसका कुछ सारं निम्नानुसार हैः–

१. इन्सान को हर हाल में अल्लाह तआ़ला का डर रखना है। अल्लाह तआ़ला और उसके सन्देष्टा मुहम्मद सललल्लाहु अलैहि वसल्लम के हर हुक्म व फरमान का पालन क़रना ज़रूरी है तथा हुक्मों व फरमानों को सुनने व जान लेने के बाद न मानना गुनाह व मुसीबत मोल लेने का काम है!

२. अल्लाह तआ़ला हुक्म दे रहा है कि आपस में मिल जुल कर रहो और माल व अपनी बड़ाई के लिए आपस में विवाद व झगड़ा न करो अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल स. अ.व के हुक्मों को बिना किसी तंगी और हिचकिचाहट के तुरन्त मान लो और अमल करो।

३. अपने आपस के सम्बन्ध और रिश्तो को दुरुस्त रखना भी जरूरी है क्योंकि यह भी अल्लाह तआ़ला का हुक्म है। इसी तरह किसी पर भी जुल्म व ज़्यादती नहीं करनी चाहिए और न ही किसी से दुश्मनी करनी चाहिए। ऐसा करना अल्लाह तआ़ला की नाफरमानी होगी।

४. अल्लाह तआ़ला फरमाता है कि सच्चे ईमान वाले बन्दे तो कुरआन पाक की आयतें सुनकर लरज उठते हैं क्योंकि इससे उन्हें अल्लाह ताअ़ला के सामने अपनी दुन्यावी ज़िन्दगी के कर्मों का हिसाब देने की जवाबदारी याद आ जाती है। साथ ही मोमिन जब कुरआन की आयतें सुनता है तो उसका ईमान बढ़ता है और ज्यादा मजबूत हो जाता है। इससे यह साबित होता है कि अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र और कुरआन पाक की आयतें सुनने से सच्चे ईमान वाले बन्दों के ईमान में बढ़ोतरी होती है और अल्लाह तआ़ला पर उनका भरोसा और मजबूत हो जाता है।

५. अल्लाह तआ़ला का हुक्म है कि हर ईमान वाले पर पांच वक्तों की नमाज़ वक्त की पाबन्दी के साथ पढ़नी ज़रूरी है। इसमें कोई छूट नहीं है। इसीलिए अल्लाह तआ़ला ने अपने मोमिन बन्दे की यह पहचान बताई है कि मोमिन तो नमाज़ पाबंदी के साथ पढ़ता है और जो माल व धन अल्लाह तआ़ला ने दिया है उसे अल्लाह की राह में अल्लाह तआ़ला की प्रसन्नता हासिल करने के लिए खुले व छिपे खर्च करता है।

६. अल्लाह तआ़ला फरमाता है कि अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल स.अ.व. के बताए अनुसार नेक कामों में अपना माल खर्च करने वालों के गुनाह और गलतियां माफ कर दी जाती हैं शर्त केवल यह है कि नेक काम में माल खर्च करने की नीयत सिर्फ अल्लाह तआ़ला की प्रसन्नता प्राप्त करने की होनी चाहिए। इसमें किसी भी प्रकार का दिखावा या स्वयं की शोहरत व नाम की इच्छा न हो। इसके साथ यह भी फरमाया है कि अल्लाह की राह में नेक कामों में खर्च करने वाले की रोजी (कमाई) में बढ़ोतरी होती है।

७. आयत नम्बर बीस में अल्लाह तआ़ला और रसूल स.अ.व की फरमाबरदारी क़रने व हुक्मों को सुनने के बाद नाफरमानी करने से मना किया गया है क्योंकि नाफरमानी करने से नुक्सान ही नुक्सान उठाना पड़ेगा।

८. आयत नम्बर चालीस में अल्लाह तआ़ला बता रहा है कि अल्लाह तआ़ला और रसूल स.अ.व के हुक्मों के पालन में तुम्हारे लिए लाभ ही लाभ है। इसलिए पक्के फरमाबरदार बन जाओ ताकि दुनिया और आखिरत की भलाई से मालामाल हो जाओ!

९. अल्लाह तआ़ला आयत नम्बर पच्चीस में अपने नेक बन्दों को चेतावनी दे रहा है कि समाज में बिगाड़ और बुराई को फैलने से रोको, बुराई को अपने अन्दर पनपने न दो, जहाँ किसी को बुराई व शरीअ़त के खिलाफ काम करते देखो तो फौरन रोक दो वरना अल्लाह तआ़ला का अजाब सब पर आ पड़ेगा। केवल गुनहगारं ही विपत्ति में नहीं पड़ेगें बल्कि अल्लाह के नेक बन्दे भी इसकी चपेट में आ जायेंगे। इसलिए बुराईयों को रोकने की कोशिश करते रहना चाहिए। और समाज में पनपने वाली बुराईयों व शरीअ़त के विरुद्ध कार्यों व रस्मों व कुरीतियों को पूरी ताकत से रोकना चाहिए वरना सभी को नुकसान होना तय है।

१०. आयत नम्बर २७ में अपने ईमान वाले बन्दों को अल्लाह तआ़ला व रसूल स.अ.व. के साथ ख़ियानत (विश्वासघात) करने से अल्लाह तआ़ला मना फरमाता है अल्लाह तआ़ला और रसूल स.अ.व. से खियानत करने का मतलब उनके हुक्मों की नाफरमानी करना है। इस आयत में यह स्पष्ट कर दिया गया है कि अल्लाह तआ़ला द्वारा नियत फर्जों और रसूल स.अ.व की सुन्नतों और फरमानों को न तोड़ो और

न छोड़ो बल्कि पूरी ईमानदारी से पालन करो और गुनाहों से बचो। अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हुक्मों व फरमानों व सुन्नतों की नाफरमानी से बचना ज़रूरी है वरना खियानत करने की सजा मिलेगी जोकि बहुत सख्त होगी।

आयत नम्बंर २८ में आपस में भी खियानत करने की मनाही की गई है। दो आदमियों के बीच की बात अमानत होती है। बात को जहाँ सुनें वहीं छोड़ देना चाहिए, उसे लोगों को सुनाते व फैलाते नहीं रहना चाहिए। इस तरह अपनी जिम्मेदारियों व कर्तव्यों के करने में कोताही नहीं होनी चाहिए क्योंकि इस संसार में अल्लाह तआ़ला इन्सान को माल व दौलत व औलाद आज़माइश के लिए देता है और उसके कर्मों की जांच होकर मृत्यु पश्चात आखिरत की हमेशा वाली ज़िन्दगी में अच्छा या बुरा बदला मिल सके। इस लिए अल्लाह तआ़ला और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बताए अनुसार आपस में किसी भी व्यवहार में कोताही या धोखाबाज़ी करना खियानत है और इससे बचना चाहिए वरना सख्त पकड़ होगी।

११. आयत नम्बर २६ में हुक्म हुआ है कि अगर तुम अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल स.अ.व. के फरमाबरदार रहोगे तो अल्लाह तआ़ला तुम्हारे गुनाहों व गलतियों को माफ कर देगा और आखिरत में भी ईनाम देगा दुनिया में भी भलाई देगा और आखिरत में दर्जे बुलन्द कर देगा और जन्नत में दाखिल करेगा। अल्लाह से डरने का मतलब है कि इन्सान हमेशा मरने के पश्चात जी आने वाली ज़िन्दगी और अपने कर्मों का हिसाब देने का पूरा व पक्का यकीन रखे तभी ऐसा शख्स गुनाहों से बच सकता है। इसलिए कहा गया है कि अल्लाह का डर रखो!

१२. आयत नम्बर ४५ में फरमान हुआ है कि अल्लाह तआ़ला को बहुत ज्यादा याद किया करो क्योंकि अल्लाह तआ़ला का ज़्यादा से ज़्यादा याद व ज़िक्र करना सफलता की कुंजी है। इसलिए फरमान है कि जब किसी गिरोह से मुकाबला हो तो जमे रहो और बहादुरी से मुकाबला करो और इस मुश्किल के समय अल्लाह तआ़ला को ज्यादा से ज्यादा याद करो और अल्लाह पर पूरा भरोसा रखो ताकि तुमको सफलता प्राप्त हो।

१३. आयत नम्बर ४६ में अल्लाह तआ़ला का हुक्म है कि हर मामले में कठिन से कठिन समय में भी अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की फरमाबरदारी करो यानी कि अल्लाह तआ़ला के हुक्मों व रसूल स.अ.व की सुन्नतों व फरमानों का पालन आवश्यक रूप से करो, किसी भी दशा में नाफरमानी नहीं होनी चाहिए। साथ ही आपस में झगड़ा फसाद करने से मना किया गया है। यह सोचने की बात है कि अल्लाह ताआ़ला का हुक्म है कि आपस में झगड़ा न करो फिर कोई शख्स अगर अपने भाइयों से झगड़ा करता है तो अल्लाह तआ़ला के हुक्म के खिलाफ करता है जोकि सख्त अजाब का कारण बन सकता है। आपस में झगड़ा करने से फूट पड़ती है और एकता टूटती है जिससे मुसलमानों में कमजोरी आ जाती है। इसलिए मिल जुलकर रहने का हुक्म दिया गया है।

इस आयत में हर मामले में सब्र (धैर्य) से काम लेने का हुक्म हो रहा है क्योंकि अल्लाह का यह व्रायदा है कि सब्र करने वाले की मदद अल्लाह तआ़ला अवश्य करता है इस पर पूरा भरोसा रखना चाहिए और किसी भी प्रकार का संदेह या शंका नहीं करनी चाहिए।

हज़रत अनस रजियल्लाहु तआ़ला अन्हू कहते हैं कि हमने एक बार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मुस्कराते हुए देखा तो हज़रत उमर फारूक रदियल्लाहु तआ़ला अन्हू ने पूछा– या रसूलल्लाह स.अ.व. कौन सी चीज़ हंसी का सबब हुई! फरमाया– मेरे दो उम्मती (मानने वाले) अल्लाह तआ़ला के सामने घुटने टेक कर खड़े हो गये हैं। एक अल्लाह से कहता है– या रब! इसने मुझ पर जुल्म किया है, मैं बदला चाहता हूं। अल्लाह तआला दूसरे शख्स से कहता है कि अपने जुल्म का बदला अदा करो!

दूसरा शख्स (ज़ालिम) जवाब देता है– या रब! अब तो मेरी कोई नेकी शेष नहीं रही कि जुल्म के बदले में दे सकूं! इस पर पहला शख्स कहता है– ऐ अल्लाह! मेरे गुनाहों का बोझ उस पर लाद दे।

यह कहते हुए रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आंखे आसुओं से भरकर नम हो जाती हैं और फरमाने लगे कि वह हिसाब का दिन बड़ा सख्त दिन होगा। लोग यह चाहेंगे कि उनके गुनाहों के बोझ किसी और के सिर पर धर दें। फिर फरमाया कि अब अल्लाह तआला उस पहले वाले शख़्स से फरमाएगा कि नजर उठा कर जन्नत की तरफ देख वह सर उठाएगा जन्नत की तरफ देखेगा

और अर्ज़ करेगा– या रब! इसमें तो चांदी और सोने के महल हैं; मोतियों के बने हुए हैं। या अल्लाह! ये महल किस नबी और किस सच्चे व शहीद के हैं। अल्लाह तआला फरमाएगा जो इसकी कीमत अदा करता है उसको दे दिए जाते हैं। वह कहेगा– या अल्लाह कौन इसकी कीमत अदा कर सकता है! अल्लाह तआला फरमाएगा– तू इसकी कीमत अदा कर सकता है! अब वह अर्ज़ करेगा– या रब! किस तरह? अल्लाह तआला फरमाएगा– वह इस तरह कि तू अपने भाई को माफ कर दे। वह कहेगा– या अल्लाह! मैंने माफ किया! इस पर अल्लाह तआला फरमाएगा कि अब तुम दोनों एक दूसरे का हाथ पकड़े जन्नत में दाखिल हो जाओ।

इसके बाद रसूलल्लाह स.अ.व. ने फरमाया– अल्लाह से डरो, आपस में सुलह (समझौता) कायम रखो क्योंकि कियामत के दिन अल्लाह तआला भी मोमिनो (फरमाबरदारों) के बीच आपस में मिलाप व सुलह व समझौता कराने वाला है। इसलिए कुरआन मजीद की सूरः अनफाल की उपरोक्त दर्ज आयत नम्बर एक से चार, बीस–इक्कीस, चौबीस से उनतीस और पैतालीस व बयालीस में दिये गये अल्लाह तआला के हुक्मों का पालन करना जरूरी है। ईमान वालों को चाहिए कि अल्लाह का डर रखें ज्यादा से ज्यादा अल्लाह का ज़िक्र करते रहें और रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नतों व फरमानों का पालन करें तो दुनिया व आखिरत की सफलता अवश्य मिलेगी (इन्शाअल्लाह)

प्रिय पाठको! आपने किताब व सुन्नत के अहकाम कुछ विस्तार से पढ़े। अब आप समाज पर नजर डालें तो आप को नजर आएगा कि शरीअ़त के खिलाफ काम खुल्लम खुल्ला हो रहे हैं और हर नेकी के साथ कोई न कोई बुराई इस तरह मिलां दी गई है कि लोग उसे भलाई समझकर बड़ी ही अक्लमंदी से अंजाम दे रहे हैं। यह रोग हर जगह देखने में आ रहा है कि एक मुसलमान दूसरे पर ज्यादती कर रहा होता है मगर उसके खिलाफ बोलने वाला कोई नहीं मिलता। शरीअत के खिलाफ काम खुले आम हो रहे हैं मगर इसको रोकने वाला कोई नहीं यहां तक कि इसको बुरा कहने वाले भी नहीं मिलते हैं बल्कि हर काम में अपनी खामोश सहमति जतलाते हैं और इस तरह हदीस के मुताबिक खुद भी अजाब के हकदार बनते हैं। आज इस बात की जरूरत है कि हम अपने आप को अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल स.अ.व. की इताअत पर जमा दें और शरीअत के खिलाफ व बुरे कामों को देखकर तुरन्त उसके खिलाफ खड़े हो जाएं तभी हमारा माहौल सुधरेगा और हम अल्लाह के अजाब और पकड़ से बच सकेंगे। अल्लाह तआ़ला से दुआ है कि वह हमें अच्छाई का हुक्म देने वाला और बुराइयों से मना करने वाला और अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की फरमाँबरदारी पर चलने की तौफीक व हिम्मत अ़ता फरमाए। (आमीन)

ईमान वाले तो सब भाई भाई हैं, पस अपने भाइयों में (नाचाकी हो जाए तो) मेल करा दिया करो। (पवित्र कुर्आन)

बिच्छू का डंक मारना

जिस जगह बिच्छू डंक मारता है उस जगह बड़ी जलन होती है जिससे मरीज़ बेचैन हो जाता है, बअ़ज़ का सर चकराने लगता है और क़ै दस्त आने लगते हैं और बदन ऐंठने लगता है, और कभी बेहोशी भी हो जाती है लेकिन सब को ऐसा नहीं होता। आम तौर से बिच्छू काटने से मौत नहीं होती, लेनिक कभी बच्चो, बूढ़ों और कमज़ोरों को मौत भी हो जाती है।

बिच्छू जहां डंक मारता है वहाँ अपना बारीक डंक भी छोड़ देता है, उस का इलाज इस तरह करें कि सबसे पहले डंक मारी हुई जगह से दो तीन इन्च ऊपर फीते वग़ैरह से मज़बूत बन्द बान्ध दें लेकिन यह बन्द बहुत देर तक बन्धा न छोड़ दें। बन्ध बांधने के बअ़द अगर डंक का कांटा नज़र आए तो उसे निकाल दें फिर उस जगह पर मिट्टी का तेल, या तारपीन लगाएं या चरचट्टा की जड़ या लस्सुन पीस कर लगाएं या चूना शहद में मिलाकर लेप करें जलन खत्म हो जाएगी या कम हो जाएगी, बिच्छू को पीसकर लगाने से भी फाइदा होता है। याद रहे कि झाड़ फूंक से जहर नहीं ज़ाइल होता, अगर किसी को झाड़ फूंक से आराम मिला तो कम ज़हर वाला बिच्छू या, नफ्सियाती असर से एहसास कम हो गया। हाँ किसी अल्लाह वाले की करामत से ऐसा सम्भव है।

दिमाग़ी बीमारियों का परिचय

इदारा

फालिज **(Paralysis)** जिस्म के किसी हिस्से की हरकत या इंहसास ख़त्म हो जाना फालिज कहलाता है। किसी अ़ज़्व (अंग) का फड़कना, ठन्डा पड़ जाना या सुन मअ़लूम होना फ़ालिज होने की निशानियां हैं।

अस्बाब (कारण) ठन्डी चीज़ों का बकसरत (अत्यधिक) इस्तिमाल, रीढ़ की हड्डी में चोट दिमाग से तअ़ल्लुक़ वाली किसी नस का कट जाना या कुचल जाना। इन्सान के जिस्म में अअ़साब (नसें) हिस्स व हरकत का ज़रीआ़ हैं। इनके मरकज़ (केन्द्र) दिमाग़ में कोई खराबी या रुकावट पैदा हो जाए या नसों की शाखों में कोई रुकावट पैदा हो जाए, उसके नतीजे में यह मरज़ लगता है।

चालीस साल से ज़ियादा उम्र वालों का इलाज मुश्किल से होता है फिर भी इलाज कराना चाहिये ठीक भी हो सकता है या कम से कम तक्लीफ में कमी रहेगी। किसी अच्छे हकीम या माहिर डाक्टर से इसका इलाज कराएं। शुरूअ़ में शहद, गावज़ुबां मिलाकर गर्म गर्म तीन दिन तक दिन में चार पांच बार पिलाएं। चिड़यों का शोरबा, मुर्ग या कबूतर का शोरबा पिलाएं और किसी अच्छे डाक्टर को दिखाएं और उसका इलाज कराएं।

लक्वा **(Facial-paralysis)**

यह भी फालिज की तरह का मरज़ है। इस में सिर्फ चेहरे के अज़लात (मांस पेशियां) मुतअस्सिर (प्रभावित) होते हैं। वह नसें जों गरदन की हड्डी से निकलती है चेहरे के अज़लात में उनकी शाखें फैलती हैं, उन नसों में जब किसी क़िस्म की खराबी पैदा हो जाती है तो लक़्वे का मरज पैदा हो जाता है।

इस का खास सबब (कारण) सर्दी लगना, ठन्डी चीजों का इस्तिअ़माल, कान का आप्रेशन, जहरीले माद्दे का असर, आतशक (उपदंश) सूगर, जोड़ो का दर्द भी इसके अस्बाब हैं। कभी ठन्डा सुर्मा लगाने, पिपर मिनट खाने और सर में ठन्डा तेल डालने से भी यह मरज़ हो जाता है।

पहचान :– मुंह टेढ़ा हो जाता है मुंह से राल बहती है, मरीज़ थूक नहीं सकता न फूंक मार सकता है जिस जानिब असर होता है उधर की आंख बन्द नहीं कर सकता आंख से आंसू बहते हैं, पानी मुंह में नहीं रोक सकता न कुल्ली कर सकता है।

कानों में गर्म पानी का भपारा, गरदन के मुहरों (गुर्यों) पर गर्म तेल की मालिश चेहरे पर कपड़े की बन्दिश (बांधना) मुफीद तदबीरें हैं। अच्छे डाक्टर से रुजूअ़ (सम्पर्क) करें।

कुज़ाज़ **(Tetanus)**

बड़ा खतरनाक जान लेवा मरज़ है। नये पैदा होने वाले बच्चों में आम तौर से हो जाता है। किसी ज़ख़्म, जलने कटने या कान में ज़ख़्म के नतीजे में यह मरज़ होता है। जिस्म में जरासीम के दाखिल होते ही इस मरज़ की अलामात शुरूअ़ हो जाती हैं।

निशानियाँ : जिस्म का टूटना, तेज़ बुख़ार, सख़्त दर्द, जबड़ों मे सख़्ती, निगलने में दुश्वारी, कमर में अकड़न, दान्त बैठना, कमर झुकना, थोड़ी–थोड़ी देर पर ऐंठन के दौरे पड़ना, मुंह से साफ आवाज़ न निकलना, बच्चे का दूध न पीना आदि निशानियाँ हैं। इलाज के लिये अच्छे डाक्टर से मिलें।

जब बच्चा पैदा हो तो उसको किसी डाक्टर से ए०टी०एस० का टीका लगवा दें, टेटनेस के रोग से बचने के लिये ज़रूरी है। किसी को ज़ख्म लग जाए उसे भी ए०टी०एस० का टीका ज़रूर लगवा लेना चाहिये ताकि टेटनेस का खतरा न रहे।

पुदीना के फाइदे

पुदीना मश्हूर खुश्बूदार चीज़ है। यह शहर, कस्बा, गांव, सब जगह मिल जाता है, आम तौर पर इसे दाल, सालन को खुश्बूदार बनाने के लिये काम में लाते हैं। यह खाने को हज्म भी करता है। मिअ़दे (अमाशय) को कुव्वत (शक्ति) देते और रियाह (हवा) को निकालता है इसीलिये इसकी चटनी बनाकर खाने के साथ खाते हैं। इसमें ज़हरों (विषों) को ख़त्म करने की तासीर (गुण) भी है, इसलिये बअ़ज़ जहरों को दूर करने के काम भी लाते हैं। तुख़्मा और हैज़ा में पुदीना ६ ग्राम, इलाइची छोटी तीन ग्राम पानी में उंबाल छानकर बार–बार पिलाने से मत्ली और क़ै बन्द हो जाती है। पेट का दर्द भी दूर हो जाता है। और प्यास कम हो जाती है।

फील पा (पांव फूल जाने का रोग) में छ ग्राम पुदीना पीस छानकर १०० ग्राम फाड़े हुए दूध के पानी में

मिला कर कुछ दिनों तक पीते रहने से मरज में कमी हो जाती है।

पुदीना को शराब में पीसकर लगाने से चेहरे के दाग धब्बे दूर हो जाते हैं, झाइयां दूर हो जाती हैं, आखों के नीचे पड़ा हुआ काला हल्का भी दूर हो जाता है। लेकिन याद रहे शराब नजिस होती है इसलिये इमान वाले इससे बचें। अगर शराब में जरा सा नमक डाल दें तो शराब पाक हो जाएगी लेकिन मअ़लूम नहीं फिर फाइदा करेगी या नहीं इसका तजरिबा करना चाहिये।

बिल्ली, न्योले, चूहे ने काट लिया हो या भिड़ या बिच्छू ने डंक मारा हो तो उस पर पुदीना पीस कर लगाने से आराम मिलता है। हरे पुदीने का पानी से नाक, कान और दूसरे ज़ख्मों के कीड़े मर जाते हैं।

हरा पुदीना १० ग्राम और सूखा हो तो ५ ग्राम, लाल शकर २० ग्राम पानी में उबालकर पिलाने से पित्ती का मरज़ ठीक हो जाता है। बअ़ज़ हकीम १० ग्राम पुदीने का अ़रक़, ५०' ग्राम गुलाब (अरक) १० ग्राम ताज़ा सिकंजबीन, पिलाते हैं, दोनों नुस्ख़ें अच्छे हैं, घन्टे दो घन्टे के वक्फ़े से तीन चार खुराक मे पित्ती ठीक हो जाती है।

गर्मियों में पुदीने की चाए लजीज भी होती है और मुफीद भी। कच्चे आम के साथ पुदीने की चटनी बड़ी जायके दार होता है। अजीब बात है बारिश के पानी से पुदीना सूख जाता है इस लिए जो लोग पुदीना उगाते हैं उसे बारिश के पानी से बचाते हैं। इस तरह कि गमले में चिकनी मिट्टी भर कर पुदीना उस में उगा लेते हैं, फिर गमले को बारिश के पानी से बचाते हैं, धूप होती है तो धूप में गमला रख देते हैं।

"इस्लाम और सन्देष्टा"

डा. अब्दुल लतीफ चतुर्वेदी

इस्लाम एक प्राकृतिक धर्म है। इसका पैगाम आफाकी है। इसके आदेशों में जहाँ इबादत व रियाज़त का आदेश है वहीं हुकूमत और सियासत अथवा राजनीतिज्ञों को आदेश देना भी इसकी शिक्षाओं में आता है। यह कोई ऐसा धर्म नहीं है जिसकी सरहद केवल पूजा पाठ तक ही हो और यह नियम हो कि "जो कैसर का है उसको कैसर को दे दो जो भगवान का है उसको भगवान को दे दो"।

इस्लाम कभी पराजित और मगलूब होना पसन्द नहीं करता है क्योंकि यह धर्म उस ईश्वर का भेजा हुआ हैं जो हर चीज़ को पैदा करने वाला और इस संसार का कर्ता धरता है। और हर वस्तु पर उसका अधिकार चलता है। सांसारिक विधान के नियम के अनुसार हमेशा यह बात सब मानते रहे हैं कि किसी भी राजा या शासक के सन्देश को ले जाने वाले की इज़्ज़त की जाती है और उसके साथ अव्यवहार अपराध समझा जाता है और जिसके उपलक्ष्य में जंगे होती हैं। बात जब ईश्वर के सन्देष्टा की हो तो इसकी अहमियत और बढ़ जाती है जब कोई बादशाह अपने सन्देष्टा के साथ अव्यवहारता को सहन नहीं कर सकता तो ईश्वर के बारे में यह अनुमान कैसे लगाया जा सकता है कि चाहे उसके सन्देष्टाओं की जितनी तौहीन की जाए और मज़ाक उड़ाया जाए वह यह सब करने वालों को कोई दण्ड नहीं देगा। चूंकि अल्लाह ने हर चीज़ के लिए एक समय निर्धारित कर दिया है वरना यह लोग सर की आंखों से देख लेते की अल्लाह इस बात में कितना खुद्दार और ग़ैरतमन्द है। विश्व का इतिहास बताता है कि अल्लाह ऐसे लोगों की जिन्होंने उसके सन्देष्टाओं का मज़ाक उड़ाया और उनको बुरा कहा आद समूद और दूसरी कौमों को इसी कारण तबाह बर्बाद किया गया।

खुद अल्लाह के नबी हज़रत मुहम्मद (स०) ने उन लोगों को क़त्ल का हुक्म दिया जिन्होंने आपको गालियाँ दी और आप (स०) का मज़ाक उड़ाया जैसे इब्न खतल को आप (स०) ने मक्का की विजय के दिन क़त्ल कराया। प्रसिद्ध यहूदी सरदार काब बिन अशरफ का क़त्ल इसीलिए कराया कि वह अपनी कविता में आप (स०) का मज़ाक उड़ाता था। मदीना के अबू इफ्क का क़त्ल भी सालिम बिन उमैर ने इसीलिए आप (स०) के हुक्म से किया था कि उसने आप (स०) की तौहीन में एक पूरी कविता लिखी थी।

इसके अतिरिक्त बहुत से वाक्यात हैं जिन से पता चलता है कि सन्देष्टा को गाली देने वाले को कभी अल्लाह और उसका रसूल बर्दाश्त नहीं कर सकते। काश!! आज कोई उठता और इन दुश्मनों का सर काट देता जो आज इस्लाम और मुसलमानों के धार्मिक लोगों यहाँ तक कि रसूल की ज़ात की तौहीन करना चाहते हैं। और इस्लाम को मिटाना चाहते हैं।

ग़ैर मुस्लिम बनाम मुस्लिम क़ौम

एक ही प्रभू की पूजा हम अगर करते नहीं।
एक ही दरगाह पर सर आप भी रखते नहीं।।
अपना सज्दा गाह 'देवी' का अगर स्थान है।
आपके सज्दों का मरकज़ भी तो क़ब्रिस्तान है।।
अपने देवताओं की गिनती हम अगर रखते नहीं।
आप भी मुश्किल कुशाओं को तो गिन सकते नहीं।।
जितने कंकर उतने शंकर यह अगर मशहूर है।
जितने मुर्दे उतने सज्दे आप का दस्तूर है।।
अपने देवी देवताओं को है गर कुछ इख़्तियार।
आपके वलियों की ताक़त का नहीं है कुछ शुमार।।
वक़्ते मुश्किल का है नारा अपना गर बजरंग बली।
आपको देखा लगाते नार–ए–ग़ौसो अ़ली।।
होता है अवतार प्रभु अपना तो हर देश में।
आपने समझा ख़ुदा को मुस्तफ़ा के भेष में।।
जिस तरह से हम बजाते मन्दिरों में घंटियां।
तुरबतों पर आप को देखा बजाते तालियां।।
हम भजन करते हैं गाकर देवता की ख़ूबियां।
आप भी क़ब्रों पे जाकर गाते हैं क़व्वालियां।।
हम चढ़ाते हैं बुतों पर दूध या प्रानी की धार।
आपको देखा चढ़ाते सुर्ख़ चादर शानदार।।
बुत की पूजा हम करें, हम को मिले नारे सक़र।
आप क़ब्रों पर झुकें क्यों कर मिले जन्नत में घर।।
आप मुश्रिक हम भी मुश्रिक मामला जब साफ़ है।
जन्नती तुम दोज़खी हम यह कोई इंसाफ़ है।।
हम भी जन्नत में रहेंगे, तुम अगर हो जन्नती।
वर्ना दोज़ख़ में हमारे साथ होंगे आप भी।

नवाए इस्लाम से साभार –
हिन्दी रूपान्तर – मास्टर मुहम्मद इलियास रूदौलवी

क़ादियानियों से होशियार

यहूदियों ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को उस वक़्त के हुक्मरा के ज़रीअे सलीब पर फांसी देने का फ़ैसला करवा लिया और आप को पकड़ कर ले गये और कमरे में उन को रखा साथ में और लोग भी थे। रिवायत में आता है कि अल्लाह तआला ने उनमें से एक शख़्स को हज़रत ईसा (अ०) की शक्ल में कर दिया और ईसा (अ०) को आसमान पर उठा लिया और चौथे आसमान पर वह अपने जिस्म के साथ ज़िन्दा हैं और आख़िर ज़माने में जब हज़रत महदी को अल्लाह तआला ख़ान्दाने अहले बैत में मदीना में पैदा फ़रमाएगा, उन का नाम हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नाम पर मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह होगा वह जवान होकर मुसलमानों की क़ियादत करेंगे। उसी ज़माने में दज्जाल निकलेगा और उस का फ़ित्ना जोरों पर होगा उस वक़्त अल्लाह के हुक्म से हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम अपने जिस्म के साथ आसमान से दमिश्क़ की मस्जिद पर उतरेंगे उस वक़्त हज़रत महदी (रह०) वहीं होंगे, फ़ज्र की नमाज़ तैयार होगी, हज़रत महदी (रह०) हज़रत ईसा (अ०) से नमाज़ पढ़ाने की दरख़्वास्त करेंगे लेकिन वह हज़रत महदी (रह०) से फ़रमाएंगे कि नमाज़ आप ही को पढ़ाना है। नमाज़ हज़रत महदी पढ़ाएंगे, हज़रत ईसा (अ०) मुक़्तदी होंगे फिर हज़रत ईसा (अ०) दज्जाल को क़त्ल करेंगे। लम्बा बयान है। देखिये किताबें । "मसीहि मौऊद की पहचान" अज़ मुफ़्ती मु०शफीअ़ (रह०) "अलखलीफतुल महदी फिल अहादीसिस्सहीह:" अज़ मौलाना हुसैन अहमद मदनी रह०" यह उर्दू तर्जुमे के साथ है "हज़रत इमाम महदी (रह०) का ज़ुहूर अभी नहीं हुआ" अज़ मुफ़्ती सय्यिद मु० सलमान मन्सूर पूरी

क़ुर्आने मजीद से भी यह बात साबित है कि यहूद आप को कत्ल न कर सके बल्कि अल्लाह तआला ने आप को अपनी तरफ़ उठा लिया : "वमा कतलूहु यकीनम बर्रफ़अहुल्लाहु इलैहि (अन्निसा १५७, १५८) (और यह यक़ीनी बात है कि लोगों ने आप को क़त्ल नहीं किया बल्कि अल्लाह ने उनको अपनी तरफ़ उठा लिया)

जिस का जी चाहे इन आयतों की तफ़सीर देखे।

लेकिन मिर्ज़ा क़ादियानी ने अव्वलन तो कहा कि हज़रत ईसा (अ०) आस्मानों पर नहीं उठाए गये उनकी वफ़ात हो चुकी है, उन का यह क़ौल सारी उम्मत के उलमा से हट कर है और ग़लत है।

यह बात उन्होंने इस लिए कही ताकि हज़रत ईसा के आस्मान से उतरने को ग़लत कह सकें यह उसकी जुरअत है और उसकी बात सहीह रिवायत और उलमाए उम्मत से अलग है और ग़लत है। फिर हज़रत महदी (रह०) की ज़ात को अलग नहीं माना, और उनके नाम, वालिद के नाम, जाए पैदाइश सब की तावील कर डाली और सब को अपने ऊपर चसपां कर लिया और अपने को अहले बैत से इस तरह साबित किया कि हज़रत सलमान के बारे में हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के क़ौल को पेश करके अहले बैत से साबित किया और अपने को उन की क़ौम का बता कर अपने को अहले बैत से साबित किया और कहा महदी व ईसा अलग अलग नहीं हैं, जो ईसा है वही महदी है और अपने को कहा मैं ही ईसा हूं और मैं ही महदी हूं जब कि मिर्ज़ा झूठे में न हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की कोई अलामत पाई जाती है न ही हज़रत महदी (रह०) की, यह सारी बातें उसने अपनी तरफ़ से गढ़ लीं जिस की सज़ा उसको क़ब्र में मिल रही होगी और हिसाब व किताब के बाद दोजख उस के इस्तिकबाल को तैयार हे।। उसकी इस नाज़ेबा हरकत पर कुछ अश्आर पेश हैं–

होगा जब महदी का दुन्या में ज़ुहूर
हज़रते ईसा तब आएंगे ज़रूर
पर गुलामे कादियानी बद ख़िसाल
अपने पे चस्पां किया दोनों का हाल
इब्नि मर्यम एक थे दो कर दिया
और दो को एक उसने कर दिया
इब्नि मर्यम दो नहीं हर गिज़ नहीं
और जो महदी हैं वह ईसा नहीं
अहमदे मदनी तो हैं आख़िर नबी
मानती उम्मत नबी की है यही
हां ग़ुलामे कादियां बदकेश है
और वह इब्लीस का इक नेश है
कहता है मुझ को कहो जिल्ली नबी
या बुरूज़ी मानो उम्मत में नबी
इस्तिलाहें गढ़ लीं उस बद बख़्त ने
छोड़ कर सुन्नत को उस कम्बख़्त ने
कह दो दज्जालों में तेरा नाम है
नारे दोजख में तेरा अब काम है

मिर्जा ने लिखा इब्नि मर्यम जो मसीहे ईसा था उनकी वफ़ात हो गई मैं मसीहे मुहम्मद हूं। झूठे पर अल्लाह की लअ़नत हो।

क्या आप जानते हैं

(१) मुसलमानों में बच्चों के बिस्मिल्लाह का रिवाज है जब बच्चा ४ साल ४ महीने ४ दिन का होता है।

(२) जवाहर लाल का कथन है – "शिक्षा का न तो आरम्भ है और नहीं अन्त।"

(३) मौलाना अबुल कलाम आजाद स्वतंत्र भारत के पहले शिक्षा मंत्री थे।

(४) इस्लाम धर्म में सभी मर्द व औरत के लिए शिक्षा फर्ज (कर्तव्य) करार दी गई है।

(५) कोठारी कमीशन ने भारती शिक्षा प्रणाली में १०+२+३ की सिफारिश की थी।

(६) वार्धा शिक्षा स्कीम में हस्तशिल्प (दस्तकारी) और बच्चों के विकास पर बल दिया गया है।

(७) हर साल ५ सितम्बर को शिक्षक दिवस मनाया जाता है।

(८) हंटर कमीशन स्वतंत्र भारत का पहला शिक्षा कमीशन है।

(९) अरनाकुलम शत प्रतिशत शिक्षित जिला है।

(१०) लार्ड कर्जन ने इंडियन यूनीवर्सिटीज कमीशन की स्थापना की थी।

(११) १९१८ में उसमानिया विश्वविद्यालय की स्थापना हुई था।

(१२) डा० सैयद महमूद बिहार प्रान्त. के शिक्षा मंत्री थे।

(१३) भारत के संविधान की धारा ३० के अंतर्गत अल्पसंख्यकों को अपनी पसन्द के शिक्षा संस्थानों को खोलने तथा प्रबन्ध करने का अधिकार है।

(१४) पहली पंचवर्षीय योजना में शिक्षा पर कुल १५३ करोड़ रूपया खर्च किया गया था।

(१५) नवीं पंच वर्षीय योजना में शिक्षा व्यय का ५८ प्रतिशत प्राथमिक शिक्षा पर खर्च किया गया था।

(१६) नदवतुल उलमा की स्थापना १८९८ में हुई थी।

(१७) दीनी तालीमी कौंसिल उत्तर प्रदेश के मुसलमानों का तालीमी संगठन है।

(१८) उर्दू मीडियम स्कूलों में महाराष्ट्र के उर्दू मीडियम स्कूलों का परीक्षाफल सबसे अधिक संतोषजनक रहता है।

(१९) मैडम मॉटेसरी ने कहा था कि हर व्यक्ति में सीखने और विकास की क्षमता होती है।

(२०) रूसो का कथन है "ऐ लोगो इन्सान बनो, तुम्हारा सबसे पहला कर्तव्य कि तुम इंसान बनो, बच्चों से प्यार करो, उन के खेलों, उनकी खुशियों और उनके मनभावन स्वभाव को उत्साहित करो।

(२१) फ्रेड्रेल फ्रोबेल ने कहा था "मुझे बच्चों को पढ़ाकर वही प्रसन्नता मिलती है जो मछली को पानी, और चिड़ियों को हवा से होती होगी।"

(२२) हरबर्ट स्पेंसार का कथन है "जीवन व्यतीत करने के लिए साइंस तमाम विषयों के मुकाबले में बहुत अधिक सत्वपूर्ण और लाभकारी है।"

(२३) डा० जाकिर हुसैन ने कहा था "शान्तिनिकेतन इंसानी एकता का नमूना है।"

(२४) रवीन्द्र नाथ टैगोर का कथन है "शिक्षा के तीन प्रभावी साधन हैं – प्रकृति, जिन्दगी और अध्यापक।"

(२५) महात्मागांधी ने साबरमती आश्रम और सेवाग्राम की स्थापना की थी।

(२६) मौलाना आज़ाद नेशनल ओपेन उर्दू विश्वविद्यालय के संस्थापक वाइस चांसलर का नाम प्रोफेसर शमीम जयराजपुरी है।

(२७) गोपालदास शिक्षा कमेटी ने १९८३ में उर्दू मातृभाषीय विद्यार्थियों की शिक्षा उर्दू माध्यम से देने की सिफारिश की थी।

(२८) १९४७ में भारत में विश्वविद्यालयों की संख्या १९ थी।

(२९) इलाहाबाद विश्वविद्यालय उत्तर प्रदेश का सबसे पुराना विश्वविद्यालय है।

बड़े ओहदों पर बैठे लोग

१. डॉ.ए.पी.जे. अब्दुल कलाम	राष्ट्रपति
२. श्री भैरों सिंह शेखावत	उपराष्ट्रपति
३. श्री सोमनाथ चटर्जी	लोकसभा अध्यक्ष
४. श्री योगेश कुमार सरभ्भरवाल	मुख्य न्यायधीश (उच्चतम न्यायालय)
५. श्री बी.बी. टडन	मुख्य चुनाव आयुक्त
६. श्री गुरबचन जगत	अध्यक्ष, संघ लोक सेवा आयोग
७. डा. ए.एस. आनन्द	अध्यक्ष, राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग
८. डा. गिरिजा व्यास	अध्यक्ष, राष्ट्रीय महिला आयोग
९. डा. मोंटेक सिंह अहलुवालिया	उपाध्यक्ष, योजना आयोग
१०. श्री विजय शंकर	निदेशक, सी.बी.आई.
११. श्री एस.आई.एस. अहमद	डी.जी., सी.बी.आई.
१२. श्री एस.के. मित्रा	डी.जी., सी.आई.एस.एफ.
१३. श्री जे.के. सिन्हा	डी.जी., सी.आर.पी.एफ.
१४. श्री वी.के. जोशी	डी.जी., आई.टी.बी.पी.
१५. जनरल जोगिंदर जसवंत सिंह	थलसेना अध्यक्ष
१६. एअर चीफ मार्शल एस.पी.त्यागी	वायुसेना अध्यक्ष
१७. एडमिरल अरुन प्रकाश	नौसेना अध्यक्ष

उपराष्ट्रपति राज्यसभा के पदेन सभापति होते हैं।
भारत के प्रधानमंत्री योजना आयोग के अध्यक्ष भी होते हैं।

अत्यन्त लाभकारी, परिश्रम पूर्ण

ऐतिहासिक यात्रा

सम्पादक

भूमिका :- ''मजलिसे तहफ़्फ़ुज़े ख़त्मे नुबुव्वत'' (ख़त्मे नुबुव्वत सुरक्षा संघ) बबिया, डिस्ट्रिक्ट संसरी नेपाल की ओर से प्रबन्धक (नाज़िम) नदवतुल उलमा के पास मांग आई कि संघ के कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण हेतु संघ एक त्रैदिवसी प्रशैक्षणिक कार्यक्रम निवेजित कर रहा है। कार्यक्रम में पथ प्रदर्शन तथा प्रशिक्षण हेतु कुछ विशेषज्ञ भेजिये। प्रबन्धक महोदय ने तीन सज्जनों को नामांकित किया डॉ० हारून रशीद, मुहम्मद गुफरान नदवी, मुहम्मद आरिफ नदवी संभली, आने जाने के टिकट भी आरक्षण के साथ आ गये। अल्लाह का करना मौलाना मु० आरिफ़ संभली पहले से हृदय रोग में ग्रस्त थे यात्रा न कर सके, और हमारी यात्रा के बिहान ही शुक्रवार को उनका देहान्त भी हो गया। यह सत्य है कि हमारी संस्था में इस्लाम विरोधी असत्य धर्मों का ज्ञान उनके बराबर किसी को न था। हम अल्लाह के निर्णय पर नतमस्तक हैं।

वैसे हम तीनों वरिष्ठ नागरिक थे, शेष दो भी वही रहे अतः यात्रा में अपने सहयोग के लिए एक नवयुवक मुहम्मद इस्हाक़ नदवी सीतापूरी को साथ ले जाने की अनुमति प्राप्त कर ली।

यात्रा परिश्रम :

एक बजे रात में डाउन अमर पाली गाड़ी थी, एस ८ में १०, ११, १३ नम्बर की बर्थें रिजर्व थीं। गाड़ी १/२ घण्टा लेट आई, बर्थों पर दूसरों का कब्जा था, परन्तु मांग पर ख़ाली कर दिया गया। गर्मी अपनी सीमा पार कर रही थी। हमारी सीध का पंखा फेल था। हम लोग जैसे तैसे अपनी अपनी बर्थों पर लेट गये। गर्मी से करवटें बदलते रहे। किसी स्टेशन पर पहुंच कर गाड़ी खड़ी हो गयी, रात्रि के समय के कारण स्टेशन का नाम न जाना जा सका बताया गया कि इंजिन फेल है। लखनऊ से दूसरा इंजन आया तो गाड़ी चली। चार बजे कुछ नीन्द आने लगी। चाहा कि फज्र की नमाज पढ़ कर सोया जाए परन्तु कम्पार्टमेंट की लैट्रीनों में पानी न था। पेपरों से काम चलाया गया। नमाज न पढ़ी जा सकी। गोन्डा में पानी की बोतलें खरीदना चाहीं दुकान वाले ने देने से इन्कार कर दिया कदाचित बोतलों की शार्टेज रही होगी। गाड़ी में डाइनिंग कार न थी। हम लोगों ने क्या खाया क्या पिया इस का वर्णन व्यर्थ है। याद नहीं दिन में किस स्टेशन पर पानी भरा गया। अब जो लैट्रिनों में ज़ाना हुआ तो देखा पानी स्वतः बह रहा था। क्या अच्छा होता कि टिकटों पर कम्पलेन के लिए फून नम्बर लिखा होता, तो दस हजार बेतन पाने वालों की हरामखोरी की सूचना तो दे दी जाती। पूरे रास्ते में कन्डक्टर साहिब ने डिब्बे में आने का कष्ट न किया। अलबत्ता जनरल टीटी साहिब आए और ग़लत लोगों को ढूंढ ढूंढ कर उनको सहीह किया, हम लोगों के टिकटों पर भी चिन्ह खींचा। उनके पास रिजर्वेशन चार्ट न था। इन कष्टों के साथ गाड़ी चलती रही और बराबर विलम्ब होती रही यहां तक कि कटिहार सात घन्टे देरी से चार बजे रात्रि में पहुंची। हर गेट पर एक दो लोग संदिग्ध दशा में खड़े दिखते रहे जब कि डयूटी वाले रक्षक कहीं आराम से सोते रहे। हम लोगों के क़रीब ही एक यात्री का बहुमूल्य बेग लुप्त हो गया। उनके साथियों ने एक एक बर्थ ढूंढ डाला बैग न पा सके न कहीं सिपाही दिखे कि उनसे शिकायत करते, ऐसा कई यात्रियों के साथ हुआ।

चार बजे उतर कर कटिहार से जोगबनी की पैसेंजर गाड़ी पकड़ी। यहां भी पंखा रहित सीटें मिलीं गाड़ी चलने से पहले इतनी भीड़ हुई कि हर नाक के सामने पसीने की भभक से स्वागत करने वाला कोई न कोई यात्री खड़ा था। हर स्टेशन पर बिना बुकिंग के झव्वे और गठरियां चढ़ उतर रही थीं। हर स्टेशन पर डिब्बे की हर खिड़की पर बाहर से उल्टी साइकिलें लटकाई और उतारी जातीं रहीं। टीटी लोगों की चान्दी थी। लैट्रिनों का बुरा हाल था, पानी नदारद, गन्दगी अपनी बदबू के साथ मौजूद। साढ़े नौ बजे जोगबनी से जीप द्वारा ११ बजे जल्पा पूर पहुंचे। १३ जून को वापसी में लगभग यही दशा रही। जोगबनी से कठियार पैसेंजर में मछलियों की दुर्गन्ध वाला डिब्बा मिला, बे पानी की, बदबू दार लैट्रीनें, पंखा फेल। साढ़े बारह बजे रात को कुछ लेट होकर कठियार में ५७०७ अप अमर पाली गाड़ी प्लेट फार्म पर लाई गई। इस बार लैट्रीनों में पानी तो था परन्तु फिर हमारी बर्थों पर पंखा न था। कन्डक्टर साहिब आए टिकट चेक किये। स्टाफ वाले, जो रिजर्वेशन वालों की बर्थों में भाग लगाने वाले थे उन को छोड़ दिया और बिना रिजर्वेशन वाले यात्रियों से वसूली कर के चले

गये। हम लोगों ने पंखे का कम्पलेन लिखाया, लिख लिया और चले गये। हम लोग किसी प्रकार सो गये। रास्ते में आंख खुली तो देखा, एक हट्टी कट्टी औरत हम दोनों लोवर बर्थों के बीच फर्श पर कपड़ा बिछाए लेटी, हम लोगों के सामानों को घूर रही है मैं चिल्लाया तू यहां हम मर्दों के बीच कैसे लेट गयी, कहने लगी डरिये नहीं मैं बूढ़ी हूं। मैं और चिल्लाया कि यहां से चली जा, उसने जाने से इन्कार कर दिया। जब हमारे साथी ने कहा अच्छा पुलिस को बुला कर लाते हैं तब उसने पीछा छोड़ा। डाइनिंग कार इस में भी न थी न विन्डरों का पता था। बिहार क्षेत्र में हल्दी लगा उबाला चना मिलता रहा जो यूपी वालों के गले से उतरने वाला न था। बिहार के पश्चात वह भी न था। पानी की बोतलें बड़ी कठिनाई से उपलब्ध होती रहीं अलबत्ता खाना बुक करने वालों ने ३० रूपया पर थाली खाना पहुंचाया जिसमें दो छोटी रोटियां ६० ग्राम चावल, ५० ग्राम तैयार दाल, ५०, ५० ग्राम दो तरकारियां थीं। कन्डक्टर सा० पुनः दिखे तो हम लोगों ने पंखे की पुनः शिकायत की कहने लगे पंखा लोको वर्कशाप जाने योग्य है। इस प्रकार पीने के पानी और पंखे से महरूमी के साथ डेढ़ घंटे की देरी से आठ बजे शाम को लखनऊ वापिसी हुई। आटो प्रबन्धक से आटो मांगा गया, उंसने एक आटो वाले को बुलाकर आदेश दिया कि इनको पचपन रूपियों में नदवा पहुचाओ इस प्रकार हमारा काफ़िला नदवा आ गया।

यात्रा की लाभदायक श्रंखलाएं:

हम लोग ६ जून जुमुअे को ११ बजे मजलिसे ख़त्म नुबुव्वत के आफ़िस पहुंचे। हमारा भव्य स्वागत किया गया, फिर वहां से दो किलोमीटर दूर दारूल उलूम नूरूल इस्लाम के अतिथिग्रह में ठहराया गया। नहा धोकर जुमे (जुमुअे) की नमाज अदा की और खाना खाकर अस्र तक आराम किया। अस्र बअ़द घर से संपर्क किया तो ज्ञात हुआ कि मौलाना मुहम्मद आ़रिफ़ नदवी साहिब का देहान्त हो चुका है। दारूल उ़लूम नूरूल इस्लाम के विद्यार्थियों तथा गुरूजनों पर शोक छा गय। मजालिस खत्मे नुबुव्वत के कार्यकर्ता तथा शबाब संघ संसरी के सदस्य गण शोकमय हो उठे। मग़रिब की नमाज के पश्चात दारूल उलूम नूरूल इस्लाम में एक शोक सभा का आयोजन किया गया जिसको हम दोनों ने सम्बोधित किया, उसके तुरन्त बअ़द दारूल उलूम हिदायतुल इस्लाम जाना हुआ,वहां भी विद्यार्थियों और गुरूजनों में शिक्षा तथा शिक्षण विषय पर हम दोनों ने बात की १० जून को "मजलिसे तहफ़्फ़ुजे ख़त्मे नुबुव्वत" की ज़मीन पर तंबू के नीचे नियोजित कार्यक्रम आरंभ हुआ सर्व प्रथम शोक सभा हुई जिस में भाषणों के पश्चात शोक प्रस्ताव पास हुआ तत्पश्चात मौलाना मुहम्मद इस्लाम नदवी अध्यक्ष संघ ने स्वागतम प्रस्तुत किया मौलाना ग़ुलाम रसूल फलाही ने उद्घाटनीय भाषण दिया। मौलाना जिब्रील ने संघ की रिपोर्ट प्रस्तुत की। हमारे साथी मौलाना मुहम्मद गुफ़रान नदवी ने समाज के बिगाड़ की समीक्षा की मैं हारून रशीद ने, "ख़त्मे नुबुव्वत और उसकी मांगें तथा उ़लमा व ख़वास की ज़िम्मेदारियों के विषय पर लम्बा लेक्चर दिया जिस में बताया गया कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अल्लाह के अन्तिम सन्देष्टा हैं इस सत्य सूचना की मांग यह है कि इस विश्वास की सुरक्षा हो और इसे फैलाया जाए।

तदोपरान्त "मजलिसे तहफ़्फ़ुज़े ख़त्मे नुबुव्वत" के भवन का शिलान्यास हुआ। अ़स्र बअ़द ख़ुसूसी मजलिस को मौ० गुफ़रान ने सम्बोधित किया मग़रिब बअ़द "क़ादियानत का परिचय एक असत्य धर्म" विषय पर मुझ हारून रशीद की बात इशा की अज़ान तक चली। मैंने बताया कि मिर्ज़ा गुलाम ने अपने नबी होने का दावा किया, झूठी वह्यां गढ़ीं। मआ़ज़ल्लाह हज़रत ईसा (अ०) की तौहीन की अपनी सच्चाई की दलील में आथम के मरने की तारीख, मुहम्मदी बेगम से निकाह, मौ० सनाउल्लाह का मिर्ज़ा से पहले मरने की भविष्य वाणियां पूरी न हुई, मिर्ज़ा इस्लाम से ख़ारिज था उस का मज़हब बातिल था। ११ जून को कार्य कर्म से पहले "जामिअ़तुल इस्लाह़ अल इस्लामी" के दर्शन हुए वहां गुरूजनों से हम दोनों ने बातें कीं।

अब कार्य कर्म स्थल आए। मौलाना हैदर अली नदवी ने अ़काइदे इस्लामी पर क़ुर्आन व ह़दीस़ के प्रकाश में एक अनवेषणात्मक लेख प्रस्तुत किया तत्पश्चात मौ० मु० गुफ़रान ने आधुनिक बिगाड़ों और उन से बचाव पर भाषण दिया अन्त में मैं हारून रशीद ने "हिन्दू मत एक अध्ययन" शीर्षक पर एक विस्तरित लेख प्रस्तुत किया। जो नेपाली आ़लिमों के लिए एक अनोखा ज्ञान था। मग़रिब बअ़द फिर हारून रशीद ने इस्लाम के विरूद्ध क़ादियानियों के षडयंत्रों और उनके रोक पर भरपूर भाषण दिया और बताया कि मैदानी काम में किस किस प्रकार सफलता प्राप्त की। १२ जून को सवेरे दअवत की अहम्मीयत और दायी की सिफात पर मौ० मुहम्मद अ़ब्बास साहिब नदवी मुहतमिम दारूल उलूम नूरूल इस्लाम ने बहुत ही अच्छी तकरीर की जो

(शेष पृष्ठ १३ पर)

अन्तर्राष्ट्रीय समाचार

डॉ० मुईद अशरफ नदवी

● ताशक़नद में एक इस्लामी केन्द्र की स्थापना

उज़बकिस्तान की सरकार ताशक़न्द में एक इस्लामी केन्द्र की स्थापना कर रही है। यह केन्द्र उस स्थान पर स्थापित किया जा रहा है जहां पहली सदी हिजरी में हज़रत क़तीबा बनी मुस्लिम ने एक मस्जिद का निर्माण किया था। रूस की स्वेट सरकार ने १८६७ में इस मस्जिद को शहीद कर दिया था। यह केन्द्र २० हज़ार वर्ग मीटर में बनाया जा रहा है। इस केन्द्र के निर्माण में लगभग पाँच मिलयन डालर खर्च होगा। इस केन्द्र में एक बहुत बड़ी मस्जिद डिस्पेंसरी, पुस्तकालय और रिसर्च सेन्टर (अनुसन्धान केन्द्र) स्थापित किया जाएगा। मस्जिद में एक ही समय में लगभग दस हज़ार नमाज़ी नमाज़ पढ़ सकेंगे।

● इस्लाम के शरण में :–

उत्तरी अफरीका के बेनिन देश में एक क़बाइली (जनजाति) सरदान ने इस्लाम स्वीकार करने का एलान किया है। इस्लाम लाने की यह घटना अमरीका में इस्लाम के प्रचार प्रसार करने वाले लोगों की मौजूदगी में हुआ जिसके सम्मान में एक समारोह का आयोजन किया गया और अफरीका के विदेश मंत्री और भूतपूर्व न्यायमंत्री "लोरानग़बीना" ने भी इस्लाम स्वीकार करने की घोषणा की। यह सब अफ़रीकी मुसलमानों के इस्लामी प्रसार–प्रचार संगठन की कोशिशों और प्रयास का नतीजा है।

● यूरोप में आबाद मुसलमानों में एतक़ादी बेरहरवी एक चुनौती

यूरोप में आबाद मुस्लिम अल्पसंख्यक समुदाय में इस्लामी एतक़ादी (विश्वास की) बेराहरवी एक चैलेंज का रूप ले रही है। कुछ गुमराह (पथभ्रष्ट) संगठनों ने यूरोप के मुस्लिम समाज में अति अधिक प्रभाव पैदा कर लिया है। मसलन क़ादियानियों की जड़ें यूरोप में काफी मज़बूत हैं। यह गुमराह संगठन इस्लाम के नाम पर ग़लत विश्वासों का प्रचार करके न केवल लोगों को गुमराह कर रहा है बल्कि इस्लामी दावती कार्य में भ्रम पैदा कर रहा है जिस का नतीजा यह है कि लोगों को सही और ग़लत की पहचान करना कठिन हो गया है। यूरोपी प्रसार व प्रचार की तहरीकों में जमाअ़ती तअ़स्सुब (पक्षपात) भी चर्म सीमा तक पहुंच गया है। विभिन्न संगठनों से सम्बद्ध लोग इस्लाम से अधिक अपने संगठन से जुड़े हुए हैं जिसके कारण कभी टकराव की सूरत पैदा हो जाती है। जहाँ तक यूरोप में समाजी ज़िन्दगी के खास ढांचे के कारण पैदा होने वाली समस्याओं का संबन्ध है सबसे गम्भीर समस्यसा यूरोपीय मुसलमानों का स्थानी ग़ैरमुस्लिम लड़कियों से दाम्पति (विवाह) संबन्ध क़ायम करने का है। इस ग़ैर शरअ़ी निकाह से दीनी पहचान की सुरक्षा पर प्रश्न चिन्ह लग रहा है। मुसलमान पति अपनी ग़ैर मुस्लिम बीवी क़ी जीवन शैली को अपनाने पर मजबूर है जिसका प्रभाव औलाद की तर्बियत पर भी पड़ रहा है और इस्लामी सभ्यता धीरे–धीरे समाप्त होती जा रही है।

Noor Ahmad 0522-2005079
Prop. 2273297

Haji Noor Ahmad Jewellers

143/75, Joote Wali Gali,
Behind Mumtaz Market,
Aminabad, Lucknow

0522-2201540

M.R. Jewellers

Manufacturer & Seller
All kinds of Gold & Silver Jewelleries

Shop No. 1, Haji Nanhey Market,
Opposit Mumtaz Inter College,
Jutey Wali Gali, Aminabad, Lucknow
[redacted] Prop. Mohd. Ali